प्रेरणास्त्रोतः स्व. डॉ. एलसी वालिया

@haryanavatika www.haryanavatika.in @haryanavatika @haryanavatika

हरियाणा वाटिका

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

लोहारू से प्रकाशित सोच बिल्कुल निष्पक्ष

RNI No-HARHIN/2019/79021 वर्ष : 06, अंक: 231 पृष्ठ: 08, मूल्य: रू. 1.00 बुधवार, 25 जून 2025 haryanavatika@gmail.com +91-9255149495

विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए विकसित हरियाणा बनाएंगे : मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी

कार्यकर्ता पीएम मोदी की मन की बात कार्यक्रम को सुनें और लोगों के साथ मन की बात करें : नायब सिंह सैनी। पीएम मोदी के लोकप्रिय मन की बात कार्यक्रम को लेकर पंचकूला स्थित भाजपा प्रदेश कार्यालय पंचकमल में हुई प्रदेश स्तरीय कार्यशाला

हरियाणा वाटिका/नितिन वालिया

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए हरियाणा को विकसित राज्य बनाएंगे। उन्होंने कहा कि हरियाणा विकसित होगा तो देश विकसित होगा। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी मंगलवार को पंचकूला स्थित भाजपा प्रदेश कार्यालय पंचकमल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लोकप्रिय मन की बात कार्यक्रम को लेकर हुई प्रदेश स्तरीय कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता सभी बूथों पर 100 प्रतिशत पीएम मोदी के मन की बात कार्यक्रम को सुनना सुनिश्चित करें। उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री के मन की बात भी सुनें और लोगों के साथ मन की बात भी करें। कार्यशाला को भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पंडित मोहन लाल बड़ौली ने पीएम मोदी के मन की बात कार्यक्रम को जनमानस से आत्मीय जुड़ाव का सशक्त माध्यम बताया। संगठन मंत्री फणीन्द्रनाथ शर्मा, कार्यक्रम के प्रदेश संयोजक एवं प्रदेश महामंत्री सूरेंद्र पूनिया ने भी कार्यशाला को संबोधित किया। कार्यक्रम से पहले मुख्यमंत्री, प्रदेश अध्यक्ष और संगठन मंत्री ने पौधारोपण भी किया।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि भाजपा के कार्यकर्ता कर्मठ और कर्तव्यनिष्ठ हैं। कार्यकताओं की मेहनत और परिश्रम के कारण ही केंद्र और हरियाणा में तीसरी बार भाजपा की सरकार बनी है। उन्होंने कार्यकताओं का आह्वान करते हुए कहा कि कार्यकर्ता सभी बूथों पर 100 प्रतिशत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लोकप्रिय कार्यक्रम मन की बात को सुनना सुनिश्चित करें।

श्री सैनी ने कहा कि मन की बात कार्यक्रम राजनीति से ऊपर उठकर है। मन की बात कार्यक्रम के जरिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समाज व देश के लिए अच्छा काम करने वालों को प्रोत्साहित करते हैं। उन्होंने कहा कि पीएम के मन की बात कार्यक्रम को सुनने के बाद कार्यकताओं में एक नई ऊर्जा का संचार होता है। सीएम सैनी ने कहा कि पीएम मोदी की अगुवाई में देश विकास के रास्तों पर तेजी से आगे बढ़ रहा है। विदेशों में नए और सशक्त भारत की पहचान बनी है। हम विश्वगुरु बनाने के राह पर अग्रसर हैं।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि 70 वर्ष से अधिक उम्र के जिन लोगों के आयुष्मान कार्ड नहीं बनें हैं उनका कार्यकर्ता आयुष्मान कार्ड बनवाने में मदद करें।

उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता स्वयं भी पौधे लगाएं और दूसरे लोगों को भी एक पेड़ मां के नाम अवश्य लगाने के लिए प्रेरित करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश तरक्की कर रहा है। कार्यकताओं से आह्वान करते हुए उन्होंने कहा हर बूथ पर लोगों को मोदी और हरियाणा भाजपा सरकार की उपलब्धियां बताएं और योजनाओं से लोगों को अवगत कराएं।

मन की बात कार्यक्रम सेवा, प्रेरणा और राष्ट्र निर्माण की भावना को सुदृढ़ करता है : मोहन लाल बड़ौली

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पंडित मोहन लाल बड़ौली ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि जनमानस से आत्मीय जुड़ाव का सशक्त माध्यम है। उन्होंने कहा कि मन की बात कार्यक्रम सेवा, प्रेरणा और राष्ट्र निर्माण की भावना को सुदृढ़ करता है। कार्यशाला में श्री बड़ौली ने अच्छा काम करने वाले कार्यकताओं की तारीफ भी की। उन्होंने कहा कि पिछली बार 17 हजार 663 बूथों पर मन की बात कार्यक्रम को सुना और अपलोड किया गया। इस बार कार्यकर्ता 20 हजार 629 बूथों पर मन की बात कार्यक्रम को सुनें और अपलोड कर हरियाणा को नंबर-1 बनाएं।

बिहार धर्म और ज्ञान की भूमि रही है, जिसने देश को अनेक क्रांतिकारी और चिंतक दिए: जगदीप धनखड़

पटना/हरियाणा वाटिका एजेंसी

बिहार के मुजफ्फरपुर स्थित ललित नारायण (एलएन) मिश्रा कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट के स्थापना दिवस समारोह में मंगलवार को उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ शामिल हुए। इस मौके पर उपराष्ट्रपति ने अपने सम्बोधन में कहा कि बिहार शिक्षा के क्षेत्र में बहुत आगे बढ़ रहा है। बिहार धर्म और ज्ञान की भूमि रही है, जिसने देश को अनेक क्रांतिकारी और चिंतक दिए हैं। इस भूमि पर आकर मुझे नई ताकत और ऊर्जा की अनुभूति होती है।

उपराष्ट्रपति धनखड़ ने कहा कि आजादी की बात करूं तो चंपारण सत्याग्रह बिहार की भूमि पर हुआ। 1917 में महात्मा गांधी जी ने यहां से अपना पहला सत्याग्रह आंदोलन किया। किसान की समस्या को उन्होंने राष्ट्र हित का आंदोलन बना दिया।

बिहार की जनता का उत्साह, ज्ञान और चेतना पूरे देश के लिए प्रेरणादायी है। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सराहना करते हुए कहा कि यह नीति छात्रों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। अपने संसदीय जीवन के दौरान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ बिताए समय को भी याद किया। उनके संसदीय अनुभवों की सराहना की। इसके साथ ही पहलगाम और ऑपरेशन सिंदूर जैसे मुद्दों पर भी अपनी बात रखी। उपराष्ट्रपति ने आपातकाल के दौर को याद करते हुए कहा, "उस समय लोकतंत्र को दबाने का प्रयास किया गया था, लेकिन जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चली संपूर्ण क्रांति ने भारत में लोकतंत्र को नई ऊर्जा और दिशा दी।" उपराष्ट्रपति के दौरे को लेकर जिला प्रशासन की ओर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए थे। एल. एन मिश्रा कॉलेज सहित महत्वपूर्ण स्थानों पर दंडाधिकारियों की तैनाती की गई थी।

इस अवसर पर उद्योग मंत्री सह कॉलेज के संस्थापक नीतीश मिश्रा और बिहार विश्वविद्यालय के कुलपति दिनेश चंद्र राय ने अंग वस्त्र और मोमेंटो देकर उपराष्ट्रपति का स्वागत किया। उपराष्ट्रपति ने कॉलेज कैंपस में पौधारोपण किया। पूर्व सीएम डॉ जगन्नाथ मिश्रा को श्रद्धांजलि देते हुए उनके योगदानों को भी याद किया।

कथावाचन में एकाधिकार के लिए वर्चस्ववादी लोग पीडीए को कर रहे अपमानित: सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव

लखनऊ/हरियाणा वाटिका एजेंसी

कुछ वर्चस्ववादी लोग पीडीए (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) को अपमानित कर रहे हैं। कथावाचन में ये लोग समाज में अपना एकाधिकार बनाए रखना चाहते हैं। सच्चे भक्त अब भागवत कथा भी नहीं सुना पा रहे हैं। समाज में समानता और सम्मान की लड़ाई जारी रहेगी। यह बातें समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कही। सपा अध्यक्ष मंगलवार को पार्टी मुख्यालय में पत्रकारों को संबोधित करते हुए इटावा में कथावाचक मुकुट मणि यादव और संत कुमार यादव के साथ हुई अमानवीय घटना की निंदा कर रहे थे। अखिलेश ने आरोप लगाया कि भाजपा जबरन विचारधारा थोपने में लगी है। कथावाचकों के साथ भेदभाव पर सवाल उठाते हुए उन्होंने कहा कि कथावाचन के लिए सरकार एकाधिकार कानून लाए ? अब वर्चस्ववादी दक्षिणा भी नहीं लेंगे ? सपा अध्यक्ष ने कहा कि पहले ये लोग घर और मंदिर धुलवाते थे, अब सरेआम लोगों का मुंडन कराया जा रहा है। भाजपा सरकार में लोगों को न्याय नहीं मिल पा रहा है। पीडीए वर्ग के लोगों को न्याय से वंचित किया जा रहा है। अखिलेश यादव ने कहा कि यूपी में भाजपा की सरकार को पिछले नौ साल से 2500 लोग चला रहे हैं। वही 2500 लोग इधर उधर खेल, खेल रहे हैं। सरकार में बैठे लोग कुछ भी कर सकते हैं। इस दौरान उन्होंने दलितों पर हो रहे अपराधों को गिनाते हुए कहा कि भाजपा की सरकार जाए तो लोगों को चैन आए। एक सवाल का जवाब देते हुए सपा अध्यक्ष ने कहा कि सपा से निकाले गए तीनों विधायक भाजपा नेताओं के संपर्क में देखे जा रहे थे। हमने उन्हें पहले ही माफ कर दिया था। , अब भाजपा भी उन्हें मंत्री बना ही दे।

कथावाचकों को किया सम्मान

इटावा के पीड़ित कथावाचक मुकुट मणि यादव और संत कुमार यादव का पत्रकार वार्ता से पूर्व सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव एवं पार्टी नेताओं ने सम्मानित किया। अखिलेश ने उन्हें 21-21 हजार की धनराशि भेंट की।

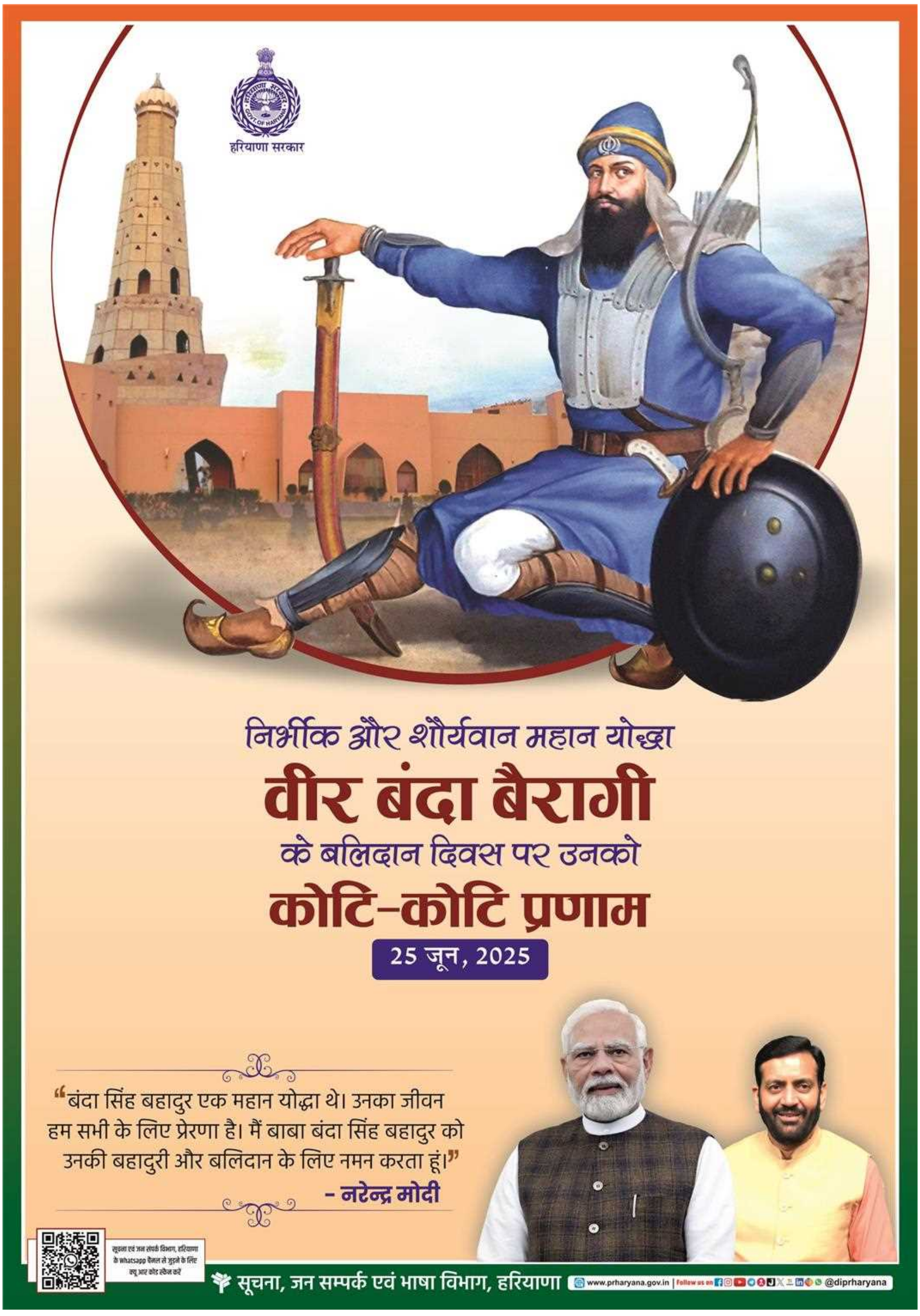

पेड़-पौधे हैं जीवन का आधार: राधा कृष्ण चावला

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 24 जून। जीतू वाला जोहड़ स्थित श्याम बाग में प्रधान राधा कृष्ण चावला की अध्यक्षता एवं पंजाबी जागृति मंच के प्रधान दर्शन कुमार मिड्ढा के सहयोग से पौधा रोपण कार्यक्रम किया गया जिसमें 50 फूलदार पौधे रोपित किए। प्रधान राधा कृष्ण चावला एवं प्रधान दर्शन कुमार मिड्ढा ने संयुक्त रूप से कहा कि पेड़ -पौधे जीवन का आधार हैं और इनके बिना हम एक पल भी नहीं रह सकते क्योंकि वे हमें ऑक्सिजन देते है जो हमारे जिंदा हरने के लिए बहुत जरूरी है। इस दौरान कृष्ण कुमार हंस को श्याम बाग का आजीवन सदस्य बनने और कैलाश चौधरी पंजाबी जागृति मंच महासचिव को कहरोड़ पक्का महासभा भिवानी द्वारा प्रधान नियुक्त करने पर फूल माला पहनाकर सम्मानित किया। सभी उपस्थित सदस्यों ने रोपित किए गए पौधों का संरक्षण करने की जिम्मेवारी भी ली। इस अवसर पर सहकोषाध्यक्ष जगन्नाथ गंभीर, महासचिव रोहतास वर्मा, आजीवन सदस्य मदन लाल कामरा, केके वर्मा, सुभाष बजाज, ओम प्रकाश सुखीजा एवं प्रवीन चावला, जगदीश सरदाना, हनुमान, सतपाल, पहलाद आदि उपस्थित रहे।

मीठी मम्मा बोलती थी जीवन की हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझकर चलो: बीके सुमित्रा

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 24 जून। ब्रह्माकुमारी ओम राधे को सभी ब्रह्मावत्स मातेश्वरी या मम्मा कहकर बुलाते थे। उन्होंने हमारे जीवन को ऊंचा उठाने के लिए श्रेष्ठ धारणाएं बतलाईं। उनके जीवन में सच्चाई और सफाई का विशेष गुण था। उनका कहना था कि जीवन की हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझकर चलो। इससे अपने कर्मों पर अटेन्शन बना रहेगा। उन्होंने हम सभी को ईश्वरीय मयार्दाएं और नियम बतलाए। आज भी उनकी सूक्ष्म प्रेरणा हम सभी को मिलती रहती है। यह बात प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज की शाखा सिद्धि धाम में ब्रह्माकुमारीज की प्रथम मुख्य प्रशासिका ओम राधे मीठी मम्मा की 60वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि देते हुए शाखा प्रमुख राजयोगिनी बीके सुमित्रा बहन ने उपस्थित ब्रह्मावत्सों के समक्ष कही। बीके सुमित्रा बहन ने बताया कि मातेश्वरी जी का लौकिक जन्म वर्ष 1919 में अमृतसर में हुआ था। उनके बचपन का नाम ओम राधे था। जब वह ओम की ध्वनि का उच्चारण करती थीं तो पूरे वातावरण में गहन शांति छा जाती थी। इसलिए वह ओम राधे के नाम से लोकप्रिय हुईं। राजयोगिनी बीके कीर्ति बहन ने मम्मा के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वह बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि और प्रतिभावान थीं। ब्रह्मा बाबा ने कोई भी बात आपको कभी दोबारा नहीं समझायी। आप एक बार जो बात सुन लेती थीं उसी समय उसे अपने कर्म में शामिल कर लेती थीं। 24 जून 1965 को आपने अपने नश्वर देह का त्याग करके संपूर्णता को प्राप्त किया था। वैष्णवी व प्राचीं ने मां के गीत पर नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति दी। इस अवसर पर बीके आरती, बीके गरविता, बीके भीम चौहान, बीके कृष्ण रानीला, बीके रामनिवास सैय, बीके सुनील व मीडिया कॉर्डिनेटर बीके धर्मवीर सहित अनेक ब्रह्मावत्स उपस्थित रहे।

एसवीएसयू में यूजी कोर्स में दाखिलों की अंतिम तिथि 25 जून से बढ़ाकर तीन जुलाई की गई

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

पलवल, 24 जून। श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय ने अंडर ग्रेजुएट (यूजी) प्रोग्राम में दाखिला लेने के लिए आवेदन की अंतिम तिथि बढ़ा दी है। अंतिम तिथि 25 जून को बढ़ा कर अब तीन जुलाई कर दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर दिनेश कुमार ने अधिकारियों के साथ बैठक में यह निर्णय लिया। उन्होंने कहा कि अधिक से अधिक विद्यार्थियों को आवेदन करने का मौका मिले, इसी उद्देश्य से अंतिम तिथि बढ़ाई गई है। देश के पहले राजकीय कौशल विश्वविद्यालय में कई राज्यों के विद्यार्थी यूजी प्रोग्राम दाखिला लेने के लिए आवेदन कर रहे हैं। इस बार विश्वविद्यालय ने यूजी और पीजी को मिला कर कुल 50 से भी ज्यादा प्रोग्राम में दाखिलों के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। कुलपति प्रोफेसर दिनेश कुमार के बताया कौशल आधारित विषयों में दाखिला लेने के प्रति विद्यार्थियों की रुचि निरंतर बढ़ती जा रही है। यह ऐसे प्रोग्राम हैं, जो सीधे रोजगार से जुड़े हैं। बैठक में कुलपति प्रोफेसर दिनेश कुमार ने कहा कि अलग-अलग प्रोग्राम के अनुसार अत्याधुनिक लैब सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में स्थापित की गई हैं। नई लैब स्थापित करने के लिए विश्वविद्यालय के पास पर्याप्त बजट है। विद्यार्थियों को मशीन लर्निंग और हैंड्स ऑन प्रैक्टिस से जोड़ना हमारा पहला लक्ष्य है, ताकि वो इंडस्ट्री के लिए पूरी तरह से तैयार होकर निकले।

भूतपूर्व सैनिकों एवं अर्द्धसैनिक बल के सेवामुक्त कर्मचारी के लिये पलवल में विशेष पुलिस अधिकारियों की भर्ती

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

पलवल, 24 जून। जैसा कि हरियाणा पुलिस अधिनियम -2007 की धारा 21 में उल्लेखित है के अनुसार एक वर्ष की नियत अवधि के लिये अनुबंध आधार पर जिला पुलिस पलवल में विशेष पुलिस अधिकारी के रुप में सहायक पुलिस बल स्थापित किये गये थे । जिनके अभी जिला पलवल में 55 रिक्त पदों पर और भर्ती की जानी है । इच्छुक आवेदक अपने प्रार्थना पत्र, मूल शिक्षा प्रमाण पत्र(12वीं), आधार कार्ड, परिवार पहचान पत्र, सरपंच/पार्षद द्वारा जारी चरित्र प्रमाण पत्र, ऑनलाइन पुलिस वेरीफिकेशन, सिविल अस्पताल से जारी मेडिकल फिटनेस, भूतपूर्व सैनिक डिस्चार्ज बुक एंव हरियाणा पुलिस अधिनियम सुरक्षा बल का सेवा मुक्ति प्रमाण पत्र सहित व दो फोटो को दस्ती दिनांक 30 जून 2025 समय 5:00 पीएम तक लघु सचिवालय पलवल के तृतीय तल पर स्थित जिला पुलिस कार्यालय पलवल की सेना क्लर्क शाखा में जमा करवा सकते है।

गांव भुलवाना में किया गया बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम का आयोजन

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

पलवल, 24 जून। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भुलवाना के अंतर्गत राजवीर सरपंच के ऑफिस पर गांव भुलवाना में मेडिकल ऑफिसर व इंचार्ज डॉक्टर पंकज व मौजूदा सरपंच राजवीर द्वारा "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" कार्यक्रम का आयोजन किया गया । जिसमें डॉ पंकज ने कन्या भ्रूण हत्या के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम की शुरूआत 22 जनवरी 2015 को की गई। उन्होंने बताया कि योजना अल्ट्रासाउंड के माध्यम से गर्भ में पल रहे भ्रूण का अल्ट्रासाउंड के जरिए लड़का लड़की का पता लगाया जाता है तो यह दंडनीय अपराध है। जन्म से पहले या बाद में लड़कियों को मारना पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या का कम होने से सामाजिक असंतुलन पैदा होता है। उन्होंने इस जागरूकता अभियान के द्वारा कन्या भ्रूण हत्या के हानिकारक प्रभाव के बारे में जनता को जागरूक किया और बेटियों के महत्व को बढ़ावा दिया।

रतिया मीडिया वेलफेयर क्लब का एक दल गोवा में सेमिनार में भाग लेने के लिए रवाना

हरियाणा वाटिका/नंदकिशोर

रतिया, 24 जून। रतिया मीडिया वेलफेयर क्लब के सदस्य मंगलवार को देश की भौगोलिक व सांस्कृतिक धरोहर को जानने एवं मीडिया के एक सैमिनार में शामिल होने के लिए छः दिवसीय गोवा की अध्ययन यात्रा पर रतिया मीडिया क्लब के 10 सदस्य क्लब के संरक्षक भुवनेश झंडई की अगुवाई में रवाना हुए। यात्रा को शहर के प्रसिद्ध समाज सेवी एवं श्री सती माई मंदिर के प्रधान सोमनाथ गर्ग व एडवोकेट विक्की गर्ग ने सदस्यों को गुलदस्ते देकर उनकी यात्रा के लिए शुभकामनाएं देते हुए उनकी यात्रा की मंगलमय कामना की। वहीं इस अवसर पर मीडिया क्लब के मुख्य संयोजक धर्मेंद्र गोस्वामी ने भी विशेष रूप से शिरकत की। ऐतिहासिक यात्रा पर रवाना होने से पहले मीडिया क्लब के अध्यक्ष बोबी गोस्वामी ने कहा कि मीडिया वेलफेयर क्लब देश के विभिन्न राज्यों की संस्कृत भौगोलिक धरोहर स्थिति को जानने के लिए लगातार अध्ययन यात्रा करता है तथा फिर इन अध्ययन यात्राओं को लोगों तक मीडिया के विभिन्न माध्यमों से सांझा करता है उन्होंने कहा की यात्रा का उद्देश्य है की देश के विभिन्न राज्यों की संस्कृति को जन-जन तक पहुंचना है ताकि लोगों को हमारे क्षेत्र के लोगों को देश की महान सभ्यता और संस्कृति की जानकारी मिल सके। इस यात्रा पर क्लब के भुवनेश झंड़ई ,बोबी गोस्वामी, गुरचरण सिंह, रवि गोयल, नीटू गोयल, लवली गिलहोत्रा,सुरेश मंगला , नरेंद्र बंसल ,राकेश ललित, शैलेंद्र रोमी व स्वर्ण सिंह रवाना हुए।

सौर ऊर्जा के प्रति जागरूक पंचायत ही जीत जाएगी एक करोड़ रूपए का ईनाम: एडीसी

एक करोड़ रुपए की राशि जीतकर मॉडल सोलर गांव में मिलेगी विकास कार्यों की और तेज गति: एडीसी

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 24 जून। प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत चलाई गई योजना में जिले में एक गांव को मॉडल सौलर गांव चुना जाना भी शामिल है। मॉडल सोलर पंचायत को ईनाम के रूप में एक करोड़ मिलेंगे, लेकिन यह राशि वही ग्राम पंचायत ही जीतेगी, जो सौर ऊर्जा और बिजली बचत के प्रति जागरूक होगी। जिले में 47 पंचायतों में एक करोड़ रुपए की राशि जीतने की प्रतिस्पर्धा है। वहीं दूसरी ओर नवीन एवं नवीनकरणीय ऊर्जा विभाग इस योजना के बारे में पंचायत विभाग के माध्यम से जागरूकता अभियान भी चलाएगा, जिसमें पंचायत विभाग के अधिकारी पंचायतें को इस योजना के बारे में जानकारी देंगे। ये जानकारी देते हुए एडीसी एवं नवीन एवं नवीनकरणीय ऊर्जा विभाग के मुख्य परियोजना अधिकारी डॉ. मुनीष नागपाल ने बताया कि नवीन एव नवीकरणीय उर्जा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना क्रियान्वित जा रही है। उसी में जिले में एक गांव को मॉडल सौलर गांव बनाया जाना शामिल है, योजना के तहत वर्ष 2011 की जनगणना के आधार पर पांच हजार से अधिक आबादी वाले गांवों में सबसे अधिक सोलर पैनल उपकरण लगवाने पर एक करोड़ रुपए दिए जाएंगे।

पांच हजार की आबादी से अधिक गांवों के बीच बनेगी प्रस्पिर्धा

सबसे अधिक सोलर सिस्टम लगाने वाले पांच अधिक आबादी वाले गांवों पर यह योजना लागू है, इस श्रेणी में जिला के 47 गांव आते हैं, जिनके बीच यह प्रतिस्पर्धा है। इन गांवों बड़सी, बापोड़ा ,कलिंगा, चांग, खरक कला, देवसर बलियाली, बड़वा, दिनोद, धनाना, बामला, तिगड़ाना, भिवानी जोन, बहल, कैरु, कुंगड़, लोहारी जाटू जमालपुर, मुढाल खुर्द, खानक, तालु, मानहेरु, मिताथल, पालुवास, मिरान, बडेसरा, पुर, जुई खुर्द, संडवा, सोहांसड़ा, लोहानी, रिवासा, सागवन, मण्ढाणा, कुडल, सैय, ढाणी माहू, किरावड़, देवराला, रतेरा, धारेडू, सिवाना, बजीणा, कोहाड, खरक खुर्द, बीरण, सुई शामिल हैं।

गांवों के बीच प्रतिस्पर्धा 25 नवंबर 2025 तक चलेगी

गांवों में सोलर उपकरणों को अपनाने की छह माह का समय दिया गया है, जो कि 26 मई से शुरू हो चुका है। यह प्रतिस्पर्धा 25 नवंबर 2025 तक चलेगी। सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले गांव को मॉडल सोलर ग्राम बनाया जाएगा। वही गांव एक करोड़ रुपए जीत पाएगा, जिसने इस अवधि के दौरान सबसे अधिक सोलर सिस्टम लगवाए होंगे।

पांच हजार से अधिक आबादी वाले गांवों को यह प्रतिस्पर्धा जीतने का सुनहरा अवसर है: एडीसी

मॉडल सोलर गांव बनने के लिए सबसे अधिक सोलर सिस्टम लगवाने होंगे।

सौर ऊर्जा सिस्टम के प्रति जागरूकता के लिए यह बहुत ही महत्वाकांक्षी योजना है। पांच हजार से अधिक आबादी वाले गांवों को यह प्रतिस्पर्धा जीतने का सुनहरा अवसर है। एक करोड़ रुपए ईनाम राशि जीतने वाले गांव में विकास को और अधिक गति मिलेगी। इस योजना बारे में एडीसी कार्यालय के कमरा नंबर 24 में और अधिक जानकारी हासिल कर सकते हैं।

किसानों को नई तकनीक व आधुनिक मशीनों से जोड़ रही हरियाणा सरकार

अब मोबाइल ऐप से मिलेगी कीट और बीमारी की पूरी जानकारी

नितिन वालिया, नारनौल

भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की एक टीम ने आज महेंद्रगढ़ जिले में कपास और अन्य फसलों का सर्वेक्षण किया। इस दौरान किसानों को फसलों को कीटों और बीमारियों से बचाने के लिए कई महत्वपूर्ण जानकारियां दी गईं। सबसे खास बात यह रही कि किसानों को राष्ट्रीय कीट निगरानी प्रणाली (ठढरर) मोबाइल ऐप के इस्तेमाल के बारे में विस्तार से बताया गया। हरियाणा सरकार का भी मकसद है कि इस नई तकनीक व आधुनिक मशीनों का प्रयोग करें। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के क्षेत्रीय एकीकृत नाशी जीव प्रबंधन केंद्र, फरीदाबाद की उपनिदेशक डॉ. वंदना पांडेय के नेतृत्व में आई टीम ने जिला कृषि विभाग के डॉ. देवेंद्र सिंह और डॉ. हरपाल यादव के सहयोग से यह सर्वेक्षण किया।

क्या है राष्ट्रीय कीट निगरानी प्रणाली (NPSS) मोबाइल ऐप

डीडीए देवेंद्र सिंह ने बताया कि यह एक बेहद काम का ऐप है जिसे किसान अपने मोबाइल फोन पर इस्तेमाल कर सकते हैं?। इस ऐप की मदद से किसान अपनी फसल में लगने वाले किसी भी कीट या बीमारी की जानकारी तुरंत पा सकते हैं। उन्हें ऐप के माध्यम से ही विशेषज्ञ सलाह भी मिलेगी कि कैसे इन समस्याओं से निपटा जाए।

इस ऐप का सबसे बड़ा फायदा यह है कि किसान अनावश्यक रूप से केमिकल वाले कीटनाशकों का इस्तेमाल करने से बच सकेंगे। यह ऐप किसानों को सही समय पर सही जानकारी देकर उनकी फसलों को सुरक्षित रखने में मदद करेगा।

कीट और बीमारियों से बचाव के लिए अन्य अहम सुझाव

सर्वेक्षण के दौरान टीम ने किसानों को कीट और बीमारियों से निपटने के लिए कई यांत्रिक और बायो-पेस्टीसाइड (जैविक कीटनाशक) उपायों की जानकारी दी।

फेरोमन ट्रैप का इस्तेमाल

फसल की शुरूआत में कीटों की निगरानी और रोकथाम के लिए प्रति खेत में 4 फेरोमन ट्रैप लगाने की सलाह दी गई। कपास के लिए अलग तरह का एलयूआरई (आकर्षक) और अन्य फसलों के लिए अलग तरह का एलयूआरई इस्तेमाल करने को कहा गया।

पुरानी फसल के अवशेषों का प्रबंधन

किसानों को यह भी सलाह दी गई कि कपास के खेत के पास पुरानी फसल के अवशेषों को पॉलीथिन से ढक दें या मिट्टी में दबा दें। इससे कीटों के पनपने का खतरा कम होगा इस सर्वेक्षण में भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के क्षेत्रीय एकीकृत नाशी जीव प्रबंधन केंद्र, फरीदाबाद से सहायक वनस्पति संरक्षण अधिकारी लक्ष्मीकांत, वैज्ञानिक सहायक रूबी, तकनीकी अधिकारी मिस आस्था हुडा और हरियाणा राज्य सरकार के जिला कृषि विभाग से डॉ. सुधीर यादव सहित कई गणमान्य किसान मौजूद रहे।

दिनोद रोड़ निर्माण कार्य की निगरानी हेतु महापंचायत ने किया कमेटी का गठन

निर्माण में अनियमितता बर्दाश्त नहीं की जाएगी : अनिल कुमार

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 24 जून। लाला पहलवान की अध्यक्षता में रेल अंडरपास महापंचायत की मीटिंग मका आयोजन सोमवार को हुआ। जिसमें सर्वसम्मति से दिनोद रोड़ का निर्माण एस्टीमेट के अनुसार करवाने एवं निरीक्षण हेतु 21 सदस्य कमेटी बनाई गई। यह जानकारी देते महापंचायत संरक्षक रोहतास वर्मा ने बताया कि निगरानी कमेटी में लाला पहलवान, ओमपाल चौहान पूर्व पार्षद, रामसिंह वैद्य, रामशरण ठेकेदार, अशोक यादव, कृष्ण सिंह परमार, सुखबीर सिंह चौहान, रमेश कुमार, अशोक कौशिक, इंद्र सिंह लांबा, भोपाल सिंह सोनी, अधिवक्ता राकेश पंवार, अनिल कुमार पार्षद प्रतिनिधि, राजेश कुमार एमसी, कुलदीप सिंह तंवर, रमेश वर्मा भानगढ़, कुंदनलाल भारद्वाज, बीर सिंह राजपूत, राजेश कुमार ग्रेवाल को सदस्य बनाया गया। नवगठित निगरानी कमेटी की बैठक में सर्वसम्मति से अनिल कुमार पार्षद प्रतिनिधि को मुखिया, कृष्ण सिंह परमार को सचिव/ प्रवक्ता, रमेश वर्मा भानगढ़ को सूचना मंत्री नियुक्त किया गया। बैठक में उपस्थित सदस्यों को संबोधित करते हुए कमेटी प्रधान ने कि दिनोद रोड़ इस क्षेत्र कि लाइफ लाइन है चार वार्डों के लोगों के आने जाने का मुख्य मध्य मार्ग है। पिछले आठ साल के कड़े संघर्ष करने के निर्माण कार्य शुरू हुआ है। वर्ष 2008 में निर्माण हुआ रोड़ जर्जर हालत में हो गया था। लोगों कि सुविधा के लिए नगर परिषद ने 2.5 करोड़ रुपए की लागत से रोड़ का निर्माण किया जा रहा, रोड़ का निर्माण अच्छा हो, एस्टीमेट के अनुसार हो, जनता की सुविधाओं को ध्यान में रखा जाए, मैटीरियल सही अनुपात में प्रयोग हो, पानी निकासी का उचित प्रबंध हो ,निर्माण कार्य में भ्रष्टाचार बिल्कुल बर्दाश्त नहीं किया जाएगा, जरा भी लापरवाही एवं अनियमितता बर्दाश्त नही होगी तुरंत उच्च अधिकारियों के संज्ञान में लाया जाएगा। बैठक में निगरानी कमेटी के सदस्य, शिवकुमार गोठवाल, विश्वामित्र, सीताराम रिटायर्ड एसएसआई, राजेश ग्रेवाल, मनबीर, बीआर मेहरा, चंदन सिंह पहाड़ी, कालू चांगिया, राजबीर गोस्वामी आदि उपस्थित रहे।

डीसी ने ली जिला स्तरीय सतर्कता एवं निगरानी कमेटी की बैठक

हरियाणा वाटिका/विकास कुमार

कैथल, 24 जून। मंगलवार को लघु सचिवालय में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण अधिनियम एक्ट 1989) के तहत जिला स्तरीय सतर्कता एवं निगरानी कमेटी की बैठक डीसी प्रीति की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में डीसी प्रीति ने अत्याचार निवारण अधिनियम एक्ट के तहत दर्ज मुकदमों को लेकर विस्तार से समीक्षा की और एक्ट को लेकर गठित कमेटी को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

डीसी प्रीति ने पुलिस विभाग को निर्देश दिए कि अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति एक्ट तथा पोक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज होने के तुरंत बाद जिला कल्याण अधिकारी को सूचित करें, ताकि पीड़ित को नियमानुसार सहायता प्रदान की जा सके। इसके साथ ही कोर्ट में चालान समय पर जमा करवाए और केस की मजबूती के साथ पैरवी करें। चालान जमा करवाने की सूचना भी जिला कल्याण अधिकारी को भेजना सुनिश्चित करें ताकि मुआवजा संबंधी प्रक्रिया पूरी की जा सके। वहीं जिला कल्याण अधिकारी निर्देश दिए कि पीड़ित को तय समय पर मुआवजा राशि प्रदान की जाए।

नशा तस्करी की सूचना MANAS- हेल्पलाइन 1933 पर दे, इलाज व काउंसलिंग भी पाएं: एसपी आस्था मोदी

हरियाणा वाटिका/विकास कुमार

कैथल, 24 जून। केन्द्र व राज्य सरकार की नशा के विरुद्ध जारी लड़ाई में कैथल पुलिस पूरी प्रतिबद्धता और समर्पण के साथ जुड़ी हुई है। अब इस निर्णायक जंग में केंद्र सरकार ने एक ऐतिहासिक पहल करते हुए राष्ट्रीय नारकोटिक्स हेल्पलाइन MANAS-1933 की शुरूआत की है। यह हेल्पलाइन 24 घंटे संचालित होगी और इसका उद्देश्य जल्द से जल्द भारत को नशामुक्त बनाना है। सरकार की इस पहल को देशभर में नशा तस्करी रोकने, नशे की लत से पीड़ित लोगों को सहायता उपलब्ध कराने और समाज में जागरूकता फैलाने की दिशा में एक बड़ा कदम माना जा रहा है। इस मुहिम से कैथल पुलिस भी जुड़ी हुई है और पुलिस नशा विरोधी अभियान को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए टअठअर-1933 के माध्यम से प्राप्त सूचनाओं पर तत्परता से कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। इस हेल्पलाइन के माध्यम से आमजन ड्रग तस्करी, नशा सेवन व इससे जुड़ी गतिविधियों की गोपनीय सूचना सांझा कर सकते हैं, जिसकी सूचना देने वाले की पहचान पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी। इसके अतिरिक्त, हेल्पलाइन पर काउंसलिंग व पुनर्वास सुविधाएं भी उपलब्ध होंगी, जिससे नशे के शिकार लोगों को दोबारा सामान्य जीवन की ओर लौटने में मदद मिलेगी। यह हेल्पलाइन देशभर की एंटी-नारकोटिक्स टास्क फोर्स से भी जुड़ी हुई है, जिससे सूचना मिलते ही तस्करों पर त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित की जा सकेगी। साथ ही hhttps://www.ncbmanas.gov.in/awareness नामक वेबसाइट भी शुरू की गई है, जिस पर नशे के विरुद्ध जागरूकता फैलाने हेतु पोस्टर, वीडियो, ब्रोशर आदि उपलब्ध कराए गए हैं। यह सामग्री न केवल जागरूकता को बढ़ावा देगी, बल्कि समाज में नशे के खिलाफ एकजुटता का संदेश भी देगी।

बिजली दरों में बढ़ोत्तरी कर जनता को लूट रही भाजपा सरकार : अशोक बुवानीवाला

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 24 जून। बिजली की दरों में हुई चुपचाप बढ़ोतरी को वापस लेने की मांग उठाते हुए हरियाणा प्रदेश कांग्रेस उद्योग सैल के चेयरमैन अशोक बुवानीवाला ने कहा है कि भाजपा ने एक ही झटके में बिजली को चार गुना तक महंगा कर दिया। यानी जिन आम परिवारों को 900 से 1000 रुपए तक बिल देना पड़ता था, उन्हें अब 4000 से 5000 रुपये बिल थमाया जा रहा है। आज प्रैस को जारी एक विज्ञप्ति में उन्होंने कहा कि गर्मी और उमस भरे इस मौसम में बिजली के कई-कई घंटे के कट और दूसरी तरफ महंगाई की मार ने आम आदमी को बेहाल कर दिया है। जब से भाजपा सत्ता में आई है, आम आदमी को इसी तरह दोहरी मार से पीसा जा रहा है। आज पूरे प्रदेश के हालात ये है कि बिजली-पानी जैसी बुनियादी सुविधाएं ना मिलने से आमजन में त्राहिमाम मचा हुआ है।

बुवानीवाला ने कहा कि बिजली की दरें महंगी होने के चलते लोगों को भारी भरकम बिल मिलने लगे हैं। निगम ने 75 रुपए प्रति किलो वाट फिक्स चार्ज भी इसमें जोड़ दिया है। यानी 10 किलोवाट कनेक्शन पर अब हर महीने 750 रुपए अतिरिक्त देने पड़ रहे हैं। पहले दरें स्लैब वाइज थीं, यानी 50 यूनिट या इससे ज्यादा इस्तेमाल पर 2.50 रुपए से 6.30 रुपए प्रति यूनिट खर्च होता था। अब 5 किलो वाट से अधिक लोड होने पर 6.50 से 7.50 रुपये प्रति यूनिट वसूला जा रहा है। अलग से स्लैब वाइज बिजली के दामों में भी 20 से लेकर 40 पैसे प्रति यूनिट तक बढ़ोतरी हुई है। इतना ही नहीं, विभिन्न कैटेगरी के लिए बनाए गए स्लैब में भी बदलाव किया गया है। बिजली की बढ़ी हुई दरें पहली अप्रैल से चुपचाप लागू कर दी गयी है।

कांग्रेस नेता ने कहा कि कांग्रेस कार्यकाल के दौरान प्रदेश में 4 नए पावर प्लांट और एक न्यूक्लियर पावर प्लांट की स्थापना की गई थी। जबकि भाजपा राज में एक भी यूनिट बिजली उत्पादन का काम नहीं किया गया। बावजूद इसके यह सरकार 10 साल से लगातार बिजली की दरों में बढ़ोतरी करती जा रही है। कांग्रेस कार्यकाल के दौरान आम उपभोक्ताओं के 1600 करोड़ रुपए के बिजली बिल माफ किए गए थे। लेकिन भाजपा ऐसी कोई राहत देने की बजाए, रेट बढ़ोतरी के साथ अनाप-शनाप गैरजरूरी चार्ज जोडकर लोगों की जेब काटने में जुटी है।

मनचलों एवं नशे में वाहन चलाने वालों पर फतेहाबाद यातायात पुलिस की सख्त कार्रवाई जारी

हरियाणा वाटिका/नंदकिशोर

फतेहाबाद, 24 जून। पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन, आईपीएस के मार्गदर्शन में फतेहाबाद की यातायात पुलिस जिलेभर में यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों, विशेष रूप से नशे में वाहन चलाने वालों और मनचलों के खिलाफ लगातार सख्त अभियान चला रही है। आमजन की सुरक्षा एवं सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के उद्देश्य से यातायात पुलिस हर समय अलर्ट मोड में कार्य कर रही है। यातायात प्रभारी उपनिरीक्षक जयसिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि हाल ही में शहर के प्रमुख चौराहों, बाजार क्षेत्रों और स्कूल-कॉलेजों के आसपास विशेष चेकिंग अभियान चलाया गया, जिसके तहत कई दोपहिया और चारपहिया वाहनों की जांच की गई। इस दौरान शराब पीकर वाहन चलाने वालों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए एक ही दिन में 10 'ड्रंक एंड ड्राइव' के चालान किए गए, और कुछ वाहनों को जब्त भी किया गया। पुलिस ने स्पष्ट किया है कि नशे की हालत में वाहन चलाना न केवल एक गंभीर कानून अपराध है, बल्कि यह आम नागरिकों की जान को भी खतरे में डालता है। ऐसे में इस प्रकार की लापरवाही बरतने वालों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा।

फतेहाबाद पुलिस आमजन से अपील करती है कि वे यातायात नियमों का पालन करें, नशे की स्थिति में वाहन न चलाएं और सड़क सुरक्षा में सक्रिय सहयोग करें। पुलिस प्रशासन सड़क दुर्घटनाओं को रोकने और नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पूरी तरह सतर्क और प्रतिबद्ध है।

उपायुक्त का रात्रि ठहराव 26 को

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

पलवल, 24 जून। प्रदेश सरकार के निदेर्शानुसार गुरुवार 26 जून को शाम 5 बजे से जिला के खंड हसनपुर के गांव भवाना स्थित राजकीय प्राइमरी स्कूल में उपायुक्त डॉ. हरीश कुमार वशिष्ठ की अध्यक्षता में रात्रि ठहराव का आयोजन किया जाएगा। रात्रि ठहराव के दौरान उपायुक्त व पुलिस अधीक्षक सहित जिला के सभी विभागों के अधिकारी ग्रामीणों की समस्याएं सुनकर उनका समाधान करवाएंगे। उपायुक्त डा. हरीश कुमार वशिष्ठ ने निर्देश दिए कि जिला के विभिन्न विभागों द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी देने के लिए अधिकारी अपने-अपने विभाग से संबंधित स्टॉल लगवाना सुनिश्चित करें।

अपराधियों की नींद उड़ाई फतेहाबाद पुलिस ने, 6 घंटे में 32 गिरफ्तार, नशीले पदार्थ किए बरामद

हरियाणा वाटिका/नंदकिशोर

रतिया 24 जून। पुलिस महानिदेशक हरियाणा के आदेश एवं पुलिस अधीक्षक श्री सिद्धांत जैन, आईपीएस के दिशा-निदेशों के तहत "नशा मुक्त भारत अभियान" के अंतर्गत अपराध, नशा और गैरकानूनी गतिविधियों पर नकेल कसने के लिए "ऑपरेशन आक्रमण" चलाया गया। इस विशेष कार्रवाई के दौरान फतेहाबाद पुलिस ने जिलेभर में बड़ी कार्यवाही करते हुए 32 आरोपियों को गिरफ्तार किया।

इस ऑपरेशन में कुल 38 टीमों (390 पुलिस जवानों सहित) ने भाग लिया। शहर, कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों के चौक-चौराहों एवं सार्वजनिक स्थानों पर नाकाबंदी, रेड और सघन चेकिंग की गई। यह अभियान सुबह 6:00 बजे शुरू होकर दोपहर 12:00 बजे तक चला।

अनुसूचित जाति व पिछड़ा वर्ग की धर्मशालाओं पर सोलर सिस्टम लगवाने पर मिलेगी 25 प्रतिशत सब्सिडी

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 24 जून। नवीन एंव नवीकरणीय उर्जा विभाग द्वारा अनुसूचित एवं पिछड़े वर्ग की पंजीकृत धर्मशालाओं में सोलर पावर प्लांट लगाए की योजना शुरू की, जिस पर सरकार द्वारा 75 फीसदी अनुदान मिलेगा। यह योजना पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर है।

ये जानकारी देते हुए एडीसी एवं नवीन एवं नवीनकरणीय ऊर्जा विभाग के मुख्य परियोजना अधिकारी डॉ. मुनीष नागपाल ने बताया कि इस योजना का लाभ लेने के लिए धर्मशालाओं का सोसाइटी एक्ट के तहत पंजीकृत होना जरूरी है। उन्होंने बताया कि इस योजना के तहत एक किलो वाट से पांच किलो वॉट तक सोलर सिस्टम लगवा सकते हैं। जिन पर 75 प्रतिशत सब्सिडी सरकार वहन करेगी। लागत का 25 प्रतिशत धर्मशाला संचालकों को देना होगा।

उन्होंने बताया कि प्रति किलो वाट पर 55 हजार रुपए की लागत आएगी। धर्मशाला में बिजली का कनेक्शन होना अनिवार्य है। जो एससी या बीसी धर्मशाला संचालक इस योजना के तहत सोलर सिस्टम लगवाना चाहते हैं, वे अतिरिक्त उपायुक्त कार्यालय के कमरा नंबर 24 में संपर्क कर सकते हैं। यह योजना पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर है।

आईटीआई भिवानी में रोजगार मेला 27 जून को

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 24 जून। डीसी महावीर कौशिक ने बताया कि राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान भिवानी परिसर में 27 जून को प्रातः 09.00 बजे रोजगार मेले का आयोजन किया जाएगा। इस रोजगार मेले में फीटर, इलेक्ट्रीशियन, टर्नर, वेल्डर, मशीनिस्ट, वायरमैन, इलेक्ट्रॉनिक मैकेनिक, ट्रेक्टर मैकेनिक, टीपीईएस., शीट मेटल, फाउंड्रीमैन व्यवसायों से पास विद्यार्थी भाग ले सकते हैं।

आईटीआई प्रधानाचार्य बलबीर सिंह ने बताया कि इस रोजगार मेले में एसियन ऑटोमोटिव प्रा.लि. रोहतक द्वारा साक्षात्कार के आधार पर रोजगार के अवसर दिए जाएंगे। हरियाणा राज्य में स्थित आईटीआई संस्थानों से पास छात्र-छात्राएं, जिनकी आयु 18 से 24 वर्ष तक है, वे इस रोजगार मेले में भाग ले सकते हैं।

डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान से आज जम्मू कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है : सुनील इन्दौरा

हरियाणा वाटिका/नंदकिशोर

रतिया, 24 जून। देश में चल रहे दो विधान दो निशान का विरोध करने वाले भाजपा के प्रमुख डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अपने बलिदान से पहले कहा था कि एक देश एक संविधान एक निशान के तहत जम्मू कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है ओर उसी के तहत जम्मू कश्मीर में तिरंगा झंडा लगा होना चाहिए ओर हर भारतीय को जम्मू कश्मीर में बीना बीजा के प्रवेश होना चाहिए लेकिन कांग्रेस की सरकार ने एक देश मे दो तरह के संविधान लागू कर रखे थे और जम्मू कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग न मानकर अलग देश की तरह स्थापित किया था।यह बात भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा के पूर्व प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य व धानक समाज उत्थान सभा हरियाणा के प्रदेश अध्यक्ष सुनील इन्दौरा ने डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी का बलिदान दिवस मनाते हुए लोगों को संबोधित करते हुए कही है। उन्होंने कहा कि भाजपा एक राष्ट्रवादी पार्टी है इसके हर कार्यकर्ता में राष्ट्र हित की भावना कुट कुट कर भरी हुई है। डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जम्मू कश्मीर में धारा 370 को लागू करने का विरोध किया था और इसे हटाने का संकल्प लिया था ।और जम्मू कश्मीर में तिरंगा लहराने का संकल्प लिया था। इसलिए श्यामा प्रसाद मुखर्जी जम्मू कश्मीर ने अपना देश के लिए बलिदान दिया था।आज देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भाजपा के देश हित में लिए गए संकल्प को पूरा कर सिद्ध कर रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 11 साल पूरे होने पर देश संकल्प से सिद्धी तक मना रहा है और भाजपा द्वारा किए वादे ओर देश में हो रहा चंहुमुखी विकास जन जन तक पहुंचाया जा रहा है आज जम्मू कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और तिरंगा के साथ संविधान भी एक है। आज हम डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी का बलिदान दिवस मनाते हुए संकल्प लेते हैं कि हम सदैव राष्ट्रवादी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के साथ खड़े रहेंगे ताकि देश उन्नति विकास और दुनिया में नंबर एक पर बना रहे। इस मौके पर बली सिंह, सुरजीत सिंह, शुभम इन्दौरा, राकेश इन्दौरा, अनीता देवी,फुलपति, पूजा रानी, इकबाल सिंह, बिन्दर सिंह, काला सिंह, आदि अनेक लोग उपस्थित थे।

सोनीपत में 30 जून तक भारी बारिश का अंदेशा- उपायुक्त सुशील सारवान

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

सोनीपत, 24 जून। उपायुक्त सुशील सारवान ने जानकारी देते हुए बताया कि मौसम विभाग की ओर से जारी किए गए मौसम विभाग के आकंडों के आधार पर सोनीपत में 30 जून तक बिजली गरजन के साथ-साथ भारी बारिश की आशंका है।

उन्होंने बताया कि कृषि मौसम विभाग के द्वार हरियाणा में एडवाइजारी जारी करते हुए बताया गया है कि भारी बारिश के कारण फसलों को नुकसान हो सकते है। जिस से बचने के लिए किसानों को सलाह दी गई कि वो कपास को नुकसान से बचाने के लिए स्थिर पानी को तुरंत हटा दें। उन्होंने बताया कि कपास अपनी प्रारंभिक वृद्धि अवस्था के दौरान जल ठहराव के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होता है। जिससे फसल को गंभीर नुकसान होता है। ऐसे ही गन्ना, चावल, खरीफ मक्का, खीरा व अन्य फसलों पर सिंचाई/उर्वरक/रासायनिक छिड़काव न करें। खेत में उचित जल निकासी बनाए रखें और बारिश के तुरंत बाद रूके हुए वर्षा के जल को हटा दें।

आयुष्मान कार्ड बनवाएं, 5 लाख तक के इलाज का उठाएं लाभ

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

पलवल, 24 जून। सिविल सर्जन डॉक्टर जय भगवान जाटान ने जानकारी दी कि जिला पलवल में अब तक 707135 पात्र लाभार्थियों में से लगभग 58130 लाभार्थियों के आयुष्मान भारत कार्ड बनाए जा चुके हैं। अभी लगभग 1.5 लाख कार्ड बनाए जाने शेष हैं।

सिविल सर्जन, पलवल ने बताया कि जिले में 70 वर्ष या उससे अधिक आयु के लगभग 3500 लाभार्थियों के कार्ड बनाए जा चुके हैं। सभी स्वास्थ्य संस्थानों को निर्देश दिए गए हैं कि वे अपने क्षेत्र के वरिष्ठ नागरिकों को निकटतम सीएससी सेकेंद्र पर ले जाकर उनके आयुष्मान कार्ड बनवाना सुनिश्चित करें। साथ ही, आम नागरिक पोर्टल पर जाकर स्वयं भी अपना या अपने परिवार का कार्ड बना सकते हैं।

सभी नागरिकों से अपील है कि वे शीघ्र अपना आयुष्मान कार्ड बनवाएं और 5 लाख रुपये तक के निःशुल्क इलाज का लाभ प्राप्त करें।

महाराजा नीमपाल सिंह राजकीय महाविद्यालय में नशा मुक्त जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

महाविद्यालय के विद्यार्थियों को दिलाई नशे से दूर रहने की शपथ

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 24 जून। युवाओ को नशे से दूर रहते हुए राष्ट्र की तरक्की में भूमिका सुनिश्चित करने के उद्देश्य से स्थानीय महाराजा नीमपाल सिंह राजकीय महाविद्यालय के नार्कोटिक्स सेल इंचार्ज डा. देवेंद्र दलाल के निर्देशन में मंगलवार को नशा मुक्त जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह जानकारी देते हुए महाविद्यालय के प्रैस प्रभारी डा. जगवीर सिंह मान ने बताया कि कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय प्राचार्य जगबीर सिंह श्योराण एवं उप प्राचार्य भीम सिंह की देखरेख में किया गया। इस दौरान उपस्थित विद्यार्थियों को नशे से दूर रहने शपथ भी दिलाई। प्रैस प्रभारी डा. जगवीर सिंह मान ने कहा कि नशा किसी भी चीज का हो, वह शारीरिक व मानसिक तौर पर खतरनाक ही साबित होता है। उन्होंने कहा कि

जिस सुकून की तलाश में लोग नशे की शुरूआत करते है, वह आगे चलकर लत बनकर दुश्मन बन जाता है।

उन्होंने कहा कि नशा शराब का हो सिगरेट या फिर दूसरी चीजों का इसे करने से लोगों को इंस्टेट खुशी मिलती है, तनाव कम होने का एहसास होता है तथा यहां तक कि कुछ लोगों का मानना है कि इससे आत्मविश्वास बढ़ता है। जबकि यह सब झूठ है। नशा केवल और केवल समाज व राष्ट्र का दुश्मन है, जो कि नशा करने वालों के साथ-साथ उसके परिवार को भी बबार्दी की गर्त में धकेलता है। वही दूसरी तरफ नशे का आदी व्यक्ति अपराधिक गतिविधियों में भी संलिप्त हो जाता है। उन्होंने कहा कि नश का सेवन पेट, स्तन, मुंह और गले के कैंसर जैसी घातक बीमारियों का भी कारक है। ऐसे में प्रत्येक युवा को चाहिए कि वह नशे जैसी सामाजिक बुराई से दूर रहे।

झमाझम बारिश से सड़कें हुई जलमग्न, बढ़ी लोगों की परेशानी

हरियाणा वाटिका/एकजोत

कुरुक्षेत्र, 24 जून। कई दिनों से गर्मी झेल रहे लोगों को मंगलवार अलसुबह हुई झमाझम बारिश ने कुछ देर के लिए राहत दी, लेकिन लोगों को इसकी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। अचानक धूप खिलने से उमस और गर्मी ने सभी को पसीना पसीना कर दिया। बारिश से शहर भर की सड़कों पर पानी भर गया। सड़कों पर निकले लोग पूरे दिन इस समस्या से जूझते रहे। बारिश के कारण सड़कों पर पानी भरने से जहां आम जनजीवन परेशान रहा, तो वहीं नगर में प्रवाहित होने वाले नाले पानी से लबालब हो गए। इससे नालों का गंदा पानी सड़कों पर पसर गया। इस कारण लोगों को आवागमन में भारी दुश्वारियां का सामना करना पड़ा। बारिश के कारण नगर के विभिन्न मार्ग जलमग्न हो गए। बारिश के कारण शीला नगर, राजेंद्रा नगर कुटिया वाली गली, बिरला मंदिर वाला मार्ग, झांसा रोड, पैनोरमा के नजदीक सहित कई निचले इलाकों में बारिश का पानी जमा हो गया। हालांकि जलभराव की खबर मिलते ही नगर परिषद प्रशासन हरकत में आया और नगर परिषद

के कार्यकारी अधिकारी राजेश कुमार के निर्देश पर नगर परिषद के सफाई कर्मचारी बरसाती पानी की निकासी के काम में जुट गए। सफाई कर्मियों ने शहर के विभिन्न इलाकों से बरसात का पानी बाहर निकाला।

बारिश के बाद निकली धूप से बढ़ी उमस

जिले में बारिश होने के बाद उमस बढ़ गई है। मंगलवार को उमस भरी गर्मी से लोग जहां बेहाल हो गए। वहीं अधिकतम और न्यूनतम तापमान अन्य दिनों की अपेक्षा गिर गया। जिले में बरसात के बाद निकली धूप से एक बार पुनः उमस बढ़ गई। गर्मी का आलम यह रहा कि लोग इससे बेहाल दिखे। मंगलवार अलसुबह 4 बजे शुरू हुई झमाझम बारिश सुबह लगभग 9 बजे तक चली। लोगों को उम्मीद थी कि बारिश से गर्मी से राहत मिलेगी लेकिन बारिश के बाद धूप निकलने से मौसम में उमस पैदा हो गई जिस कारण लोग दिनभर परेशान रहे। मंगलवार को अधिकतम तापमान 33 डिग्री सेल्सियस व न्यूनतम 28 डिग्री सेल्सियस रहा।

नगरपरिषद के कार्यकारी अधिकारी ने लिया पानी निकासी का जायजा

नगर परिषद के कार्यकारी अधिकारी राजेश कुमार ने कहा कि बरसाती पानी की निकासी सुचारु रखने के लिए सुबह से ही नप के अधिकारियों व कर्मचारियों की टीम फील्ड में थी। उन्होंने स्वयं अपनी देखरेख में भी कई जगहों पर निरीक्षण किया और जहां-जहां संभव हुआ पानी निकासी की व्यवस्था करवाई। इसके अलावा सेक्टर-13 अग्रसैन स्कूल के सामने, परशुराम कालेज के सामने व मां भद्रकाली मंदिर में भी जलभराव होने पर वाटर पंप लगाकर पानी की निकासी करवाई। उन्होंने कहा कि सफाई कर्मचारियों ने अपने स्तर पर कैलाश नगर, आकाशवाणी कालोनी, सेक्टर-7 में पीर की मजार के पास, सेक्टर-5 की मार्केट, सेक्टर-13 हनुमान मंदिर के सामने, पिपली गीताद्वार के नीचे व अन्य रिहायशी एरिया में पानी निकासी लगातार सुचारु रखी। उन्होंने कहा कि भारी बरसात के कारण एक बार तो सडकों व गलियों में पानी जमा हो जाता है, लेकिन एक से दो घंटे के दौरान शहर से पानी की निकासी नालों के जरिए हो गई थी। कुछ-एक जगह पर सीवरेज जाम या सडक के लेवल के कारण कोई जलभराव रह गया हो तो उसे भी जल्द निकालने की व्यवस्था की जा रही है। इस अवसर पर उनके साथ एक्सईएन रवि ओबराय, एमई मंगूराम, एमई जयपाल, क्लर्क राकेश, फिल्ड आफिसर अनूप सिंह, आईईसी एक्सपर्ट वीरेंद्र कुमार व अन्य सफाई कर्मचारियों की टीम मौजूद थी।

जिला लोक सम्पर्क एवं कष्ट निवारण समिति की मासिक बैठक 27 जून को

हरियाणा वाटिका/एकजोत

कुरुक्षेत्र, 24 जून। उपायुक्त नेहा सिंह ने कहा कि जिला लोक सम्पर्क एवं कष्ट निवारण समिति की मासिक बैठक 27 जून को नए लघु सचिवालय के सभागार में दोपहर 12 बजे होगी। इस बैठक में 15 समस्याओं को रखा जाएगा। उपायुक्त नेहा सिंह ने कहा कि जिला लोक सम्पर्क एवं कष्ट निवारण समिति की मासिक बैठक 27 जून को दोपहर 12 बजे होगी। इस बैठक में खादय नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले मंत्री राजेश नागर लोगों की समस्याओं का समाधान करेंगे। इस बैठक में गांव सिरसला से शारदा रानी, सेक्टर 13 से ज्ञान सागर, गांव यारा से केशव, गांव बारना से पंच सुभाष चंद्र, गांव बरगट से गुरनाम सिंह, गांव खरींडवा से कृपाल सिंह, न्यू मिजार्पुर कालोनी से अनिल, गांव उमरी से अजमेर सिंह, गांव भूखडी से रीटा रानी, गांधी नगर से सुमन देवी, गांव इंद्रा बस्ती पिहोवा से संतोष रानी, गांव तंगौर से ईश्वर पाल सिंह, गांव ईशाकपुर से बंसीलाल, गांव चंद्रभानपुरा से रमेश कुमार, गांव संतोख पुरा से तरसेम सिंह, गांव अंटहेडी से संतोष देवी की समस्या रखी जाएंगी।

केंद्रीय राज्य मंत्री प्रोफेसर एसपी सिंह बाघेल आज कुरुक्षेत्र में

हरियाणा वाटिका/एकजोत

कुरुक्षेत्र, 24 जून। भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष तिजेन्द्र सिंह गोल्डी ने कहा कि केन्द्रीय मत्स्य पशुपालन एवं डेयरी तथा पंचायती राज राज्यमंत्री प्रोफेसर एसपी सिंह बाघेल 25 जून को कुरुक्षेत्र में पहुंचेंगे। उन्होंने कहा कि आपातकाल के 50 वर्ष पूरे होने पर कुरुक्षेत्र पंचायत भवन के सभागार में सुबह 11 बजे आपातकाल लगाये जाने के 50 वर्ष पूरे होने पर भारतीय लोकतंत्र का काला अध्याय संविधान हत्या दिवस 25 जून 2025 को मनाया जाएगा। इस कार्यक्रम में केन्द्रीय राज्यमंत्री प्रोफेसर एसपी सिंह बाघेल मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करेंगे। इसके उपरांत करीब 1 बजकर 20 मिनट पर पाल गडरिया समाज धर्मशाला में पौधा रोपण कार्यक्रम में पहुंचेंगे। उन्होंने कहा कि केन्द्रीय राज्यमंत्री करीब 3 बजे श्रीदेवीकूप भद्रकाली मंदिर में पूजा अर्चना करेंगे और 4 बजे ज्योतिसर तीर्थ का भ्रमण करेंगे।

कुवि में विभिन्न प्रोग्राम्स में दाखिले के लिए 587 विद्यार्थियों ने दी प्रवेश परीक्षा

हरियाणा वाटिका/एकजोत

कुरुक्षेत्र, 24 जून। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में शैक्षणिक सत्र 2025-26 की प्रवेश परीक्षा के दूसरे दिन 587 परीक्षार्थी विभिन्न प्रोग्राम्स की परीक्षा देने पहुंचे जिसमें एम.एस.सी सूक्ष्म जीव विज्ञान में 89, एम.एस.सी. भूगोल में 193 व एम.एस.सी. रसायन विज्ञान में 305 विद्यार्थियों ने शांतिपूर्ण ढंग से परीक्षा दी जिसके लिए विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों में परीक्षा केन्द्र बनाए गए। बुधवार को यूजी/पीजी कोर्सिज की श्रृंखला में तीन पीजी प्रोग्राम्स एम.एम.सी. फोरेंसिक विज्ञान, एम.एस.सी. गणित व एम.एस.सी. प्राणी विज्ञान व एम.एस.सी. भौतिकी की परीक्षा होगी जिसमें 1035 विद्यार्थियों ने प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन किया है। इस बारे जानकारी देते हुए परीक्षा नियंत्रक डॉ. अंकेश्वर प्रकाश ने बताया कि कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा के दिशा-निदेशार्नुसार कुवि के विभिन्न विभागों के पाठ्यक्रमों के लिए सत्र 2025-26 के लिए 11203 विद्यार्थियों ने आवेदन किया है जिसमें 23 जून से 8 जुलाई तक इन पाठ्यक्रमों के लिए प्रवेश परीक्षाएं आयोजित की जाएंगी। मंगलवार को एम.एस.सी. माइक्रोबायोलॉजी में 89 परीक्षार्थी सुबह 10 बजे परीक्षा देने पहुंचे जबकि दोपहर सत्र में 12.30 बजे एम.एस.सी. भूगोल की परीक्षा सम्पन्न हुई जिसमें 193 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी। इन दोनों परीक्षाओं के लिए कुवि कैम्पस में 2 परीक्षा केन्द्र बनाए गए जिसमें केन्द्र अधीक्षक व ऑब्जर्वर को नियुक्त किया गया ताकि यह सभी परीक्षाएं शांतिपूर्ण व नकल रहित सम्पन्न हो सकें। यह परीक्षाएं भेषज्य विज्ञान संस्थान व विधि संस्थान में सम्पन्न हुईं।

डीएलएसए ने कीर्ति नगर में चलाया नशे के खिलाफ जागरूकता अभियान

हरियाणा वाटिका/एकजोत

कुरुक्षेत्र, 24 जून। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं सीजेएम नीतिका भारद्वाज ने कहा कि जिला एवं सत्र न्यायधीश दिनेश कुमार मित्तल के मार्गदर्शन में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा जिला ड्रग कंट्रोल अथॉरिटी के के सहयोग से नशे के खिलाफ जागरूकता कैंप लगाए जा रहे है। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं सीजेएम नीतिका भारद्वाज ने कहा कि कीर्ति नगर में यह कैंपेन चलाया गया और और लोगों को नशा ना करने के लिए जागरूक किया गया। सीजेएम ने कहा कि इस शिविर के दौरान उन्हें नशीली दवाइयों के दुरुपयोग के बारे में जागरूक किया गया। उन्हें नालसा (डीएडब्लयुएन- ड्रग अवेयरनेस एंड वैलनेस नेविगेशन- फॉर ए ड्रग फ्री इंडिया) योजना 2025 के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।

लोहारू के उप नागरिक अस्पताल में जल्द शुरू होगी एफआरयू व ओटी की सुविधा, क्षेत्रवासियों को मिलेगा लाभ

-विभाग की टीम द्वारा किया जा चुका है निरीक्षण, जुलाई के प्रथम पखवाड़े में शुरू होने की उम्मीद

अमित वालिया, लोहारू

जल्द ही लोहारू के उप नागरिक अस्पताल के दिन फिरने वाले है तथा यहां सुविधाओं का विस्तार होने वाला है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा लोहारू के उप नागरिक अस्पताल में जल्द ही एफआरयू शुरू की जाएगी जिसके तहत ऑपरेशन थियेटर की सुविधा शुरू की जाएगी। ऑपरेशन थियेटर शुरू होने के बाद गर्भवती महिलाओं को आपात स्थिति में सिजेरियन के लिए भिवानी जिला मुख्यालय का रुख नहीं करना पड़ेगा वहीं आपात स्थिति में ब्लड उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए एफआरयू भी पुनः शुरू की जाएगी। ध्यान रहे कि इस योजना के तहत स्वास्थ्य विभाग द्वारा लोहारू उप नागरिक अस्पताल में स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार व ओटी तथा एफआरयू शुरू करने के लिए उच्चाधिकारियों के निदेर्शानुसार जिला स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों की टीम द्वारा अस्पताल का निरीक्षण कर यहां स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार के लिए ऑपरेशन थियेटर शुरू करने की संभावनाओं का जायजा भी लिया जा चुका है। स्वास्थ्य विभाग की टीम में उप सिविल सर्जन डा. दीपक, महिला रोग विशेषज्ञ डा. सुनीता, डा. नवीन

घोष व बीएमई सुशील कुमार शामिल थे। उक्त अधिकारियों ने निरीक्षण के दौरान सीएचसी में ऑपरेशन थियेटर शुरू करने बारे आवश्यक मशीनरी, उपकरण व स्टाफ की नियुक्ति पश्चात ओटी चालू करने बारे अपनी सहमति विभाग को अपनी रिपोर्ट के माध्यम से सौंप दी है। विभाग द्वारा भी टीम की रिपोर्ट के आधार पर सीएचसी में ओटी शुरू करने के लिए आवश्यक स्टाफ व उपकरणों की मांग सूची उच्चाधिकारियों को भेज दी जिसके बाद स्वास्थ्य विभाग द्वारा लोहारू में ओटी व एफआरयू यूनिट शुरू करने के लिए गायनोक्लोजिस्ट, बाल रोग विशेषज्ञ व एनेस्थेटिक के चिकित्सकों को विभाग द्वारा हायर करने की योजना को भी मंजूरी मिल चुकी है जो विभाग द्वारा ऑन कॉल उपलब्ध रहेंगे।

यह होगा फायदाः-

लोहारू में एफआरयू व आपरेशन थियेटर शुरू होने के बाद मरीजों को ऑपरेशन के लिए जिला मुख्यालय, हिसार, जयपुर व रोहतक नहीं जाना होगा तथा संबंधित चिकित्सक के उपलब्ध होने पर यहीं स्वास्थ्य केंद्र में ऑपरेशन की सुविधा मिल सकेगी। फिलहाल प्रथम चरण में एफआरयू यूनिट के रूप में ऑपरेशन थियेटर की सुविधा शुरू होने से सबसे अधिक लाभ गर्भवती महिलाओं को मिलेगा तथा सिजेरियन के लिए उन्हें भिवानी, हिसार, रोहतक, पिलानी या चिड़ावा नहीं जाना होगा। इसके अलावा एक फायदा यह भी होगा कि आपात स्थिति में एफआरयू व ब्लड स्टोरेज यूनिट के माध्यम से तुरंत रक्त की उपलब्धता व अन्य आपात उपचार की सुविधा तुरंत मिल सकेगी।

देखा जाए तो लोहारू सीएचसी पर उपमंडल के करीब पांच दर्जन से अधिक गांवों की लाखों की आबादी को स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया करवाने का भार है तथा यदि यहां विभाग द्वारा ऑपरेशन की सुविधा व पर्याप्त स्टाफ की नियुक्ति की जाती है तो यहां के लोगों को उपचार के लिए निजी अस्पतालों पर आश्रित नहीं रहना पड़ेगा तथा उन्हें घर के नजदीक ही बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिल सकेगी।

इस बारें में सिविल सर्जन डा. रघुवीर शांडिल्य ने बताया कि लोहारू के उप नागरिक अस्पताल में विभाग द्वारा ओटी व एफआरयू शुरू करने की योजना पर तेजी से कार्य किया जा रहा है तथा इसके लिए आवश्यक उपकरणों व संसाधनों के अलावा चिकित्सकों की तैनाती की व्यवस्थाएं पूर्ण की जा रही है। जुलाई माह में लोहारू में ऑपरेशन थियेटर व एफआरयू की सुविधा शुरू कर दी जाएगी जिसके बाद गर्भवती महिलाओं को सिजेरियन की सुविधा मिल सकेगी तथा उनके समय व धन की भी बचत होगी।

देश में बोली जाने वाली सभी भाषाओं पर दिल्ली में करवाया जाए सेमिनार : जत्थेदार झींडा

सेमीनार करवाने की मांग को लेकर एचएसजीएमसी ने लिखा अमित शाह को पत्र

हरियाणा वाटिका/एकजोत

कुरुक्षेत्र, 24 जून। देश में बोली जाने वाली सभी भाषाओं का दिल्ली में एक सेमिनार करवाया जाना चाहिए। यह मांग हरियाणा सिख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी के प्रधान जत्थेदार जगदीश सिंह झींडा ने देश के गृहमंत्री अमित शाह से की। यह सेमिनार करवाने के लिए गृहमंत्री को हरियाणा सिख गुरुद्वारा मैनेजमैंट कमेटी ने बकायदा एक पत्र भी लिखा है। डेरा कार सेवा में पत्रकारों से बातचीत करते हुए जत्थेदार झींडा ने कहा कि देश में प्रमुख रूप से हिंदू, मुस्लिम, सिख व इसाई धर्म हैं और इन चारों धर्मों की अपनी-अपनी भाषाएं हैं तथा 22 प्रदेश हैं। हिंदुस्तान में व हर प्रदेश में अपनी-अपनी भाषा पढ़ाई जाती है। उन्होंने कहा कि इस सेमिनार को करवाने का मकसद हर भाषा के

विद्वान अपनी-अपनी भाषाओं का विवरण दें। इसके उपरांत संसद से एक कमेटी गठित की जाए और वह कमेटी इस बारे में फैसला लें। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी भाषा हिंदुस्तान की भाषा न होने के बावजूद सबसे अधिक प्रचलित है। अंग्रेजी हुकूमत ने देश पर 100 साल तक शासन किया। उसके बाद उसने छाप छोड़ते हुए इंग्लिश भाषा को बोलने का दबाव बना दिया। उन्होंने कहा कि हमारा दावा है कि देश में पहले दर्जे पर अंग्रेजी नहीं, पंजाबी भाषा होनी चाहिए। जत्थेदार झींडा ने कहा कि धन-धन श्री गुरु अमरदास जी के मुख से निकली गुरमुखी (पंजाबी) भाषा है। यह बहुत मीठी व सरल भाषा है, ऐसी दुनिया में कोई नहीं है। इसके अलावा पंजाबी भाषा इसलिए भी जरुरी है, क्योंकि धन-धन साहिब श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी महाराज सबसे सर्वोच्च है और इसमें 36 बिरादरी के संत-महापुरुषों की बाणी दर्ज है। दुनिया में ऐसा कोई अन्य ग्रंथ नहीं है, जिसमें 36 बिरादरी के संत महापुरुषों की बाणी दर्ज हो। इसलिए पंजाबी भाषा को देश में पहले नंबर का दर्जा दिया जाए। हिंदुस्तान में किस भाषा को पहला दर्जा दिया जाए, इसी उद्देश्य को लेकर उपरोक्त सेमिनार करवाने की मांग की गई है।

संपादक की कलम से

महायुद्ध की ओर बढ़ती दुनियाँ को शांति का पाठ पढ़ाए भारत

दुनियाँ के देश आपस में लड़कर जब महायुद्ध की और बढ़ रहे हो तब भारत को विश्व शांति के ईमानदार प्रयास करना चाहिए। भारत के प्रयासों से दुनियाँ में शांति स्थापित होती है तो दुनियाँ में भारत का मान-सम्मान बढ़ेगा। दुनियाँ के नागरिकों के दिलों में सनातन संस्कृति के प्रति आकर्षण बढ़ेगा, भारत के विश्व सिरमौर होने के रास्ते खुलेंगें। इस हेतु तैयार होने से पूर्व स्वयं को युद्ध से दूर रखना होगा, शांति का पाठ दुनियाँ को पढ़ाने के लिये भारत को अपनी सीमाओं को सुरक्षित और राष्ट्रीय एकता को मजबूत रखने की आवश्यकता है। दुनियाँ के जो हालात इस दौरान दिखाई पड़ रहे है, वह चौकाने वाले है। हर और हिंसक वातावरण नजर आ रहा है, धर्म, जाति, नस्ल और क्षेत्रीयता की उग्र भावनाओं से तबाही का मंजर आसमानों में आग के गोलो के रूप में दिखाई दे रहा है। मानव निर्मित विकास की ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं को बारूद से उड़ाया जा रहा है। विगत 3 बरसों से अधिक हो गया रूस और युक्रेन युद्ध चल रहा है, इस युद्ध से मची तबाही के जो दृश्य मिडिया के माध्यम से देखने को मिल रहे है। वह बैचेन कर देने वाले है। तीन वर्षों से अधिक समय हो गया विश्व के ताकतवर देश रूस-युक्रेन युद्ध रुकवाने में असफल रहे है। इजराइल-फिलिस्तीन युद्ध के बिच अब ईरान-इजराइल के मध्य खतरनाक मिसाइलो से धमाकों का क्रम जारी है। इन धमाकों से बड़े-बड़े विकसित शहरों को निशाना बनाया जा रहा है। बात परमाणु हथियारों के उपयोग तक पहुंच गयी है। मानव निर्मित विकास और समृद्धि के प्रतिमानों को शासकों की सनक की वजह से नेस्तानाबूत किया जा रहा है। इस बबार्दी के मंजर को रोकना, विश्वशांति और अमन की बात करने का यह उचित समय है। शान्ति मानव जाति के कल्याण एवं मानवता के हित में है। बारूद कभी भी मसलों का हल नहीं कर सकती, उसकी प्रकृति ही हिंसक है। बारूद से विनाश होता है, निर्माण नहीं, दुनियाँ को निर्माण की जरूरत है विनाश की कतई नहीं, जो विनाश में विश्वास रखते है वह मानवता के हितैषी कभी नहीं हो सकतें है। हमारी दुनियाँ शांति पसंद है।

दुनियाँ और युद्धरत राष्ट्र की आम आवाम भी इन लडाईयों से चिंतित है। विवादित मसलों के निराकरण की प्रजातांत्रिक प्रक्रिया बैठक, वार्ता,गोलमेज और बातचीत है। किंतु आवाम की इच्छा के विरुद्ध शासकों की सनक ने युद्ध के माध्यम से दुनियाँ को परेशान, चिंतित और भयभीत कर रखा है। विश्व पटल पर जारी युद्ध इससे पहले विश्व युद्ध या परमाणु युद्ध में तब्दील हो, शांति की मशाल जलाना बेहद अनिवार्य और आवश्यक है, स्वयं को दुनियाँ का नेता बताने वाले देश शांति की मशाल को जलाने में नाकाम हुए है, इन देशों के अपने स्वार्थ है, हथियारों के सौदागर मुल्को से अमन के चिराग जलाने की अपेक्षा नहीं की जा सकती है। ईरान इजरायल युद्ध के दौरान चीन ने अमेरिका पर आग में घी डालने के गंभीर आरोप लगाए है। चीन का उक्त आरोप कितना सही या गलत है इसके क्या मायने है? किंतु इतना तो कहा ही जा सकता है की अमेरिका न तो रूस-युक्रेन युद्ध में शांति स्थापित कर सका और न ही ईरान-इजरायल युद्ध में शांति स्थापित करने की स्थिति में है। रूस स्वयं युद्ध में उलझा हुआ है। दुनियाँ के दूसरे देश या तो किसी पक्ष के साथ खडे है या दुरी बनाकर चल रहे है। ऐसी स्थिति में भारत की जिम्मेदारी बनती है की वह महायुद्ध या परमाणु युद्ध की और बढ़ती दुनियाँ में शांति स्थापना के प्रयास करें। भारत ने पूर्व में भी विश्वशांति के प्रयासों में अपनी महती भूमिका का निर्वहन किया है। भारत दुनियाँ का सबसे बड़ा प्रजातांत्रिक राष्ट्र है जो विश्व शांति का प्रबल समर्थक राष्ट्र होकर नागरिक स्वतन्त्रता और मानवता का पक्षधर है। भारत की सनातन परम्परा में भी विश्व कल्याण की भावना का समर्थन किया गया है। भारत के मंदिरो में प्रतिदिन होने वाली ईश्वरीय आराधना, पूजा पाठ आरती के दौरान लगने वाले जयकारों में धर्म की जय हो, अधर्म का नाश, प्राणियों में सदभावना हो, विश्व का कल्याण हो, के उच्च आदर्शो एवं मापदंडो का समावेश है। इससे बढ़कर ऋग्वेद का एक मंत्र जो विश्व कल्याण की कामना करता है, इसे शांति पाठ कहा जाता है, शांति पाठ का उक्त मंत्र ' ॐ द्यो शांति अंतिरिक्ष शान्तिः, पृथ्ववीवी शांतिरापः शान्तिरोषधय शान्तिः, वनस्पतयः शान्ति विश्वेदेवाः शान्तिब्रह्म शान्तिः, सर्व शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः, सा मां शांतिरेधि।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। यह मंत्र वायुमंडल, पृथ्वी, जल, औषधियों, वनस्पतियों, सभी देवताओं, ब्रम्ह और सभी प्राणियों में शान्ति की कामना करता है। शान्ति पाठ का उदघोष भारत में प्रतिदिन पूजा पाठ और पवित्र कार्यो के दौरान होता है। इस महान संस्कृति और विचार से दुनियाँ को परिचित कराने के लिये भारत के नैतृत्व को चाहिए विश्व युद्ध की और बढ़ती दुनियाँ को युद्ध की विभीषिका से बचाए, दुनियाँ को इस बात से अवगत कराएं की युद्ध मानव सभ्यता को विनाश की और बढ़ाता है, जबकि शान्ति निर्माण की और अग्रसर करती है। दुनियाँ के इंसानों को विनाश की नहीं निर्माण की आवश्यकता है। दुनियाँ के सारे धर्म, पंथ, समुदाय शान्ति की भाषा को समझते है। मानवता ही परम धर्म है। भारत द्वारा इस दौरान किये शान्ति प्रयासों की दुनियाँ न सिर्फ सराहना करेंगी अपितु भारत की महत्ता को स्वीकार करेंगी। सनातन संस्कृति में शान्ति के महत्व की स्थापना के महान आशय को समझते हुए इस हेतू प्रयास किये जाने चाहिए। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नैतृत्व में शान्ति के प्रयास हेतू उसी तरह प्रतिनिधीमंडल भेजनें की आवश्यकता है। जैसे पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आंतकी ठिकानों को नेस्तनाबूत करने के बाद दुनियाँ के देशो में गए भारत के सर्वदलीय प्रतिनिधियों ने भारत के पक्ष को रखा, इसी तरह शान्ति के प्रयासों को जब भारत का प्रतिनिधिमंडल विश्वपटल पर रखेगा तब भारत भी दुनियाँ के नागरिकों के दिलों में धड़केगा, मोदी की जय जयकार होंगी, भारत का दुनियाँ के सिरमौर बनने की दिशा में यह एक सार्थक कदम होगा। ऐसे समय जब दुनियाँ के ताकतवर देश अपने हथियारों की नुमाइश में लगे हो, अपने आर्थिक स्वार्थ के खातिर दुनियाँ की बबार्दी की और धकेल रहे हो भारत की भूमिका विश्व पटल पर बढ़ जाती है।

मानवता के कटघरे में युद्धः इजरायल और ईरान के बीच बिखरती दुनिया

मध्य पूर्व की धरती, जहां इतिहास की हर सदी ने खून की नदियां बहते देखी हैं, आज फिर युद्ध की लपटों में सुलग रही है। 13 जून 2025 को इजरायल के "ऑपरेशन राइजिंग लॉयन" ने ईरान के परमाणु ठिकानों पर बमबारी शुरू की, और जवाब में ईरान ने "ऑपरेशन ट्रू प्रॉमिस" के तहत तेल अवीव पर सौ से अधिक बैलिस्टिक मिसाइलें दाग दीं। इस युद्ध ने न केवल क्षेत्रीय शांति को तहस-नहस किया, बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन को भी डगमगाने पर मजबूर कर दिया। इस संकट के बीच, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का बयान गूंज रहा है—यूरोपीय देश इस संघर्ष में कुछ नहीं कर सकते, और अमेरिका ईरान के साथ परमाणु वार्ता के लिए तैयार है। लेकिन ईरान ने साफ शर्त रखी हैः पहले इजरायली हमले रुकें, तभी बात होगी। यह कूटनीतिक जंग, युद्ध के मैदान से भी ज्यादा खतरनाक हो चली है। आंकड़ों और तथ्यों के साथ यह लेख इस युद्ध की गहराइयों, परमाणु वार्ता की उलझनों और वैश्विक प्रभावों को उजागर करता है। इस संघर्ष की जड़ें दशकों पुरानी हैं। इजरायल और ईरान के बीच शीतयुद्ध सा तनाव लंबे समय से चला आ रहा था, लेकिन 2025 ने इसे गर्म युद्ध में बदल दिया। इजरायल का दावा है कि ईरान 15 परमाणु हथियार बनाने के करीब पहुंच चुका था, जिसे रोकना उसकी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अनिवार्य था। इसके जवाब में, ईरान ने इजरायल के प्रमुख शहरों पर मिसाइलें दागीं, जिसमें एक व्यक्ति की मौत और 70 से अधिक लोग घायल हुए। आंकड़े चौंकाने वाले हैंः युद्ध के पहले 10 दिनों में इजरायल के हमलों से ईरान में 650 से अधिक लोग मारे गए, जिनमें 80 बच्चे और महिलाएं शामिल थे। वहीं, ईरान के हमलों से इजरायल में 30 नागरिकों की जान गई। दोनों देशों के बीच ड्रोन और मिसाइल हमले अब रोजमर्रा की बात हो चुके हैं। स्थिति तब और गंभीर हो गई, जब ईरान की एक मिसाइल इजरायल में अमेरिकी दूतावास के पास गिरी, जिसने इस युद्ध को वैश्विक स्तर पर ले जाने की आशंका को और बल दिया। डोनाल्ड ट्रंप, जो जनवरी 2025 में दूसरी बार अमेरिका की सत्ता संभाल चुके हैं, इस संकट में केंद्र बिंदु बने हुए हैं। उनका दावा है कि इजरायली हमलों की जानकारी उन्हें पहले से थी, और उन्होंने ईरान को परमाणु वार्ता के लिए 60 दिन का अल्टीमेटम दिया था। ट्रंप ने 18 जून 2025 को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, ईरान के पास परमाणु बम बनाने की पूरी सामग्री है; बस सुप्रीम लीडर के हस्ताक्षर की देरी है।

उनकी रणनीति दोधारी तलवार सी है। एक ओर, वे इजरायल को सैन्य सहायता और मिसाइल रक्षा प्रणालियों के जरिए समर्थन दे रहे हैं; दूसरी ओर, वे ईरान को कूटनीति की मेज पर लाने का दबाव बना रहे हैं। ट्रंप ने अगले 10 दिनों में यह फैसला लेने की बात कही है कि क्या अमेरिका इस युद्ध में सीधे हस्तक्षेप करेगा। उनका यह बयान कि "यूरोप इस मामले में बेकार है" न केवल यूरोपीय देशों की कूटनीतिक कमजोरी को उजागर करता है, बल्कि अमेरिका की एकतरफा नेतृत्व की महत्वाकांक्षा को भी रेखांकित करता है। ईरान, हालांकि, आसानी से झुकने वाला नहीं है। राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन ने अमेरिका पर इजरायल की आक्रामकता को बढ़ावा देने का आरोप लगाया। ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई ने साफ शब्दों में कहा, "हम आत्मसमर्पण नहीं करेंगे; अगर अमेरिका सैन्य हस्तक्षेप करता है, तो उसे ऐसी कीमत चुकानी पड़ेगी, जो वह कभी नहीं भूल पाएगा।" ईरान ने परमाणु वार्ता के लिए इजरायली हमले रुकने की शर्त रखी है। 20 जून 2025 को ईरान ने यूरोपीय संघ के एक प्रतिनिधिमंडल के साथ प्रारंभिक बातचीत शुरू की, लेकिन विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने दो टूक कहा कि जब तक इजरायल हमले बंद नहीं करता, ईरान अपने सैन्य अभियान को और तेज करेगा। यह गतिरोध दर्शाता है कि परमाणु वार्ता की राह कांटों से भरी है। यूरोप की भूमिका इस संकट में सीमित रही है। ट्रंप के तंज के बावजूद, जी7 देशों ने 15 जून 2025 को कनाडा में हुए शिखर सम्मेलन में इजरायल का समर्थन किया और ईरान पर दबाव डाला। लेकिन यूरोप की कूटनीतिक पहलें नाकाम रही हैं, क्योंकि ईरान ने अमेरिका के साथ सीधी बातचीत को प्राथमिकता दी। दूसरी ओर, रूस और चीन ने ईरान का खुला समर्थन किया है।

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने ट्रंप से फोन पर बात की और इजरायली हमलों की निंदा की। खबरें हैं कि चीन ईरान को ड्रोन और संवेदनशील तकनीक की आपूर्ति कर रहा है, जो इस युद्ध को और जटिल बना सकता है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की आपात बैठकें भी बेनतीजा रही हैं, क्योंकि स्थायी सदस्यों के बीच मतभेद उभरकर सामने आए। इस युद्ध का वैश्विक अर्थव्यवस्था पर असर पड़ना शुरू हो चुका है। तेल की कीमतें पिछले एक सप्ताह में 15% बढ़ चुकी हैं, क्योंकि होर्मुज जलडमरूमध्य में व्यापारिक जहाजों पर खतरा मंडरा रहा है। यदि यह युद्ध लंबा खिंचा या परमाणु स्तर तक पहुंचा, तो वैश्विक मंदी की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता। विशेषज्ञों का मानना है कि ईरान की परमाणु महत्वाकांक्षा और इजरायल की आक्रामक नीति इस क्षेत्र को दशकों पीछे धकेल सकती हैं। ट्रंप की 10-दिवसीय समयसीमा एक जोखिम भरा दांव है, जो या तो कूटनीति की जीत बन सकता है या फिर वैश्विक युद्ध का आगाज। इस संकट ने दुनिया को दोराहे पर ला खड़ा किया है।

एक ओर, कूटनीति की संभावना अभी बाकी है, जहां अमेरिका और ईरान आपसी हितों के आधार पर समझौता कर सकते हैं। दूसरी ओर, सैन्य टकराव का खतरा मंडरा रहा है, जो न केवल मध्य पूर्व, बल्कि पूरी दुनिया को अस्थिर कर सकता है। आंकड़े चीख-चीखकर बता रहे हैं कि अब तक सैकड़ों लोग अपनी जान गंवा चुके हैं, और हजारों बेघर हो चुके हैं। यह युद्ध न तो इजरायल की जीत है, न ईरान की; यह मानवता की हार है।

जैसे ही मध्य पूर्व की रातें मिसाइलों की रोशनी से जगमगाती हैं, विश्व समुदाय सांस थामे इंतजार कर रहा है। क्या यह युद्ध परमाणु त्रासदी का रूप लेगा, या कूटनीति की रोशनी इस अंधेरे को चीरेगी? समय तेजी से बीत रहा है, और दुनिया के पास जवाब देने के लिए ज्यादा वक्त नहीं बचा।

यह युद्ध केवल मध्य पूर्व का नहीं, बल्कि पूरी मानव सभ्यता का भविष्य तय करेगा। क्या हम इतिहास से सबक लेंगे, या फिर एक और अध्याय खून से लिखा जाएगा?

कांग्रेस ने आपातकाल के लिए माफी नहीं मांगी

भारतीय लोकतंत्र ने विश्व भर में प्रशंसा एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की है। हालांकि लोकतंत्र की इस समृद्ध यात्रा में आपातकाल जैसा एक कलंकित अध्याय भी जुड़ा है। 25 जून, 1975 की वो रात कौन भूल सकता है जिसे खासतौर पर तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की 'तानाशाही' के रूप में जाना जाता है। ये वही रात थी जब तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के कहने पर देश में आपातकाल की घोषणा की थी। 25 जून 2025 को कांग्रेस पार्टी की शीर्ष नेता और पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा देश पर आपातकाल को थोपे हुए 50 वर्ष पूरे होंगे। इमरजेंसी में कांग्रेस की दुर्भावना का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उसने आज तक इसके लिए माफी नहीं मांगी। बीती 21 जून को पूर्व उपराष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू ने देश की एक प्रतिष्ठित न्यूज एजेंसी को दिए साक्षात्कार में कहा, 'कांग्रेस को आपातकाल के लिए देश के लोगों से माफी मांगनी चाहिए। कांग्रेस को इसे लेकर पछतावा होना चाहिए, लेकिन कांग्रेस ने कभी भी इसके लिए माफी नहीं मांगी। अब जब देश में आपातकाल लागू हुए 50 साल होने जा रहे हैं, तो ऐसे में कांग्रेस पार्टी को सार्वजनिक रूप से इस पर पछतावा होना चाहिए।' 20 नवंबर 2017 को आपातकाल के दौरान जेल काटने वाले पत्रकार कुलदीप नैयर का बीबीसी में प्रकाशित एक लेख आपातकाल को लेकर कांग्रेस के चरित्र का बखूबी चित्रण करता है। नैयर लिखते हैं, "आपातकाल किसी अपराध से कम नहीं था, लेकिन कांग्रेस पार्टी ने इसके लिए कभी माफी नहीं मांगी। खासकर नेहरू-गांधी खानदान से अफसोस का एक शब्द भी नहीं कहा गया। गैर-कांग्रेसी पार्टियों ने इसके विरोध में बयान जारी किया या विरोध प्रदर्शन भी किया, लेकिन कांग्रेस पार्टी आपातकाल पर खामोश ही रही।"

माफी मांगने की बजाय इंदिरा गांधी के पुत्र पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने 23 जुलाई 1985 को आपातकाल पर गर्व करते हुए लोकसभा में कहा था कि आपातकाल में कुछ भी गलत नहीं है। "पूर्व पीएम ने यहां तक कहा था कि अगर इस देश का कोई प्रधानमंत्री इन परिस्थितियों में आपातकाल को जरूरी समझता है और आपातकाल लागू नहीं करता है तो वह इस देश का प्रधानमंत्री बनने के लायक नहीं है। तानाशाही पर गर्व करने का यह कृत्य ही दशार्ता है कि कांग्रेस को परिवार और सत्ता के अलावा कुछ भी प्रिय नहीं है।" पूर्व पीएम राजीव गांधी का वक्तव्य कांग्रेस पार्टी के मूल चरित्र को दशार्ता है।

आपातकाल की अवधि के बाद दो पीढ़ियां बड़ी हो चुकी हैं तो उन्हें इसकी भनक नहीं होगी कि तब देश में कितने खराब हालात रहे। बिना किसी अदालती कार्यवाही के संसद से विपक्षी सदस्यों को हिरासत में ले लिया गया। एक लाख से ज्यादा लोगों को जेल में डाल दिया गया था। एक रिपोर्ट के मुताबिक इमरजेंसी के दौरान 1 करोड़ 10 लाख से ज्यादा लोगों की नसबंदी कर दी गई थी। इंदिरा गांधी ने खुद को ही कानून बना लिया था। इंदिरा गांधी में प्रतिशोध की भावना की सारी सीमाएं टूट गई थीं। आपातकाल के दौरान कांग्रेस ने देश के संवैधानिक संस्थाओं और मयार्दाओं के साथ जो खिलवाड़ किया है, उसका खामियाजा आज तक देश भुगत रहा है।

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पूर्व विदेश मंत्री सलमान खुर्शीद ने जुलाई 2015 में कहा कि, हमें क्यों माफी मांगनी चाहिए? हम क्यों आपातकाल पर चर्चा करें? मार्च 2021 को राहुल गांधी ने अमेरिका के कॉर्नेल विश्वविद्यालय में आपातकाल पर पूछे गए सवाल के जवाब में कहा, ह्मुझे लगता है कि वह एक गलती थी बिलकुल, वह एक गलती थी। और मेरी दादी (इंदिरा गांधी) ने भी ऐसा कहा था। मई 2004 में ए इंडियन एक्सप्रेस के तत्कालीन प्रधान संपादक शेखर गुप्ता के साथ बातचीत में सोनिया गांधी ने कहा था कि उनकी सास ने बाद में महसूस किया था कि यह एक गलती थी। सोनिया गांधी ने तब कहा था, "ठीक है, मेरी सास ने खुद चुनाव हारने के बाद (1977 में) कहा था कि उन्होंने उस (आपातकाल) पर पुनर्विचार किया था। और यह तथ्य कि उन्होंने चुनाव की घोषणा की, इसका मतलब है कि उन्होंने आपातकाल पर पुनर्विचार किया था।" बीते साल 25 जून को लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने आपातकाल की निंदा करते हुए एक प्रस्ताव पढ़ा, जिसमें आपातकाल को 'प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा संविधान पर हमला' बताया गया। कांग्रेस सांसदों ने प्रस्ताव विरोध में कहा कि पांच दशक पुराने इस काले दौर का स्मरण नहीं किया जाना चाहिए। ऐसे में अहम सवाल यह है कि क्या कांग्रेस आपातकाल को सही मानती है या फिर यह चाहती है कि लोकतंत्र को कलंकित करने और संविधान का निरादर करने वाले इस तानाशाही भरे कदम का स्मरण नहीं किया जाना चाहिए? निर्लज्जता की पराकाष्ठा देखिए जिस कांग्रेस पार्टी के नेता ने केवल अपनी सत्ता कायम रखने के लिए आपातकाल लगाया, इन दिनों उसी पार्टी के नेता संविधान रक्षक होने का दावा करते घूमते हैं। 2024 के आम चुनाव से इंदिरा गांधी के पोते राहुल गांधी लगातार संविधान की एक किताब को सार्वजनिक रूप से लहराकर यह दावा करते रहते हैं कि कांग्रेस पार्टी ही संविधान एवं लोकतांत्रिक मूल्यों की वास्तविक संरक्षक है, जबकि सच्चाई यही है कि कांग्रेस ने आपातकाल के दौरान संविधान के आत्मा को क्षति पहुंचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

दिसंबर 2024 को लोकसभा में संविधान पर विशेष बहस के दौरान प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा, "उन्होंने (राजनाथ सिंह) 1975 (आपातकाल) के बारे में बात की तो सीख लीजिए न आप भी... आप भी अपनी गलतियों के लिए माफी मांगिए... आप भी बैलेट पर चुनाव कर लीजिए... दूध का दूध, पानी का पानी हो जाएगा।" यानी अपनी गलती के लिए माफी मांगने की बजाय सामने वाले को नसीहत देना कांग्रेस की पुरानी फितरत है। प्रियंका ने भी वही किया जो उनकी पार्टी के नेता करते आए हैं। नैयर लिखते हैं कि, "युद्ध के बाद के जर्मनी ने हिटलर के अत्याचारों के लिए माफी मांगी थी। यहां तक कि जर्मनी ने इसके लिए हजार्नो भी भरा था। ऐसे अत्याचारों के लिए कोई माफी नहीं दी जा सकती, लेकिन लोगों को सामान्य तौर पर लगता है कि बच्चों को एहसास होगा कि उनके पूर्वजों ने गलती सुधारने की कोशिश की थी। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह अमृतसर स्वर्ण मंदिर गए थे और उन्होंने ब्लू स्टार ऑपरेशन के लिए माफी मांगी थी।"

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 25 जून 2024 को कांग्रेस पर निशाना साधते हुए जो शब्द कहे थे, उससे कांग्रेस के मूल स्वरूप और चरित्र को जानना और समझना सरल हो जाता है। योगी जी ने कहा था कि, उस समय कांग्रेस का एक बर्बर चेहरा हम सभी को देखने को मिला था। कैसे कांग्रेस ने उस समय देश के नागरिकों के मौलिक अधिकारों को पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया था। कैसे न्यायालय के अधिकारों को कांग्रेस ने उस समय बंधक बनाकर रख दिया था और आज भी कांग्रेस पार्टी में भले ही नेतृत्व बदला हो, चेहरा बदला हो, लेकिन उसका चरित्र वही है। आपातकाल के 45 साल बाद विदेशी धरती पर राहुल गांधी ने स्वीकार किया कि इमरजेंसी का निर्णय गलत था। लेकिन देशवासियों से उन्होंने या कांग्रेस के किसी नेता ने आपातकाल के लिए माफी नहीं मांगी। कांग्रेस नेता गाहे–बगाहे आपातकाल पर गुमराह करने और बेशर्मी से इस अमानवीय फैसले को सही साबित करते रहते हैं। लेकिन वे अपनी पार्टी के नेता द्वारा लिए गए एक घोर अलोकतांत्रिक और संविधान का गला घोंटने वाले निर्णय, अमानुषिक और तानाशाही रवैये के लिए माफी मांगने का नैतिक और राजनीतिक साहस जुटा नहीं पाते हैं।

स्पंज वाला रसगुल्ला है लेखक

साहित्य में लेखक बहुत ही महत्वपूर्ण कारक है। जैसे समोसे में आलू की भूमिका होती वैसे ही साहित्य में लेखक की भूमिका होती है। आलू को तो समोसे में सम्मानजनक दृष्टि से देखा जाता है लेकिन साहित्य में लेखन हेतु इतना सम्मानजनक प्रावधान नहीं है। वह लेखक ही है जिसने बड़े से बड़ा साहित्य रच डाला। और सबके लिए कविता, कहानी, व्यंग की पुस्तक रच रहा है। वह बेचारा दिन रात अपनी आंखें किताब पढ़कर फोड़ता लिखता है। अपने चश्मो का नंबर बढ़ाता है। तब जाकर आप सभी को कविता, कहानी, व्यंग्य , मोटे ग्रन्थ पढने के लिए मिलते हैं। जब सारी दुनिया रील देखने के लिए मोबाइल में व्यस्त रहती है । वह तब भी पढ़ लिख कर शोध रने में व्यस्त गधा मजूरी करता है। और लोग हैं कि उसका महत्व ही नहीं समझते हैं। लोगों को तो छोड़िए उसके परिवार वाले भी उसे नकारा और निकम्मा समझते हैं। बात सही भी है गले में भले ही हजार फूलों की माला हो लेकिन जेब में ढेला ना रहने का दर्द रहता है । और यही लेखक के लेखन का प्रतिफल होता है। एक तरफ सारे लोग हैं जो लेखक को खाली, खलीहर, निकम्मा और नाकारा समझते हैं। लोगों का मानना है कि जो कुछ नहीं करते हैं वह ज्ञान बांटने का काम करते हैं। और यह काम भी ऐसा है कि लिख लिख कर चमड़ी भले घिस जाए लेकिन दमड़ी का कुछ अता पता नहीं होता है। और दूसरी तरफ प्रकाशक हैं । जो उसे अपना भगवान समझते हैं। धरती का इकलौता प्राणी प्रकाशक ही है जो असल रूप से लेखक को इज्जत देता है। और उसे मालदार और मोटे गांठ का आसामी, ग्राहक समझता है । वह उससे अपने प्रकाशन के संकलन में लिखवाने के लिए मुफ्त में रचनाएं भी लेता है। और किताब खरीदने की आशा भी रखता है । अब आखिरकार लेखक को वह मालदार और मोटा आसामी समझता है। तो इतनी आशा तो वह रख सकता है। भले ही पूरी दुनिया लेखक को नीम की चटनी समझती रहे । एक प्रकाशक ही लेखक को स्पंज वाला रसगुल्ला समझता है । और उसकी हमेशा यह उम्मीद रहती है कि लेखक मुफ्त में रचना देकर किताब तो खरीदे ही साथ में उसका प्रमोशन भी सभी जगह करता रहेगा । एक प्रकाशक ही है जो लेखक को विशेष फील करवाते हैं । बाकी दुनिया तो लेखकों को पागल, नकारा, निकम्मा ही समझती है। लेखक भले ही अपने आप को तोप और तुररम खां समझता रहे। लेकिन वह दुनिया को समझाने में असफल रहता है। दुनिया भर को ज्ञान की बातें पढ़ा देता है। लेकिन वह भी कुछ महत्व रखता है यह बात वह कभी नहीं समझा पता है। लेखक नीम का निबोरी होता है भले ही दुनिया को कितना ही फायदा पहुंचाए लेकिन वह खुद को कुछ भी फायदा नहीं पहुंचा पाता है। ऐसे ही एक लेखक है हैप्पी जी उन्होंने एक काव्य संकलन प्रकाशित करवाया । जिसमें उन्होंने अपना ज्ञान, प्रेम अपने अंदर की कलात्मकता सब कुछ उड़ेल कर रख दिया। भारी रकम और अपना बहुमूल्य समय खर्च करके उन्होंने अपनी पुस्तक निकलवाये। प्रकाशक ने उन्हें प्रकाशित करके उनके हाथ में थमा दिया । हैप्पी जी ने सोचा की पुस्तक आने पर वह मालामाल हो जाएंगे।रायल्टी मिलेगी दुनिया भर में उनका नाम मशहूर हो जाएगा। उनके सारे सपने जो आधे अधूरे थे उनके पूरे होने के सपने देखने लगे । लेकिन वह भूल गये कि वह तो प्रकाशक का स्पंज वाला रसगुल्ला है। जो सबसे ज्यादा प्रकाशक को अच्छा और मीठा लगता है। और प्रकाशक उस पर अपना सर्वा अधिकार कर समझता है। अब जब अधिकार समझता है तो उसका मन वह लेखक को कैसे इस्तेमाल करेगा।उसका जैसे मन वैसे इस्तेमाल करेगा। लेखक को तो उसने अपने प्रकाशन से प्रकाशित करके उसका जन्म सुधार दिया है अब भला इससे ज्यादा उपकार वह क्या करेगा। इसलिए प्रकाशक का जब मन करेगा उसका रस निचोड़ता रहेगा । अभी पुस्तक के लिए मोटी रकम दी थी ।और अब प्रकाशक महोदय के प्रकाशन की अन्य पुस्तक खरीदने का भी भारी दबाव है। और बात इतनी पर ही खत्म हो जाती तब भी हैप्पी जी बर्दाश्त कर जाते । अब हैप्पी जी के ऊपर यह दबाव है कि प्रकाशक के प्रकाशन की अन्य पुस्तक भी लेखक को खरीदनी है । इतना भारी दबाव जिसको हैप्पी जी की कमजोर काया झेलने में असमर्थ ह ।

एचएमएसआई ने बेंगलुरु में अपना पहला ईवी कॉन्सेप्ट स्टोर किया उद्घाटित

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

करनाल, 24 जून। इलेक्ट्रिक मोबिलिटी की दिशा में एक अहम कदम उठाते हुए, होंडा मोटरसाइकल एंड स्कूटर इंडिया ने आज भारत में अपना पहला ईवी कॉन्सेप्ट स्टोर बेंगलुरु के मल्लेश्वरम स्थित मंत्री स्क्वायर मॉल में उद्घाटित किया। यह अनोखा स्टोर ग्राहकों को होंडा की मोबिलिटी, तकनीक और नवाचार की दुनिया का अनुभव देने के लिए डिजाइन किया गया है। इसी मौके पर HMSI ने ACTIVA e के लिए नया इंर छूश्री प्लान भी पेश किया, जिसमें ग्राहक सिर्फ 678 प्रति माह देकर ईवी की सुविधा का लाभ उठा सकते हैं।

भविष्य की झलक: होंडा का ईवी कॉन्सेप्ट स्टोर

यह नया स्टोर होंडा की तकनीकी प्रगति और इलेक्ट्रिक मोबिलिटी की दिशा में कदमों की झलक देता है। स्टोर का मुख्य आकर्षण एक बड़ा एलईडी डिस्प्ले है, जो इंटरैक्टिव कंटेंट, ब्रांड स्टोरीटेलिंग और प्रोडक्ट हाइलाइट्स के माध्यम से आगंतुकों को आकर्षित करता है। इसके साथ ही एक इतिहास दीवार भी मौजूद है, जो होंडा की वर्षों की यात्रा और उपलब्धियों को दशार्ती है।

प्रोडक्ट डिस्प्ले जोन में ACTIVA e: और QC1 जैसे होंडा के नवीनतम इलेक्ट्रिक वाहन प्रदर्शित हैं। आगंतुक इन मॉडलों को नजदीक से देख सकते हैं, उनकी विशेषताएं समझ सकते हैं और इनके तकनीकी पक्ष को जान सकते हैं। किड्स इंटरैक्शन जोन बच्चों और परिवारों के लिए आकर्षक अनुभव प्रदान करता है, जो होंडा के समावेशी ब्रांड दृष्टिकोण को दशार्ता है।

सेफ टेक जोन में ACTIVA e: और QC1 के प्रमुख तकनीकी घटकों जैसे PMS मोटर, हब मोटर, चार्जर, बैटरी और मोबाइल पावर पैक (MPP) का डेमो दिया गया है। यहां होंडा की बैटरी स्वैपिंग तकनीक भी प्रदर्शित है, जिसे Honda Power Pack Exchanger e: के माध्यम से दिखाया गया है। लाइव डेमो के जरिए इस तकनीक की सुविधा और प्रभावशीलता को दशार्या गया है।

पार्कों की हालात में सुधार लाएं निकाय अधिकारी : डीसी प्रीति

हरियाणा वाटिका/विकास कुमार

कैथल, 24 जून। डीसी प्रीति ने निकाय विभाग के अधिकारियों को पार्कों में साफ-सफाई व अन्य रखरखाव संबंधी व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि संज्ञान में आया है कि शहर के कई पार्कों में रखे गए बैंच, हाई मास्क लाइटों, साफ-सफाई व ओपन जिम में रखे उपकरणों की हालत में सुधार की आवश्यकता है। निकाय अधिकारी जल्द से जल्द शहर के सभी पार्कों का निरीक्षण करें और पार्कों की व्यवस्था बनाए रखना सुनिश्चित करें। इस कार्य में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

डीसी प्रीति ने कहा कि नागरिकों के लिए स्वच्छ एवं सुंदर वातावरण प्रदान करने के उद्देश्य से पार्कों का निर्माण किया जाता है। सभी पार्कों में लोगों के बैठने, पेयजल, शौचालय तथा लाइट की व्यवस्था होनी जरूरी है। पार्कों में नियमित रखरखाव सुनिश्चित करें। समय पर सफाई की जाए। सभी पार्कों में कूड़ेदान की व्यवस्था और पौधों की देखभाल की जाए। डीसी प्रीति ने नगर परिषद के अधिकारियों को निर्देश दिए कि हाईमास्ट लाइटों को चैक करने के लिए शाम के समय पार्कों का निरीक्षण किया जाए। यदि कोई लाइट खराब मिलती है तो उसे जल्द से जल्द ठीक करवाया जाए, ताकि शहर के नागरिकों को बेहतर सुविधाएं मिल सकें।

वर्ष 2025-26 में तोशाम उपमंडल निरंतर बेटी बचाओ बेटी पढाओ योजना के अंतर्गत लिंगानुपात के सुधार में प्रयासरत : डॉ. अशवीर नैन

हरियाणा वाटिका/दीपक माहेश्वरी

तोशाम, 24 जून। एसडीएम डॉ. अशवीर सिंह नैन ने कहा कि महिला एवं बाल विकास विभाग वर्ष 2025-26 में बेटी बचाओ बेटी पढाओ योजना के अंतर्गत लिंगानुपात के सुधार के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण के लिए भी महिलाओं में जागरूकता फैला रहा है। उपमंडल में बेटी बचाओ, बेटी पढाओ अभियान के जरिये लोगों को बेहतर तरीके से प्रेरित किया जा रहा है।

एसडीएम डॉ. अशवीर सिंह नैन ने यह जानकारी देते हुए बताया कि महिला एवं बाल विकास विभाग सरकार द्वारा जारी हिदायतों के अनुसार अमृत काल में तिथीबद्ध कार्यक्रमों का क्रियान्वयन किया जा रहा है। जिसके बेहतर क्रियान्वयन के लिए डीसी महावीर कौशिक के कुशल मार्गदर्शन में बेटी बचाओ-बेटी पढाओ योजना के अंतर्गत उपमंडल के आंगनवाडी केन्द्रों पर प्रस्तावित गतिविधियों का बेहतर तरीके से आयोजन किया जा रहा है। बेटी बचाओ, बेटी पढाओ अभियान के तहत गतिविधियों में उद्घाटन समारोह, नियोजित गतिविधियों के साथ प्रेस विज्ञप्ति, हस्ताक्षर/प्रतिज्ञा समारोह, बीबीबीपी शपथ ग्रहण समारोह योजना आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। वहीं पोषण ट्रैकर अभियान में सीएसआर पर विशेष ग्राम सभा/महिला सभा, बाल संरक्षण और लड़कियों में कौशल विकास का महत्व, प्रत्येक आने वाले घर/सार्वजनिक भवन/पंचायत कार्यालय आदि पर संदेश के साथ बीबीबीपी स्टिकर चिपकाने और स्कूलों में एनवाईकेएस स्वयंसेवकों से जुड़ी खेल गतिविधि आयोजित करवाई जाएंगी।

नगर निगम की तहबाजारी टीम ने रेड स्क्वेयर मार्केट से हटाया अतिक्रमण

हरियाणा वाटिका/सुरेंद्र सोढी

हिसार, 24 जून। मेयर प्रवीण पोपली व निगमायुक्त के आदेशानुसार और अतिरिक्त आयुक्त शालिनी चेतल के दिशा-निर्देश पर नगर निगम की तहबाजारी टीम ने रेड स्क्वेयर मार्केट से हटाया अतिक्रमण। तहबाजारी टीम के इंचार्ज सुरेन्द्र शर्मा ने बताया कि बीती रात को अतिरिक्त आयुक्त शालिनी चेतल ने रेड स्क्वेयर मार्केट का निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान पाया कि रेड स्क्वेयर मार्केट में खोखे व काउंटर रखकर अवैध अतिक्रमण किया हुआ है। जिनकी आड में नशा किया जाता है। जिसको लेकर उन्होंने अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिए। सुरेन्द्र शर्मा ने बताया कि मंगलवार को रेड स्क्वेयर मार्केट वह अतिक्रमण हटाया गया है जो स्थाई अतिक्रमण किया हुआ था। इसके साथ ही गणेश मार्केट से भी अतिक्रमण हटाया गया। इस दौरान टीम ने लगभग 25 के करीब काउंटर व खोखे हटाकर कब्जे में लिए। उन्होंने बताया कि सिरसा चुंगी पर सडक पर रेहड़ी लगाने की सूचना पर कार्रवाई करने हेतू टीम ने वहां पर पहुंचकर अतिक्रमण हटाया गया। उन्होंने बताया कि इसके अलावा सिरसा चुंगी से लेकर जिन्दल पुल तक रोड अतिक्रमण नहीं था। इस दौरान तहबाजारी टीम के साथ जेई राजकुमार मौजूद रहे।

वन विभाग की बेरूखी से क्षेत्र में पर्यावरण व प्राकृतिक संपदा के साथ साथ हरियाली का अस्तित्व संकट में, लुप्त होती जा रही

-मानसून पर ही याद आती है हरियाली, कंक्रीट के जंगल भी हरियाली पर भारी

अमित वालिया, सतनाली

वन विभाग की बेरूखी के चलते सतनाली व आसपास के क्षेत्र में पर्यावरण व प्राकृतिक संपदा के साथ साथ क्षेत्र की हरियाली का अस्तित्व संकट में नजर आ रहा है। क्षेत्र में मुख्य सडक मार्गो व सार्वजनिक स्थानों पर उचित देखभाल के अभाव में पेड़ सूख रहे है तथा न तो इनकी देखभाल के लिए सामाजिक संस्थाएं आगे आ रही है न ही वन विभाग। आमजन में भी पौधारोपण के प्रति क्षेत्र में कोई रूचि नहीं दिखाई जा रही जिससे पेड़ पौधों की संख्या बढ? की बजाय निरंतर कम ही होती जा रही है। हालांकि वन विभाग द्वारा प्रतिवर्ष वन महोत्सव मनाया जाता है तथा विभाग द्वारा क्षेत्र को हरा भरा हरियाली युक्त करने के लंबे चौड़े दावें किए जाते है परंतु केवल दावों में ही बरसात का सीजन बीत जाता है तथा इसके बाद न तो पौधारोपण की दिशा में कोई प्रयास किए जाते है न ही हरियाली के अस्तित्व को कायम रखने के लिए पहले से लगे पौधों की देखभाल की जाती है। हालांकि वन विभाग द्वारा कस्बा की सडकों व मुख्य स्थानों को हरा-भरा बनाए रखने के बड़े-बड़े दावे जरूर किए जा रहे है परंतु कस्बे में सूखते जा रहे पेड़-पौधों को देखकर ऐसा नहीं लगता है कि प्रशासन अपने दावों पर खरा उतर सकेगा। कस्बे व मुख्य सडक मार्गो पर सडकों के किनारे खड़े सूखे पेड़ हादसे को न्यौता जरूर दे रहे हैं।

कंक्रीट के जंगल भी हरियाली पर भारी:-

सतनाली क्षेत्र में अरावली पर्वत श्रृंखला गांव माधोगढ़ सहित बारड़ा गांव के साथ लगती है तथा ग्रामीण इलाकों के पहाड़ी क्षेत्र से सटे होने के कारण कंक्रीट के जंगल से पेड़-पौधों का अस्तित्व खतरे में पड़ता जा रहा है। वहीं कस्बा ही नहीं बल्कि आस पास के देहाती क्षेत्रों में तेजी से भवन निर्माण के कारण हरियाली की बलि चढ़ाई जा रही है। इस तरह न तो प्रशासन गंभीरता दिखा रहा है और न ही जनता जागरूक नजर आ रही है। पौधरोपण के नाम पर क्षेत्र में न कोई एनजीओ और न ही कोई सामाजिक संस्था पौधारोपण के लिए आगे आ रही है।

ऐसे में यदि कोई युवा मंडल या कोई व्यक्ति किसी विशेष अवसर पर पौधारोपण करता है तो भी वह पौधा देखभाल के अभाव में कितने दिन हरा रहेगा, इसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। यहीं नहीं कस्बा को हरा-भरा बनाने के लिए प्रतिवर्ष लाखों रुपयों का बजट भी कागजों में पूरा किया जा रहा है।

मानसून पर याद आती है हरियाली:-

ध्यान रहे कि मानसून का मौसम आने से पहले विभाग व प्रशासन पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए विभिन्न विभागों को पौधे लगाने का लक्ष्य निर्धारित करता है। साथ ही पौधारोपण के नाम पर अच्छा-खासा बजट भी आवंटित किया जाता है।

इसके बावजूद भी सतनाली क्षेत्र में हरियाली दिखाई नहीं दे रही। वन विभाग द्वारा खानापूर्ति के लिए कहीं कहीं पर मानसून में पौधारोपण तो करा दिया जाता है लेकिन पौधारोपण के बाद व गर्मी के मौसम के दौरान इन पेड़ पौधों में पानी देने व उनकी देखभाल करने की विशेष व्यवस्था नहीं की जाती है जिससे पानी व देखभाल के अभाव में पेड़-पौधे सूख जाते हैं।

लोगों में जागरूकता का अभाव:-

लोगों में पौधारोपण के प्रति जागरूकता का अभाव भी इसका प्रमुख कारण है कि हरियाली क्षेत्र में सीमित रह गई है। कभी कभार यदि वन विभाग द्वारा या समाजसेवी संस्थाओं द्वारा पौधारोपण अभियान चलाया भी जाता है तो उनकी देखरेख नहीं की जाती। पौधे लगाकर ही इतिश्री कर ली जाती है जिस कारण देखरेख के अभाव में अधिकांश पौधे नष्ट हो जाते है।

इस स्थिति के लिए सबसे ज्यादा लोगों में जागरूकता की कमी जिम्मेदार है। अगर कस्बा वासी अपने-अपने क्षेत्र में लगे पेड़-पौधों में पानी दे और उनकी देखरेख करें तो कस्बे में हरियाली भी बढ़ेगी व लोगों को शुद्ध वातावरण भी मिल सकेगा। विकास व भवन निर्माण के चलते भी पेड़ों की बलि दी जा रही है तथा उनके स्थान पर हरे पौधे लगाने तो दूर उनके बारे में सोचा तक भी नहीं जाता। ऐसे में नए पौधे लगाने के प्रति कोई प्रयास नहीं किए जाते जिससे हरियाली पर संकट मंडरा रहा है।

प्रदेश में बिजली की दरों में की गई वृद्धि निदंनीय, आमजन पर पड़ेगा अतिरिक्त भार: मनीष मित्तल

-सरकार से बिजली दरों की वृद्धि वापस लेने की मांग

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

सतनाली, 24 जून। प्रदेश की जनता महंगाई से परेशान हैं और अब बिजली की दरों में बढ़ोतरी करके आमजन की जेब पर डाका डालने का काम किया गया है। सरकार द्वारा हाल ही में प्रदेश में बिजली की दरों में की गई बढ़ोतरी बहुत ही निंदनीय है जिससे आमजन पर अतिरिक्त भार पड़ेगा। समाजसेवी मनीष मित्तल ने प्रेस को जारी बयान में बताया कि सरकार ने बिजली दरें बढ़ाकर आमजन पर

अतिरिक्त बोझ डाल दिया है तथा गर्मी के मौसम में लोगों को भारी भरकम बिजली बिल मिलने लगे है जिसका असर आमजन पर भी पड़ेगा। सरकार ने एक ही झटके में बिजली 4 गुना तक महंगी कर दी है जिस कारण औसतन 900 से 1000 रुपये का बिल अब 4 से 5 हजार तक पहुंच गया है। सरकार को चाहिए कि वह तुरंत बिजली दरों में की गई वृद्धि को वापस लेकर आमजन को राहत देने का कार्य करे। उन्होंने कहा कि सरकार की बिजली दरें बढ़ाने की नीति आमजन पर अतिरिक्त बोझ डाल रही है। मित्तल ने कहा कि बिजली की दरों में बढ़ोतरी होने के कारण रोजमर्रा की चीज महंगी होगी जो गरीब व्यक्तियों के लिए बहुत ही दुखदाई है। उन्होंने सरकार से मांग करते हुए कहा कि आमजन के हित को ध्यान में रखते हुए बिजली की दरों में की गई बढ़ोतरी को वापिस लिया जाए नहीं तो आमजन सडक पर आंदोलन करने पर मजबूर होगा।

गुजरात व पंजाब उपचुनाव में आम आदमी पार्टी की जीत पार्टी की नीतियों पर मुहर : दलबीर किरमारा

हरियाणा वाटिका/सुरेंद्र सोढी

हिसार, 24 जून। आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व जिला अध्यक्ष दलबीर किरमारा ने पंजाब व गुजरात में हुए उपचुनावों में आम आदमी पार्टी की जीत प्रसन्नता जताई है। उन्होंने कहा कि पार्टी उम्मीदवारों की यह जीत राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल व पार्टी की नीतियों पर मुहर है।

दलबीर किरमारा ने कहा कि आम आदमी पार्टी को गुजरात में उपचुनाव जिताकर वहां की जनता ने अलग ही पैगाम दिया है। गुजरात को भारतीय जनता पार्टी अपना गढ़ समझती है और

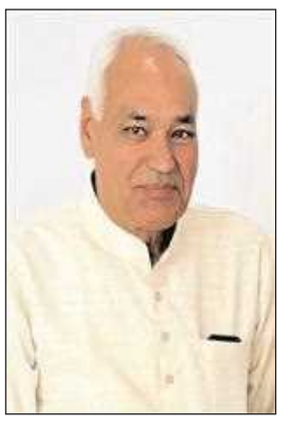

वहां पर आम आदमी पार्टी की जीत ने साबित कर दिया है कि जनता अब भाजपा की नीतियों से उकता चुकी है। जनता अब आम आदमी पार्टी की नीतियों को चाहने लगी है। इसी तरह पंजाब उपचुनाव में जीत ने साबित कर दिया है कि पंजाब की जनता भगवंत मान सरकार की नीतियों से खुश है। जनता ने उपचुनाव में पार्टी को जीत दिलाकर पंजाब सरकार द्वारा अपनाई जा रही नीतियों को अपना समर्थन दिया है और इससे साबित होता है कि पार्टी का जनाधार बढ़ रहा है। दलबीर किरमारा ने हरियाणा सरकार द्वारा बिजली के मूल्यों में की गई बढ़ोतरी की भी निंदा की और इसे तुरंत वापिस लेने की मांग की। उन्होंने कहा कि जब चुनाव का समय आता है तो भाजपा राष्ट्रवाद व जनता को राहत देने की बड़ी बड़ी बातें करती है लेकिन जब चुनाव हो जाते हैं तो भाजपा जनता का जीना हराम कर देती है। हरियाणा में बिजली बिलों में बढ़ोतरी इसका उदाहरण है वहीं दिल्ली में भाजपा सरकार ने झुग्गियां तोडकर गरीब जनता को बेघर कर दिया है, जो निंदनीय है। उन्होंने जनता से अपील की कि वे भाजपा की जनविरोधी नीतियों का मुकाबला करें और आम आदमी पार्टी का मजबूती से साथ दें क्योंकि आम आदमी पार्टी ही हर वर्ग की हितैषी है।

एसटीएफ हरियाणा और दिल्ली स्पेशल सेल का संयुक्त आपरेशन, तीन लाख का इनामी गैंगस्टर रोमिल वोहरा मुठभेड़ में ढेर

शराब कारोबारी शांतनु मर्डर केस के 10 आरोपी गिरफ्तार

हरियाणा वाटिका/एकजोत

कुरुक्षेत्र, 24 जून। एसटीएफ ने एक संयुक्त अभियान के दौरान कुख्यात अपराधी रोमिल वोहरा को मुठभेड़ में ढेर कर दिया है। रोमिल वोहरा पुत्र कपिल वोहरा, निवासी अशोक विहार, यमुनानगर, जिसकी गिरफ्तारी पर 3 लाख का इनाम घोषित था। एसटीएफ के एसपी विक्रांत भूषण व एसपी कुरुक्षेत्र नीतीश अग्रवाल ने मंगलवार को एसपी कार्यालय के सभागार में पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि एसटीएफ को सूचना मिली थी कि अपराधी रोमिल वोहरा गुरुग्राम और फरीदाबाद से दिल्ली व उत्तरी हरियाणा में किसी बड़ी वारदात को अंजाम देने की फिराक में है। इस सूचना पर एसटीएफ सेंट्रल यूनिट के इंचार्ज उप निरीक्षक राकेश कुमार व एसटीएफ करनाल यूनिट की टीम द्वारा तत्परता से कार्रवाई करते हुए जानकारी को काउंटर इंटिलिजेंट स्पेशल सेल दिल्ली के साथ सांझा किया। उन्होंने कहा कि संयुक्त कार्रवाई के तहत स्पेशल सैल दिल्ली के निरीक्षक मंजीत सिंह व उनकी टीम को आपरेशन में शामिल किया गया। दोनों एजेंसियों द्वारा गुरुग्राम-फरीदाबाद से दिल्ली की ओर जाने वाले मार्गों पर

अलसुबह सघन नाकाबंदी की गई। इस दौरान आरोपी को रोकने का प्रयास किया गया, लेकिन उसने पुलिस पार्टी पर फायरिंग कर दी। आत्मरक्षा में पुलिस द्वारा की गई जवाबी कार्रवाई में एसटीएफ हरियाणा के उप निरीक्षक रोहन, स्पेशल सेल दिल्ली के उप निरीक्षक प्रवीन और आरोपी रोमिल वोहरा घायल हो गए। सभी को उपचार हेतु अस्पताल ले जाया गया, जहां रोमिल को मृत घोषित कर दिया गया। दोनों पुलिस अधिकारियों का उपचार जारी है।

हत्या और फायरिंग के मामलों में वांछित

उन्होंने बताया कि रोमिल वोहरा एक कुख्यात अपराधी था, जिस पर खेड़ी लक्खा सिंह ट्रिपल मर्डर और शांतनु मर्डर (शाहाबाद) सहित आठ गंभीर आपराधिक मामले दर्ज थे।

इन मामलों में फायरिंग, अवैध हथियारों की सप्लाई, हत्या की योजना और संगठित आपराधिक गतिविधियाँ शामिल थीं। वह लंबे समय से फरार था और प्राथमिक सूची में शामिल वांछित अपराधियों में से एक था।

शांतनु मर्डर केस में एसटीएफ की बड़ी कार्रवाई, 10 आरोपी काबू

उन्होंने बताया कि 13 जून 2025 को शाहाबाद में हुए शांतनु मर्डर केस की जांच में एसटीएफ को एक और बड़ी सफलता मिली है। उप पुलिस अधीक्षक अमन कुमार के नेतृत्व में एसटीएफ अम्बाला और करनाल यूनिट की टीमों ने इस केस से जुड़े कुल 10 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। ये आरोपी हत्या की साजिश, रैकी, शूटर के रूप में सक्रिय भूमिका और वित्तीय/ लॉजिस्टिक सपोर्ट प्रदान करने में शामिल थे। पाँच आरोपियों को पहले सप्ताह में जबकि शेष पाँच को 23 एवं 24 जून को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार सभी आरोपियों को आज माननीय न्यायालय में पेश कर पुलिस रिमांड पर लिया जाएगा।

प्रेसिडेंट कप अंतरराष्ट्रीय रिगाटा चैंपियनशिप में गांव मिरान के सचिन ने जीते सिल्वर व ब्रॉन्ज मेडल

हरियाणा वाटिका/दीपक माहेश्वरी

तोशाम, 24 जून। अजरबेजान में आयोजित प्रेजिडेंट कप अंतराष्ट्रीय रिगाटा चैंपियनशीप 2025 में मिरान के सचिन ने सिल्वर व ब्रॉन्ज मैडल जीतकर गांव का नाम रोशन किया है। गांव में पहुंचने पर सचिन का भव्य स्वागत किया गया। इस प्रतियोगिता मे कोच पीजूष क्रांति बरोई सहित चार खिलाड़ियों ने भारत की टीम में हिस्सा लिया था।

प्रतियोगिता एक मई को शुरू हुई थी इस प्रतियोगिता में सचिन मिरान ने के-2 की 2 सौ मीटर में सिल्वर, के-2 के एक हजार मीटर में ब्रॉन्ज मॉडल जीता है। सचिन की जीत पर गांव में खुशी मनाई गई। सचिन के गाव में पहुंचने पर फूलमालाओं से स्वागत किया। महाबीर, कृष्ण सिहाग, कुलदीप, संदीप सिहाग, राजेश, बलवान बीडीसी, मास्टर मुकेश, राजेश व विनोद आदि ने बताया कि सचिन की मेहनत का फल है जिसके कारण उसने मैडल प्राप्त किए है। गांव के दूसरे बच्चों को भी सचिन से सीख लेकर कड़ी मेहनत करनी चाहिए। आज का युवा नशे व मोबाइल की लत में पड़ा हुआ है। इसको छोड़कर लक्ष्य प्राप्ति के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए।

दाखिले हेतु 27 जून तक करें ऑनलाइन आवेदन

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

खरखौदा (सोनीपत), 24 जून। राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान खरखौदा में चल रहे विभिन्न व्यवसायों में सत्र 2025-26 में प्रवेश के लिए 27 जून तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। आईटीआई खरखौदा के प्रधानाचार्य संदीप अहलावत ने जानकारी देते हुए बताया कि आईटीआई खरखौदा में विभिन्न व्यवसायों में पर आवेदन कर सकते है।

स्पेशल प्रतिरक्षण सप्ताह के तहत 671 बच्चों को व 104 गर्भवती महिलाओं को लगाए जा चुके हैं टीके : डॉ अशोक कुमार

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

नारनौल, 24 जून। स्वास्थ्य विभाग की ओर से 23 से 28 जून तक चलाए जा रहे स्पेशल प्रतिरक्षण सप्ताह के तहत अब तक जिले में लगभग 671 बच्चों को विभिन्न प्रकार की बीमारियों से बचाव वाले टीके व 104 गर्भवती महिलाओं को टेटनेस के टीके लगाए जा चुके हैं।

सिविल सर्जन डॉ अशोक कुमार ने बताया कि स्वास्थ्य विभाग का पूरा प्रयास है कि जिले में ईट भट्ठा, क्रेशर, स्लम व झुग्गी-झोपड़ियों में कोई भी बच्चा बिना टीकाकरण ना रहे।

उन्होंने आमजन से अनुरोध किया है कि यदि किसी बच्चे का कोई टीका छुटा हुआ है या फिर टीकाकरण नहीं हुआ वो अपने बच्चों को इस सप्ताह टीका जरूर लगवाएं ताकि बच्चों को बीमार होने से बचाया जा सके। उन्होंने बताया कि बच्चों को दस्त होने पर अपने नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र में सम्पर्क कर बच्चे को ओआरएस का गोल व जिंक की गोली अवश्य दें।

माँ दुर्गा की साधना के लिए गुप्त नवरात्रि पूजा अर्चना महत्वपूर्ण : डॉ.मिश्रा

हरियाणा वाटिका/एकजोत

कुरुक्षेत्र, 24 जून। श्री दुर्गा देवी मन्दिर पिपली के पीठाधीश व हार्मनी आकल्ट वास्तु जोन पिपली के अध्यक्ष डॉ.सुरेश मिश्रा ने बताया कि मां दुर्गा को शक्ति का प्रतीक माना जाता है। इनकी आराधना के लिए वर्ष में दो बार विशाल नवरात्रि पर्व मनाया जाता है। जिसमें माँ जगजननी भगवती दुर्गा के अलग-अलग नौ रूपों की उपासना की जाती है। इस नवरात्र को चैत्र नवरात्रि और शारदीय नवरात्रि के नाम से जाना जाता है। लेकिन साल में दो बार नवरात्र ऐसे भी आते हैं, जब मां दुर्गा की दस महाविद्याओं की पूजा की जाती है। इन्हें गुप्त नवरात्र कहा जाता है। आषाढ़ मास की गुप्त नवरात्रि गुरुवार 26 जून से शुरू हो रही है और इसका समापन 4 जुलाई को होगा। यानी इस बार गुप्त नवरात्रि पूरे नौ दिनों तक रहेगी। गुप्त नवरात्रि के लिए घट स्थापना का शुभ मुहूर्त ध्रुव योग और आर्द्रा नक्षत्र में रहेगा। गुरुवार 3 जुलाई के दिन दुर्गा अष्टमी मनाई जाएगी और नवमी तिथि का समापन शुक्रवार 4 जुलाई शाम के समय 4 बजकर 32 मिनट पर होगा। गुप्त नवरात्रि में दस महाविद्याओं की साधना की जाती है। गुप्त नवरात्रि के समय साधक माँ काली, तारा देवी, त्रिपुर सुंदरी, भुवनेश्वरी, माता छिन्नमस्ता, त्रिपुर भैरवी, माँ धूमावती, माँ बगलामुखी, मातंगी और कमला देवी की पूजा करते हैं। गुप्त नवरात्रि विशेषकर तांत्रिक क्रियाएं, शक्ति साधना, महाकाल आदि से जुड़े भक्त जनों के लिए विशेष महत्त्व रखती है। इस समय माँ दुर्गा के साधक कठोर नियम के साथ व्रत और साधना करते हैं। इसीलिए गुप्त नवरात्र में विशेष पूजा किसी सात्त्विक विद्वान ब्राह्मण के मार्गदर्शन में ही करनी चाहिए। ब्राह्मण अर्थात ब्रह्म को जानने वाला और जिसको कीलक, निष्कीलन और शापोद्धार आदि विधान किसी सदगुरु द्वारा प्राप्त हो। माघ नवरात्री उत्तरी भारत में अधिक प्रसिद्ध है और आषाढ़ नवरात्रि मुख्य रूप से दक्षिणी भारत में लोकप्रिय है।

आपातकाल के काले दिवस पर जिला स्तरीय संगोष्ठी आज: रवि शेखावत

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

सतनाली, 24 जून। आपातकाल के काले दिवस का 50वां वर्ष पूर्ण होने पर बुधवार 25 जून को सुबह 10 बजे नारनौल के सुराणा स्थित आरपीएस स्कूल में भाजपा द्वारा जिला स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। यह जानकारी देते हुए सतनाली भाजपा मंडल अध्यक्ष रवि शेखावत ने बताया कि जिला स्तरीय संगोष्ठी में प्रदेश की ओर से लोकतंत्र सेनानी सुनील ग्रोवर तथा मुख्यमंत्री के पूर्व ओएसडी अभिमन्यु यादव मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम में आपातकाल के समय जेल की यातना झेलने वाले जिले के लोकतंत्र सेनानियों को सम्मानित किया जाएगा। इस दौरान जिला अध्यक्ष भाजपा महेंद्रगढ़ यतेंद्र राव तथा कार्यक्रम संयोजक मनीष मित्तल सहित जिलेभर के विधायक, भाजपा पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहेंगे।

रक्तदान महादान सिर्फ एक नारा नहीं बल्कि जीवन बचाने का वास्तविक माध्यम : महात्मा दिव्यानंद

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 24 जून। राजेन्द्र नगर स्थित नंगली वाली कुटिया में सहयोग एक कोशिश संस्था द्वारा पांचवीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में रक्तदान शिविर लगाया गया। शिविर का शुभारंभ आश्रम के प्रवक्ता महात्मा दिव्यानंद, संत यथार्थ पुरी, संत सिद्धार्थ पुरी ने महाआरती करके किया। संस्था के प्रधान साहिल गाबा ने बताया कि शिविर में 200 से अधिक रक्तदाताओं ने रक्तदान किया। उन्होंने कहा कि रक्तदान एक ऐसा पुण्य कार्य है, जिसकी महत्ता तब समझ आती है, जब किसी को आपात स्थिति में खून की आवश्यकता होती है। उन्होंने संस्थाओं के सामूहिक प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि रक्तदान के अलावा रक्त का कोई दूसरा विकल्प नहीं है। इसलिए जीवन में हर व्यक्ति को आगे आकर रक्तदान करना चाहिए ताकि किसी जरूरतमंद के काम आ सके। मंच का संचालन राजीव चावला ने किया। पंडित अंकित शर्मा ने रक्तदान करते हुए कहा कि रक्तदान करने से शरीर में किसी प्रकार की कोई कमजोरी नहीं आती है। इसलिए हमें एक साल में कम से कम दो-तीन बार रक्तदान जरुर करना चाहिए। आश्रम के प्रवक्ता महात्मा दिव्यानंद ने कहा कि रक्तदान महादान सिर्फ एक नारा नहीं, बल्कि जीवन बचाने का वास्तविक माध्यम है। उन्होंने कहा कि सहयोग एक कोशिश संस्था यह प्रयास न केवल जरूरतमंद मरीजों की मदद करेगा बल्कि समाज में सकारात्मक संदेश भी देगा। संस्था के सदस्य चेतन वर्मा ने बताया कि उनकी संस्था सामाजिक कार्यों के लिए हमेशा आगे रहती है। शिक्षा सहयोग, विवाह सेवा, चिकित्सा सहायता जैसी सेवा करती रहती है। इस मौके पर डाक्टर अमित सोबती, गुलशन बजाज, विजय गाबा, कविता कंसल, शिव, दर्पण, गौरव सेठी, हर्ष गाबा, अभिषेक गाबा, दीपक चोपड़ा, राजेन्द्र गाबा, डॉ ऋषि पाल गुप्ता, ड्रग इंस्पेक्टर चेतन वर्मा, ड्रग इंस्पेक्टर गुलशन, गोताखोर परगट सिंह, गौरक्षा दल से निखिल बजाज, प्रिंसिपल राजीव चावला, बीके चावला मौजूद रहे।

श्री जगन्नाथ भगवान व बाबा खाटू श्याम की भव्य शोभा यात्रा 29 जून को अनाज मण्डी मन्दिर से निकलेगी : बजरंग गर्ग

हरियाणा वाटिका/सुरेंद्र सोढी
हिसार, 24 जून। बीड़ बबरान युवा समिति की मीटिंग अग्रोहा धाम वैश्य समाज के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बजरंग गर्ग की अध्यक्षता में हुई। इस मीटिंग में 29 जून को श्री जगन्नाथ भगवान व बाबा खाटू श्याम जी की भव्य शोभा यात्रा की तैयारी पर विचार किया गया।
इस अवसर पर अग्रोहा धाम के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बजरंग गर्ग ने कहा कि 29 जून को श्री जगन्नाथ व बाबा खाटू श्याम जी की भव्य शोभा यात्रा बैंड-बाजे व ढोल-नगाड़े के साथ अनाज मंडी मंदिर से आरम्भ होगी। शोभा यात्रा के साथ निशान, भव्य रथ, अलौकिक श्रृंगार होगा। शोभा यात्रा के लिए जगह-जगह स्वागत गेट बनाए जाएंगे और जगह-जगह धर्मप्रेमियों द्वारा आरती, पुष्प वर्षा, इत्तर वर्षा के साथ स्वागत किया जाएगा। शोभा यात्रा में श्री निशा जी एवं श्री हित संकीर्तन मंडल, इस्कॉन सेंटर, श्री कृष्ण कृपा मंदिर, मोहन तनेजा एंड पार्टी की टीमों द्वारा भव्य भजन व श्री राम नाम का जाप किया जाएगा। शोभा यात्रा में हजारों धर्म प्रेमी भाग लेंगे। बजरंग गर्ग ने कहा कि शोभा यात्रा का विश्राम बुधला संत मंदिर सेक्टर 14 में होगा जिसमें विशाल भंडारा व भजन समारोह होगा। इस अवसर पर प्रमुख समाजसेवी शिव कुमार सिंगल, मनीष बंसल, प्रवीण गर्ग झंडू, कर्ण गर्ग, धर्मेंद्र मलिक, मोहित बंसल अजीतपुरिया, मुकुंद भूतड़ा, आशीष मेहता, यश जैन, भूपेश बंसल, निखिल गर्ग आदि कार्यक्रम के प्रतिनिधि मौजूद थे।

गुजरात व पंजाब के उपचुनाव में 'आप' को मिली ऐतिहासिक जीत : जवाहर लाल गोयल

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 24 जून। आम आदमी पार्टी लीगल सैल के प्रदेश उपाध्यक्ष जवाहर लाल गोयल ने गुजरात व पंजाब के उपचुनाव में पार्टी की प्रचंड जीत को ऐतिहासिक करार दिया और कहा कि मतदाताओं ने भाजपा और दूसरी पार्टियों को नकार दिया है। उन्होंने कहा कि गुजरात के विसावदर और पंजाब की लुधियाना पश्चिम के मतदाताओं ने साफ संकेत दे दिया है कि अब देश की जनता झूठ और अवसरवादी राजनीति से तंग आ चुकी है और आम आदमी पार्टी में अपने हित देख रही है। उन्होंने कहा कि दोनों विधानसभा उपचुनाव सीटों पर आम आदमी पार्टी ने पिछले चुनाव के मुकाबले लगभग दोगुने अंतर से जीत दर्ज की है, जो इस बात का प्रमाण है कि आम आदमी पार्टी की लोकप्रियता बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी ने भाजपा के गढ गुजरात में अपनी ताकत दिखाने का काम किया है। विसावदर सीट उपचुनाव में पार्टी के उम्मीदवार गोपाल इटालिया ने भाजपा के किरिट पटेल को बड़े अंतर से हराया। वहीं, लुधियाना की पश्चिमी सीट पर पार्टी के उम्मीदवार संजीव अरोड़ा ने बड़ी जीत दर्ज करते हुए कांग्रेस, भाजपा और अकाली दल के प्रत्याशियों को करारी शिकस्त दी है। उन्होंने कहा कि देश की जनता भाजपा के झूठे वायदों से उब चुकी है। जनता ने विधानसभा उप चुनाव में भाजपा को पूरी तरह नकार दिया है। उन्होंने कहा कि ये जीत केवल दो सीटों की जीत नहीं, बल्कि सोच और भरोसे की जीत है। यह जीत उन लाखों करोड़ों लोगों की उम्मीद की जीत है, जो देश में सच्चाई, ईमानदारी व मेहनत की राजनीति चाहते हैं। उन्होंने कहा कि आने वाले वक्त में पार्टी देशभर में मजबूत विकल्प के रूप में उभरेगी। उन्होंने कहा कि इस जीत से पार्टी के सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल के प्रति जनता का विश्वास बढा है और इसके साथ साथ उनका कद भी बढा है।

आईआईटी की मांग को लेकर प्रधानमंत्री को भेजा पत्र

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार
सिरसा, 24 जून। पर्यावरण प्रेरणा के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश गोयल की अध्यक्षता में मंगलवार को सिरसा यूनिट की एक बैठक हुई, जिसमें हरियाणा में सरकार की ओर से प्रस्तावित आईआईटी की स्थापना सिरसा जिला में कराने के लिए केंद्र व राज्य सरकार से आग्रह किया गया। संस्था की ओर से मांग की गई है कि शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े हुए जिला में आईआईटी की स्थापना की जाए ताकि यह क्षेत्र भी विकसित हो सके। महासचिव सुमन मित्तल ने बताया कि बैठक में गुरजीत सिंह मान, रामसिंह यादव, सुशील गुप्ता, संदीप खुराना, इंद्रजीत, मुकेश कह्लमार, मयंक गोयल, शेख निजामुदीन, विशाल वत्स, व अशोक गुप्ता मौजूद थे।

हकृवी के विद्यार्थियों का 27 को बंद का ऐलान-बातचीत के तमाम प्रयास फेल

-विधायक अर्जुन चौटाला, आदित्य सुरजेवाला, दिग्विजय, राकेश टिकैत पहुंचे, धारा 163 लागू

हरियाणा वाटिका/सुरेंद्र सोढी
हिसार, 24 जून। चौ. चरण सिंह हरियाणा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी के गेट पर धरनारत विद्यार्थियों ने मंगलवार को महापंचायत बुलाई। इस दौरान सभी कॉलेजों के छात्र संगठन इकट्ठा हुए। इसे लेकर यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों ने हरियाणा-पंजाब के सभी छात्र संगठन नेताओं को बुलाया गया।
धरनारत विद्यार्थियों को समर्थन देने के लिए विभिन्न किसान संगठन, खाप और राजनीतिक दल के प्रतिनिधि भी पहुंचे। सभी ने ऐलान किया कि जब तक विद्यार्थियों की समस्या का हल नहीं हो जाता, तब तक धरना प्रदर्शन जारी रहेगा। अगर विद्यार्थियों पर दबाव बनाने की कोशिश की तो सभी संगठन उनके साथ है। जजपा नेता दिग्विजय चौटाला भी जल्द पहुंचे। प्रशासन द्वारा लागू की गई धारा का असर नहीं दिखा।
वहीं, इनेलो विधायक अध्यक्ष अर्जुन चौटाला और जजपा नेता यूथ प्रदेशाध्यक्ष दिग्विजय चौटाला भी धरने पर पहुंचे। इसके अलावा किसान नेता राकेश टिकैत और रवि आजाद, गुरनाम सिंह चढूनी, विधायक आदित्य सुरजेवाला और

पूर्व मंत्री प्रो. संपत सिंह, किसान नेता युदवीर सिंह सहित अन्य समर्थन देने पहुंचे। इसको लेकर यूनिवर्सिटी विद्यार्थियों व संगठन व दलों की जारी मीटिंग में अंतिम फैसला लिया गया।
हकृवी विद्यार्थियों ने ऐलान किया कि अगर मांगे नहीं मानी तो 27 जून को दिन भर यूनिवर्सिटी को पूरी तरह बंद करने का काम करेंगे। सभी प्रशासनिक कार्य बंद किए जाएंगे। इसके लिए हमें सभी संगठनों का पूरा समर्थन है। इस बार छात्रों के अभिभावक, संगठन प्रतिनिधि भी कमेटी में शामिल किए जाएंगे। वहीं, एचएयू में मंगलवार को 300 से ज्यादा विद्यार्थियों ने परीक्षा दी।

दिग्विजय बोले-वीसी को जाना होगा
जजपा नेता दिग्विजय चौटाला बोले कि जो फैसला पंचायत लेगी, उसका समर्थन करेंगे। उसे निर्णायक अंजाम तक पहुंचाने का काम करेंगे। वीसी को जाना होगा। सरकार को बदलना होगा। सरकार के पास दूसरा रास्ता नहीं बचा।
राकेश टिकैत बोले कि सरकार का इतना बुरा हाल है। पहले किसानों पर और अब विद्यार्थियों पर लाठी चली है। आरएसएस ने देश की संस्थाओं पर कब्जा कर लिया है। यह पूजा-पाठ वाले नहीं है। ये बलि देने वाले खानदानों से हैं। विद्यार्थियो की मांगों का समर्थन करना चाहिए।

सरकार बदल जाती है, यह तो वीसी है।

धारा 163 लागू होने गरमाया माहौल
इसके चलते जिला प्रशासन ने एचएयू और कोर्ट परिसर के आसपास धारा 163 के तहत पांच या इससे लोगों के एकत्रित होने पर रोक लगा दी है। ऐसे में माहौल गरमा गया है। इसको लेकर जिला प्रशासन ने गाइड लाइन जारी की है। छात्रों व अन्य संगठनों ने इसका रोष जताया है। एचएयू, लघु सचिवालय व कोर्ट परिसर के आसपास कानून व शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए जिलाधीश अनीश यादव ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 163 लागू करते हुए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, लघु सचिवालय व कोर्ट परिसर के आसपास 2 किलोमीटर के क्षेत्र में आग्नेयास्त्र, लाठी, तलवार, बरछा, कुल्हाड़ी, जेली, गंडासा, चाकू और अन्य हथियार लेकर चलने व विश्वविद्यालय परिसर के अंदर 5 या अधिक व्यक्तियों के एकत्र होने पर रोक लगाई है। यह आदेश ड्यूटी पर तैनात पुलिस और अन्य लोक सेवकों तथा सिख समुदाय द्वारा धार्मिक प्रतीकों के रूप में इस्तेमाल किए जाने वाले कृपाण आदि पर लागू नहीं होगा। उक्त आदेश का उल्लंघन भारतीय न्याय संहिता, 2023 की धारा 223 के अंतर्गत दंडनीय अपराध होगा।

धरनारत विद्यार्थियो का यह आरोप- कमेटी ने परीक्षा की आड़ में उन पर बनाया दबाव
धरनारत छात्रों का आरोप है कि सरकार द्वारा गठित की गई कमेटी ने उन पर दबाव बनाने का प्रयास किया और परीक्षा की आड़ में दबाव डाला जा रहा है। पांच दौर की वार्ता हो चुकी है, परंतु सिरे नहीं चढ़ पाई। उन्होंने यह भी कहा कि मंत्रियों ने सिर्फ बार-बार धरना हटाने की बात कहीं, न कि ये कहा कि उनके साथ गलत हुआ। यह भी कहा कि नलवा के विधायक रणधीर पनिहार आए थे, उनका किसी ने विरोध नहीं किया। विद्यार्थि प्रदेशभर में जनसंपर्क अभियान चला रहे हैं। इसके लिए किसान संगठन, धार्मिक संगठन और राजनीतिक दलों का सहयोग मांगा है। सभी संगठन और दल मंगलवार को इकट्ठा होने हैं।
लाठीचार्ज पर धरना जारी, वीसी को हटाने की मांग पर अड़े छात्र
एचएयू के विद्यार्थि पर प्रोफेसर एवं सिक्योरिटी गार्ड द्वारा किए गए लाठीचार्ज के विरोध में यूनिवर्सिटी में धरना चल रहा है। विद्यार्थियों ने पेपर तक नहीं दिए। इस मामले में प्रोफेसर व सिक्योरिटी गार्ड को हटा दिया गया। विद्यार्थियों की वीसी को हटाने और हमला करने वालों की गिरफ्तारी की मांग है। वहीं सरकार छात्रवृत्ति देने पर मान गई है और कुछ मागें मान ली। मंत्री और विधायक की कमेटी के बीच कुछ मांगों पर छात्रों की सहमति नहीं बनीं।

नप बैठक में बाहरी लोगों के शामिल होने पर विधायक ने किया बहिष्कार

जब तक बाहरी लोग बैठक में आएंगे, तब तक बहिष्कार जारी रखूंगा : अशोक अरोड़ा

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 24 जून। थानेसर के विधायक एवं पूर्व मंत्री अशोक अरोड़ा ने कहा कि देश संविधान और कानून से चलता है। मगर नगर परिषद थानेसर में संविधान और कानून को ताक पर रख कर उन्हीं बाहरी लोगों को हाऊस की बैठक में बिठाने की इजाजत दी गई, जिन्होंने 23 मई की बैठक में विघ्न डाल कर सरकारी काम में बाधा पहुंचाई थी। अरोड़ा ने कहा कि जब तक सभी कायदे कानूनों को ताक पर रख कर बाहरी लोगों को बैठक में बैठने की इजाजत देना बंद नहीं किया जाता, तब तक वह नगरपरिषद की बैठक का बहिष्कार करेंगे। अरोड़ा अपने निवास पर पत्रकारों से बातचीत कर

रहे थे। इस अवसर पर नगर पार्षद मनु जैन, नरेन्द्र राजू चौहान, राजेन्द्र सैनी, परमवीर सिंह प्रिंस तथा पार्षद प्रतिनिधि शिवम गुप्ता, पूर्व पार्षद गौरव शर्मा गौरी, विवेक भारद्वाज सहित कांग्रेस जन मौजूद थे। अरोड़ा ने कहा कि बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने देश को संविधान दिया और देश संविधान के अनुसार ही चलता है, परन्तु नगरपरिषद थानेसर में जिस प्रकार से संविधान की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं, उसकी जितनी निंदा की जाए, कम है। आज नगरपरिषद की बैठक में पालिका अधिनियम का हवाला देकर अनेक बाहरी लोगों को हाऊस की बैठक में बैठने की इजाजत दी गई, जो कि सरासर संविधान का उल्लंघन है। इन लोगों का बाबा साहेब द्वारा दिए गए संविधान में कोई भी विश्वास नहीं है। इसीलिए उन्होंने फैसला लिया है कि जब तक बाहरी लोगों का नगरपरिषद की बैठक में बैठना बंद नहीं किया जाता, तब तक वे परिषद की किसी भी बैठक में भाग नहीं लेंगे। विधायक अशोक अरोड़ा ने एक सवाल के उत्तर में कहा कि मोनसून की पहली बरसात से ही नगरपरिषद की जल निकासी की पोल खुल गई है। पिछले 10 वर्षों से नालों की सफाई नहीं करवाई गई। जब उन्होंने जिला कष्ट निवारण समिति की बैठक में नालों की सफाई करवाने की आवाज उठाई, तो आनन-फानन में नालों की सफाई का काम शुरू किया गया।

भाजपा की ओर से जनसंघ के संस्थापक डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी की पुण्यतिथि मनाई

हरियाणा वाटिका/नीतीश जोगी
रादौर, 24 जून। भाजपा की ओर से रादौर हल्के के गांव खेडी लक्खा सिंह में भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी की पुण्यतिथि मनाई गई। पूर्व भाजपा मंडल अध्यक्ष हैप्पी खेडी के नेतृत्व में कार्यकताओं ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर नमन किया। इस अवसर पर हैप्पी खेडी ने बताया कि डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म 6 जुलाई 1901 को कलकत्ता में एक सम्पन परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम आशुतोष मुखर्जी था। ये अपने पिता की तरह बहुत कुशाग्र बुद्धि के व्यक्ति थे। वे 33 वर्ष की आयु में कलकत्ता यूनिवर्सिटी के कुलपति बने। 1942 में बंगाल में मुस्लिम लीग की राजनीति से दूषित वातावरण के खिलाफ संघर्ष किया, तो ब्रिटिश सरकार ने इन्हें जेल में डाल दिया। ये देश के विभाजन के कट्टर विरोधी थे। इनका मत था कि हिन्दू, मुस्लिम रक्त गुण से एक हैं। सरदार पटेल के अनुरोध पर वे भारत के प्रथम उद्योग मंत्री बने। परंतु राष्ट्रीय हितों के विषयों पर कांग्रेस से मतभेद पर इन्होंने त्यागपत्र दे दिया और अक्टूबर 1951 को जनसंघ की स्थापना की। जो बाद में 6 अप्रैल 1980 को बीजेपी में परिवर्तित हो गई। डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी जम्मू कश्मीर का भारत मे पूर्ण विलय चाहते थे। वे धारा 370 के कट्टर विरोधी थे। एक देश में अलग झंडा, अलग संविधान को खत्म करना चाहते थे। उन्होंने भारत को एक करने का संकल्प लिए व बिना परमिट लिए जम्मू रवाना हो गए। वहां उन्हें गिरफ्तार कर लिया और जेल में डाल दिया गया। 195& में जेल में ही उनकी रहस्यमयी तरीके से मौत हो गई।

बिजली ट्रांसफार्मर से तार चोरी के मामले में एक आरोपी गिरफ्तार

10 किलोग्राम तांबे की तार व मोटरसाइकिल बरामद

हरियाणा वाटिका/सुरेंद्र सोढी
हिसार, 24 जून। पुलिस अधीक्षक शशांक कुमार सावन के निदेर्शानुसार अपराध और अपराधियों पर प्रभावी अंकुश लगाने हेतु चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत चौकी मंगाली पुलिस टीम ने एक बड़ी सफलता प्राप्त करते हुए बिजली ट्रांसफार्मर से तार चोरी के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है।
चौकी प्रभारी एएसआई राकेश कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि गांव मंगाली निवासी सुभाष ने

दिनांक 29 मई 2025 को पुलिस को शिकायत दी थी कि गांव में लगे बिजली ट्रांसफार्मर की तांबे की तार अज्ञात व्यक्तियों द्वारा चोरी कर ली गई है। शिकायत पर थाना आजाद नगर, हिसार में अभियोग दर्ज कर जांच शुरू की गई।
जांच के दौरान इंद्रा कॉलोनी, सातरोड खुर्द निवासी सुरेंद्र उर्फ गंजा को गिरफ्तार किया गया। आरोपी से पूछताछ में चोरी की गई 10 किलोग्राम तांबे की तार व वारदात में प्रयुक्त मोटरसाइकिल बरामद की गई है।
पूछताछ में आरोपी ने कबूल किया कि वह अपने साथियों के साथ मिलकर बिजली ट्रांसफार्मरों से तार चोरी करता है। अब तक उसने 6 वारदातों को अंजाम देने की बात कबूली है, जिनमें से 4 वारदातें थाना अग्रोहा क्षेत्र की हैं। इन वारदातों के संबंध में थाना अग्रोहा में अलग-अलग अभियोग दर्ज हैं। आरोपी को पूछताछ के बाद अदालत में पेश कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। अभियोग में आगे की जांच जारी है तथा फरार अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी के प्रयास किए जा रहे हैं।

कुम्हारियां में हुई शादी बनी चर्चा का विषय

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार
सिरसा, 24 जून। हमारे समाज में समाज में कुछ जातियां ऐसी भी होती हैं, जैसे भोपा, भाट, नट, इत्यादि जिनका कोई स्थायी ठिकाना नहीं होता। ये लोग एक गांव से दूसरे गांव जाकर जीवन यापन करते हैं। इन्हीं में से एक लीलू राम रोज का परिवार इन दिनों हरियाणा के सिरसा जिले के कुम्हारिया गांव में रह रहा है। यह परिवार भोपा जाति से ताल्लुक रखता है। अपने बेटे अनिल कुमार की शादी का आयोजन इसी गांव में रखा गया। शादी के दौरान एक रस्म होती है, भात की रस्म। यह रस्म खास तौर पर लडकी की मां की तरफ से यानी ननिहाल से निभाई जाती है। परंतु इस परिवार में लीलू राम की पत्नी रोशनी देवी का न तो कोई सगा भाई है, न कोई मामा-नाना, इस कारण वह भावुक और चिंतित थी कि उसकी बेटी की शादी में यह रस्म अधूरी रह जाएगी।

इस बहन ने हार नहीं मानी:
उसने उन गांवों में जहां-जहां वह पहले रह चुकी थी, वहां के कुछ जान-पहचान के लोगों को तिलक निकाल कर भात भरने का न्योता दिया। उसने अपने विश्वास और प्रेम से उन्हें भाई माना और कहा आप मेरे बच्चों के मामा बनकर आइए, और भात की रस्म निभाइए।

तीन अलग-अलग गांवों से आए लोग भात भरने:
तीन अलग-अलग गांवों से आए लोग न केवल इस शादी में शामिल हुए, बल्कि पूरे रीति-रिवाज और सामाजिक मयार्दा के साथ भात भरने की रस्म भी निभाई। लेकिन जो भात सबसे ज्यादा चर्चा में रहा, वो था राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले की भादरा तहसील के खचवाना गांव से आया भात। लालचंद महायच और प्रेम बरोड़ ने इस बहन के लिए जिस तरह से भात भरा, उसने पूरे क्षेत्र में एक मिसाल कायम की। खचवाना से लगभग 20 से ज्यादा पुरुष, महिलाएं और बच्चे इस शादी में शामिल होने पहुंचे। सभी ने पारंपरिक तरीके से भात की रस्म निभाई और बहन के परिवार को पूरा मान-सम्मान दिया।

कालांवाली नगरपालिका चुनाव: पोलिंग पार्टियों को दी गई ट्रेनिंग, 29 जून को होगा मतदान

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार
सिरसा, 24 जून। नगरपालिका कालांवाली के आम चुनाव को शांतिपूर्ण, निष्पक्ष एवं पारदर्शी तरीके से संपन्न करवाने के लिए मंगलवार को सीडीएलयू में पोलिंग पार्टियों को प्रशिक्षण दिया गया।
इस दौरान रिटर्निंग अधिकारी एवं एसडीएम कालांवाली मोहित कुमार, सहायक रिटर्निंग अधिकारी एवं तहसीलदार रानियां शुभम शर्मा व नायब तहसीलदार कर्मपाल सिंह भी मौजूद रहे। इस दौरान मास्टर ट्रेनर प्रेम कुमार ने सभी पीठासीन अधिकारी एवं पोलिंग पार्टियों को उनके प्रत्येक कार्य और जिम्मेदारियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। प्रशिक्षण कार्यक्रम में पोलिंग पार्टियों को ईवीएम व वीवीपैट मशीनों के संचालन के बारे में भी बताया गया व उन्हें मौके पर ही हैंड्स-ऑन ट्रेनिंग भी दी गईं। रिटर्निंग अधिकारी एवं एसडीएम कालांवाली मोहित कुमार ने कहा कि चुनाव के दौरान पीठासीन

अधिकारी एवं पोलिंग पार्टियां व सभी अधिकारी अपनी जिम्मेदारी का गंभीरतापूर्वक निर्वहन करें। उन्होंने कहा कि पीओ हैंडबुक में वे सारी हिदायतें व नियम लिखे हैं जिनकी जानकारी चुनाव करवाने वाले अधिकारी को होनी जरूरी है। उन्होंने कहा कि निष्पक्ष व पारदर्शी चुनाव करवाने में पोलिंग पार्टी की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण होगी। इसलिए वे मतदान से जुड़ी पूरी प्रक्रिया को अच्छी प्रकार से समझें और सभी नियमों की पूरी जानकारी प्राप्त कर लें।
उन्होंने बताया कि 29 जून को कालांवाली नगरपालिका चुनाव की मतदान प्रक्रिया होगी, 30 जून को मतगणना का कार्य होगा। उन्होंने कहा कि यदि कोई समस्या आती है तो उसे अपने स्तर पर हल करें, यदि समाधान नहीं होता तो उच्च अधिकारियों को संपर्क करें।
मास्टर ट्रेनर प्रेम कुमार ने अधिकारियों को मतदान केंद्र की कंट्रोल यूनिट, बैलेट यूनिट वीवीपैट यूनिट की जांच, मॉक पोल, मतदान सामग्री प्राप्त करना, मिलान करना व मतदान सामग्री की जांच करने की विधि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। उन्होंने कर्मियों को सामग्री प्राप्त करने में बरतने वाली सावधानियां, बूथ पर बैठने की व्यवस्था, मतदान की प्रक्रिया, सील करने की प्रक्रिया, सभी तरह के मतदान में प्रयुक्त, पेपर सील करने का तरीका, पीओ के कार्य दायित्व के बारे में बताया। प्रशिक्षण के दौरान चुनाव में अपनाए जाने वाले सभी तकनीकी पहलुओं की जानकारी दी।

सर्वसम्मति से सतीश गोयल दोबारा बने प्रधान

हरियाणा वाटिका/प्रवीण वालिया
करनाल, 24 जून। अर्बन स्टेट सेक्टर-6 वेलफेयर एसोसिएशन की जनरल बॉडी मीटिंग कम्युनिटी सेंटर में आयोजित की गई, जिसमें चुनाव को लेकर चर्चा हुई। सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से पुराने पदाधिकारियों–प्रधान, महासचिव और कैशियर–को पुनः निर्वाचित किया। सतीश कुमार गोयल को दूसरी बार एसोसिएशन का प्रधान चुना गया और उन्हें नई कार्यकारिणी चुनने का अधिकार भी दिया गया। चुनाव के बाद प्रधान सतीश गोयल ने कहा, मैं सभी सदस्यों का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने मुझ पर दोबारा विश्वास जताया। मैं पूरी ईमानदारी, लगन और निष्ठा से कार्य करूंगा।
इस अवसर पर महासचिव ललित और कैशियर राज किशन सैनी ने भी अपने विचार रखे और संगठन को और अधिक सक्रिय व जनहितैषी बनाने का संकल्प लिया।

चंडीगढ़ में पंजाब स्ट्रीट प्रीमियर लीग की शुरूआत के साथ क्रिकेट ने लोगों को प्रेरित किया

हरियाणा वाटिका/प्रवीन कुमार
चंडीगढ़, 24 जून। पंजाब स्ट्रीट प्रीमियर लीग (ढरढछ), एक अनूठी पहल है जो जमीनी स्तर पर टेनिस बॉल क्रिकेट को एक शक्तिशाली नशा विरोधी सामाजिक मिशन के साथ जोड़ती है। यह लीग मंगलवार (24 जून) को चंडीगढ़ में आधिकारिक तौर पर लॉन्च की गई। चंडीगढ़ में पंजाब स्ट्रीट प्रीमियर लीग के भव्य लॉन्च में लीग कमिश्नर श्री योगराज सिंह और पूर्व भारतीय क्रिकेटर और मुख्य चयनकर्ता श्री सुनील जोशी की गरिमामयी उपस्थिति रही।

नपा कर्मचारी संघने मांगों को लेकर कृषि मंत्री श्याम सिंह को नाम ज्ञापन सौंपा

कर्मचारियों की मांग,ठेका प्रथा खत्म कर कर्मचारियों को रोल पर रखा जाए

हरियाणा वाटिका/नीतीश जोगी
रादौर, 24 जून। नगरपालिका कर्मचारी संघ द्वारा अपनी मांगों को लेकर कर्मचारियों ने कृषि मंत्री श्याम सिंह राणा के नाम ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में कर्मचारियों ने सरकार से मांग की कि सरकार सफाई, सीवरेज के कार्यो में ठेका प्रथा खत्म कर कर्मचारियों को रोल पर रखे। विभिन्न विभागों में दैनिक वेतनभोगी ठेका कर्मचारी, एचकेआरएन, पेरोल पर कार्यरत कर्मचारियों को किश्तो में पक्का करने की बजाय एकमुक्त पक्का किया

जाये। सभी विभागों में ग्रुप सी व डी के खाली पड़े पदो पर कर्मचारियों की पक्की भर्ती की जाये। 2023 के पत्र के अनुसार 4268 सफाई कर्मचारी व 68 सीवरेज कर्मचारियों के रिक्त पदो पर नियमित भर्ती के माध्यम से लगे सफाई व सीवरेज कर्मचारियों को पक्का किया जाये। एसग्रेसिया पोलिसी को सरल बनाते हुए 5 वर्ष की सर्विस लेंस की बजाय 2 वर्ष व 52 वर्ष की बजाय 55 वर्ष करने का प्रावधान किया जाये। वहीं डोर टू डोर कर्मचारी, एचकेआरएन व फायर ब्रिगेड कर्मचारियों की मृत्यु होने पर उनके आश्रितो को नौकरी व 10 लाख रुपए की सहायता राशि दी जाये। मुख्यमंत्री की घोषणा अनुसार सभी कच्चे कर्मचारियों का वेतन 27 हजार रुपए किया जाये। सफाई कर्मचारी व सीवरेज कर्मचारियों के पद सृजित कर पक्की नौकरी दी जाये। नगरनिगम के बर्खास्त 26 कर्मचारियों को बर्खास्त तिथि से वेतन सहित बहाल किया जाये। 2534 कर्मचारियों को 30 जून 2022 के पत्रानुसार एचकेआरएन में किया जाये। सभी सफाई कर्मचारियों, जोखिम में काम करने वाले कर्मचारियों को 5 हजार रुपए जोखित भत्ता व पार्ट-1, एचकेआरएन व फायर के कर्मचारियों को एलटीसी दी जाये। निगमो, परिषदो व पालिकाओं में लगे दैनिक वेतनभोगी एवं डीसी रेट पर लगे कर्मचारियों पर निगम रेट लागू किया जाये।

न्यूज फ्लैश

सफाई कर्मचारियों का धरना जारी, कर्मचारियों का आरोप, बैठक में अधिकारियों ने धमकाया

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार
सिरसा, 24 जून। धरनारत सफाई कर्मचारियों की 11 सदस्यीय कमेटी मंगलवार को उप मंडल अधिकारी-नागरिक से मिली। इस मौके पर नगरपरिषद के एक्सईएन भी मौजूद थे।
सफाई कर्मचारियों की कमेटी ने अपनी मांगें लिखित रूप से रखी, लेकिन कमेटी का आरोप है कि उन्हें अधिकारियों द्वारा धमकाया गया। उन्होंने बताया कि उनकी मुख्य मांगें हैं कि उनकी बकाया राशि जारी की जाए तथा डीसी रेट के मुताबिक वेतन दिया जाए। कर्मचारी नेताओं ने कहा कि जब तक कर्मचारियों को काम पर नहीं बुलाया जाता, तब तक हमारा धरना-प्रदर्शन जारी रहेगा। उल्लेखनीय है कि अनेक संगठनों ने कर्मचारियों के इस धरने को समर्थन दिया हुआ है। आज के धरने पर दारा सिंह, अमित कुमार, राजिंद्र कुमार, बनारसी दास, रघुबीर चंद, मोनिका, अलका, सुनीता रानी, मनप्रीत, अजय, राहुल कुमार, अनूप कुमार, बिल्लू कुमार, अंग्रेज, जसविंद्र, जगदीप, दीपक कुमार, गुरदीप कुमार, अनिल व अन्य कई साथी बैठे हैं।

नई व्यायामशालाएं स्थापित करने का निर्णय सराहनीय: रातुसरिया

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 24 जून। वरिष्ठ भाजपा नेता प्रदीप रातुसरिया ने एक कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री द्वारा इस वित वर्ष में प्रदेश में 100 नई योग एवं व्यायामशालाएं खोलने का निर्णय सराहनीय है।
रातुसरिया ने मंगलवार को जारी बयान में कहा कि इसके साथ-साथ मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि प्रदेश के विश्वविद्यालयों में योग पर शोध को बढ़ावा देने के लिए योग लेखक प्रोत्साहन योजना लागू की जाएगी।
उन्होंने कहा कि इसके अलावा सभी सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों के योग प्रदर्शन के मूल्यांकन के लिए क्रेडिट आधारित प्रणाली को शुरू करने की घोषणा की गई। साथ ही प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में भी योग को शैक्षणिक पाठ्यक्रम के रूप में लागू किया जाएगा। इसके लिए एक समान योग पाठ्यक्रम शीघ्र तैयार किया जाएगा। रातुसरिया ने कहा कि सरकार द्वारा योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा विषयों को इस वर्ष से ही आयुष चिकित्सा प्रणाली के अंतर्गत मान्यता दी जाएगी। साथ ही, इन विषयों के चिकित्सकों का राजकीय पंजीकरण भी आरंभ किया जाएगा। यही नहीं सीएम ने योगासन को खेल के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर सुदृढ़ करने के लिए अनुभवी कोचों की नियुक्ति करने की घोषणा की है, जोकि स्वागत योग्य कदम है और खासकर युवाओं के लिए अह्म कदम कारगर होगा। सरकार के इस कदम से जहां बढ़ते नशे की प्रवृत्ति पर लगाम लगेगी, वहीं युवा अपना ध्यान नशे जैसी सामाजिक बिमारी से हटाकर अपने भविष्य की ओर ज्यादा अग्रसर करेंगे।

कल होगा भ्रष्टाचार पर बड़ा खुलासा: सैनी, तीन दिन में एसआईटी गठित न की तो फूकेंगे प्रशासन का पुतला

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार
सिरसा, 24 जून। नगरपरिषद में भ्रष्टाचार की जांच की मांग को लेकर सांकेतिक धरने पर बैठे पूर्व पार्षद सुशील सैनी ने प्रशासन को चेतावनी दी है कि यदि तीन दिन में एसआईटी गठित करके भ्रष्टाचार के खिलाफ जांच शुरू न की तो नगरपरिषद के गेट पर तीन दिन प्रशासन का पुतला फूकेंगे, फिर भी कोई कार्रवाई न हुई तो प्रशासन की शव यात्रा निकालेंगे। धरने पर बैठे सुशील सैनी ने कहा कि नगरपरिषद के अधिकारियों ने बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार किया है और इस घपले में कथित भाजपा नेता का भी हाथ है। उन्होंने कहा कि आगामी बुधवार को वे नगरपरिषद के घोटालों को लेकर बड़ा खुलासा करेंगे। उन्होंने प्रशासन से मांग की कि नगरपरिषद के पांच साल का हिसाब किताब खंगाला जाए ताकि जनता के गाढ़े खून पसीने की कमाई में हुए भ्रष्टाचार का पता चल सके। धरने के दौरान उनके समर्थन में उतरे समाजसेवी गुरलाल ने कहा कि नगरपरिषद में भ्रष्टाचार की उच्च स्तर पर जांच होनी चाहिए।

कॉलोनी से एक निमार्णाधीन मकान से हजारों रुपए की कॉपर की तारे चोरी

सूचना मिलने के बाद डायल 112 व रादौर पुलिस मौके पर पहुंची

हरियाणा वाटिका/नीतीश जोगी
रादौर, 24 जून। रादौर के जाटनगर कॉलोनी में एक व्यक्ति ने निमार्णाधीन मकान से हजारों रुपए की कॉपर की तारे चुरा ली। मामले की सूचना मिलने के बाद डायल 112 व रादौर पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच की। प्रभावित व्यक्ति की ओर से इस बारे स्थानीय पुलिस को शिकायत देकर कार्रवाई करने की मांग की। रादौर के गुरुद्वारा मोहल्ला निवासी अनिल सेठी ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह शहर के जाटनगर में मकान बना रहा है। मकान लगभग बनकर तैयार है। एक

अज्ञात व्यक्ति ने दोपहर के समय लगभग 3 बजे निमार्णाधीन मकान की खिडकी से घर में घुसकर बिजली की तारो से कॉपर की तारे चुरा ली। जिससे उसको लगभग 20 से 25 हजार रुपए का नुकसान हुआ है। लगभग एक सप्ताह पहले भी अज्ञात लोग उसके मकान से हजारों रुपए की तारे चुरा ले गए थे। एक सप्ताह में दूसरी बार उसके मकान में चोरी की घटना घटी है। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर चोरी की घटना को अंजाम देने वाले व्यक्ति की तलाश शुरू कर दी है। इस बारे जांच अधिकारी एएसआई विजय कुमार ने जानकारी देते हुए बताया की कि पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज व मामले की जांच कर रही है। जांच के बाद मामला दर्ज कर अज्ञात व्यक्ति को जल्द गिरफ्तार किया जायेगा।

किन्नर समाज की ज्यादतियां बर्दाश्त नहीं: ऐलावादी

अरोड़ा एकता परिवार ने उपपुलिस अधीक्षक को सौंपा ज्ञापन

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार
सिरसा, 24 जून। अखिल भारतीय अरोड़ा एकता परिवार की कार्यकारिणी के निर्णयानुसार एक शिष्टमंडल परिवार के अध्यक्ष भारत भूषण ऐलावादी के नेतृत्व में उप पुलिस अधीक्षक आदर्शदीप सिंह से मिला तथा उन्हें पुलिस अधीक्षक के नाम ज्ञापन सौंपा।
अध्यक्ष ऐलावादी ने पुलिस उप अधीक्षक को बताया कि किन्नर समाज परिवार के खुशी के मौकों पर अचानक पहुंचकर उनके सामने नजायज मांगे रखता है जिसे लोकलाज व किन्नर समाज की बददुओं के भय से पूरा करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। उन्होंने

बताया कि अरोड़ा परिवार ने निर्णय लिया है कि अब किन्नर समाज की नजायज मांगों को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। ज्ञापन में परिवार की ओर से किन्नर समाज की ज्यादतियों को रोकने का आग्रह किया गया है तथा पुलिस अधीक्षक से आग्रह किया गया है कि वे किन्नर समाज को समाज द्वारा निर्धारित राशि लेने के लिए बाध्य किया जाए। उप पुलिस अधीक्षक आदर्शदीप सिंह ने अरोड़ा परिवार के शिष्टमंडल की बातों को सहानुभूतिपूर्वक सुना तथा परिवार की मांगों पर उचित कार्रवाई का भरोसा दिया। ज्ञापन देने वालों में परिवार के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. राजेश बांगा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष मोहन लाल अरोड़ा एडवोकेट, वरिष्ठ उपाध्यक्ष मीत बठला, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सतीश मक्कड़, उपाध्यक्ष दीदार सिंह तिन्ना, युवाध्यक्ष ऋषि ऐलावादी आदि मौजूद थे।

यौन उत्पीड़न के आरोप में घिरे सांसद चंद्रशेखर आजाद, महिला आयोग ने दर्ज की शिकायत

स्विट्जरलैंड की रिसर्च स्कॉलर ने सांसद पर लगाए गंभीर आरोप- होटल तो कभी घर पर बुलाया

हरियाणा वाटिका/एजेंसी
लखनऊ, । उत्तर प्रदेश की नगीना लोकसभा सीट से सांसद चंद्रशेखर आजाद की मुश्किलें बढ़ गई हैं। राष्ट्रीय महिला आयोग (ठउह) ने उनके खिलाफ यौन उत्पीड़न की शिकायत दर्ज की है। स्विट्जरलैंड की पीएचडी स्कॉलर डॉ. रोहिणी घावर ने आजाद पर कभी घर तो कभी होटल में बुलाकर संबंध बनाने का आरोप लगाया है।
सोमवार को एनसीडब्ल्यू में शिकायत दर्ज होने के बाद रोहिणी ने कहा कि कानूनी लड़ाई शुरू हो चुकी है। सम्मान और स्वाभिमान की जंग है, इसे जारी रखूंगी। डॉ. रोहिणी मूलरूप से मध्यप्रदेश के इंदौर की रहने वाली हैं। वह एक सफाईकर्मी की बेटी हैं। उनके पिता हॉस्पिटल में साफ-सफाई का काम करते हैं। वर्ष 2019 में रोहिणी

स्कॉलरशिप हासिल करके, शोध के लिए स्विट्जरलैंड पहुंची थीं। उन्होंने अपनी शिकायत में कहा है कि वर्ष 2021 से चंद्रशेखर के साथ उनकी बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ था, जो हाल के दिनों तक जारी रहा। आजाद ने उन्हें भरोसा दिलाया कि वह अविवाहित हैं। रोहिणी का आरोप है कि जब मैं भावनात्मक रूप से उनसे जुड़ गई तो उन्होंने मेरी इच्छा के खिलाफ मेरे साथ शारीरिक संबंध बनाए। रोहिणी ने अपने सोशल मीडिया हैंडल-एक्स पर भी आजाद के खिलाफ सिलसिलेवार तरीके से कई गंभीर आरोप लगाए हैं। रोहिणी ने कहा कि "उसकी नजर में बहन-बेटियों की कोई इज्जत नहीं है। मैंने भरोसा करके बड़ी गलती कर दी।" रोहिणी का आरोप है कि उन्हें भावनात्मक रूप से यूज करने के बाद छोड़ दिया गया। सनद रहे कि पिछले कुछ दिनों से रोहिणी, सांसद चंद्रशेखर आजाद पर सिलसिलेवार तरीके से आरोप लगा रही हैं। उनके सोशल मीडिया हैंडल पर इन आरोपों की झड़ी लगी है, जहां वह आजाद के खिलाफ कानूनी लड़ाई लड़ने की इच्छा जताती आ रही है। इसी क्रम में उन्होंने स्विट्जरलैंड से सांसद के खिलाफ आयोग में शिकायत भेजी थी। आयोग ने शिकायत का संज्ञान लेकर सोमवार को इस मामले को दर्ज कर लिया है।

विधायकों के निष्कासन पर बोले अखिलेश- हमने उनका टेक्निकल इशू किया खत्म, अब वे मंत्री बन सकते हैं

हरियाणा वाटिका/एजेंसी
लखनऊ। समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने मंगलवार को तंज करते हुए कहा कि उन्होंने अपने तीन विधायकों को पार्टी से निष्कासित करके उनके मंत्री बनने में सामने आ रहे टेक्निकल इशू (तकनीकी बाधा) को दूर कर दिया है। यादव ने कहा कि जब वे मंत्री बन जाएंगे तो वह बाकी बागी विधायकों को भी निकालकर उनकी भी बाधा दूर कर देंगे। अखिलेश यादव ने सपा प्रदेश मुख्यालय पर संवाददाताओं से बातचीत में पार्टी के तीन बागी विधायकों को निष्कासित किये जाने के सवाल पर तंज भरे अंदाज में कहा, असल में उनके सामने एक टेक्निकल इशू था। हमारे विधायक होने की वजह से वे मंत्री नहीं बन पा रहे थे। हमने उस टेक्निकल इश्यू का समाधान किया है। अब वे मंत्री बन सकते हैं।
उन्होंने कहा, अब आप पूछोगे कि हमने तीन (बागी विधायक) निकाले, बाकी क्यों नहीं निकाले? सबको मंत्री बनना था और सबको आश्वासन मिला था। हमने तीन को निकालकर टेक्निकल इश्यू का

समाधान किया है। अब वे मंत्री बन सकते हैं। जब यह तीन मंत्री बन जाएंगे तो बाकियों का भी टेक्निकल इशू हम रिजॉल्व (हल) कर देंगे, मंत्री बनने के लिए। अब भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की जिम्मेदारी है कि इन्हें (सोमवार को निष्कासित विधायकों को) जल्दी मंत्री बनाएं, तो बाकी लोगों को जब हम हटाएं तो वे भी मंत्री बन जाएं। सपा के तीन बागी विधायकों अभय सिंह, राकेश प्रताप सिंह और मनोज कुमार पांडेय को सोमवार को पार्टी से निष्कासित कर दिया है। गोसाईगंज से सपा विधायक अभय सिंह, गौरीगंज से पार्टी विधायक राकेश प्रताप सिंह और ऊंचाहार से विधायक मनोज कुमार पांडेय ने पिछले साल फरवरी में हुए राज्यसभा चुनाव में कथित तौर पर दल से बगावत करते हुए सत्तारूढ़ (भाजपा) के पक्ष में वोट किया था। इसके अलावा राकेश पांडेय, विनोद चतुर्वेदी, पूजा पाल और आशुतोष मौर्य ने कथित तौर पर भाजपा के पक्ष में क्रॉस वोटिंग की थी। इनके अलावा पूर्व मंत्री गायत्री प्रजापति की विधायक पत्नी महाराजी देवी मतदान से अनुपस्थित रही थीं। हालांकि पार्टी ने अभी तक उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की है।

प्रयागराज : चेन पुलिंग के 3628 मामले दर्ज, 1567 गिरफ्तार

प्रयागराज, । प्रयागराज मण्डल ने ट्रेनों में अनावश्यक अलार्म चेन पुलिंग (एसीपी) करने वालों को रोकने के लिए लगातार व्यापक स्तर पर अभियान चलाया जा रहा है। अनावश्यक चेन पुलिंग ट्रेनों के सुचारू संचालन को बाधित करती है और यात्रियों की सुरक्षा को भी खतरे में डालती है। चेन पुलिंग सख्ती से रोकने के लिए रेल प्रशासन सख्त कदम उठा रहा हैं। प्रयागराज मण्डल चालू वित्तीय वर्ष में अप्रैल से 23 जून तक अनावश्यक चेन पुलिंग के 3628 मामले दर्ज कर 1567 लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

बिजली के हालात नहीं सुधरे तो होगा आंदोलन: शर्मा

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार
सिरसा, 24 जून। शहर और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली कटौती का संकट दिन-ब-दिन गहराता जा रहा है। लगातार और बिना सूचना के हो रही कटौतियों से आम जनता परेशान है। बीती रात सिरसा शहर के गौशाला फीडर और इंडस्ट्रियल फीडर में तकनीकी खराबी के चलते आधा शहर अंधेरे में डूबा रहा, जिससे आम लोगों के साथ-साथ दुकानदार, छात्र और मरीज तक बुरी तरह प्रभावित हुए।
प्रदेश कांग्रेस प्रतिनिधि राजकुमार शर्मा ने कड़ा विरोध जताया है। उन्होंने कहा कि बिजली विभाग मेंटेनेंस के नाम पर जनता को गुमराह कर रहा है और यह पूरी व्यवस्था अब ठगी का रूप ले चुकी है। मेंटेनेंस के नाम पर घंटों बिजली गुल रखना विभाग की लापरवाही और सरकार की नाकामी को उजागर करता है। शर्मा ने चेतावनी दी कि यदि जल्द ही इस बिजली संकट का समाधान नहीं किया गया, तो कांग्रेस पार्टी जनहित में सडकों पर उतरेगी और बड़ा आंदोलन करेगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस जनता के अधिकारों के लिए संघर्ष करती रही है और इस बार भी बिजली जैसी मूलभूत सुविधा की अनदेखी को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। शर्मा ने ये भी कहा कि जब भी बिजली जाती है, न तो कोई सूचना मिलती है और न ही यह बताया जाता है कि कितनी देर में आपूर्ति बहाल होगी। बच्चों की पढ़ाई, बुजुर्गों का स्वास्थ्य और व्यापार सभी पर बुरा असर पड़ रहा है। प्रशासन ने अगर इसका समाधान नहीं किया तो कांग्रेस आंदोलन करेगी।

चोरीशुदा बाइक सहित आरोपी काबू

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार
सिरसा, 24 जून। रानियां थाना पुलिस ने गश्त के दौरान हेफैड कॉलोनी रानियां क्षेत्र से एक युवक को चोरीशुदा बाइक सहित काबू किया है।
रानियां थाना प्रभारी ने बताया कि 23 जून की रात को गुप्त सूचना के आधार पर हेफैड कॉलोनी रानियां के पास एक संदिग्ध युवक चोरीशुदा बाइक सहित पकड़ा। पूछताछ के दौरान आरोपी की पहचान रेलु राम पुत्र राजेंद्र सिंह निवासी जोधपुरिया के रूप में हुई। प्रार्रभिक पूछताछ में आरोपी ने बताया कि मैने यह बाइक 18.06.2025 को गांव दारेवाला के खेतों की ढाणी से चोरी किया था। थाना रानियां पुलिस द्वारा आरोपी को पेश अदालत करके न्यायिक हासत मे भेज दिया गया है।

युवक 10.68 ग्राम हैरोइन सहित काबू

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार
सिरसा, 24 जून। एनसीबी की सिरसा यूनिट ने डिंग थाना क्षेत्र में गाँव पतली डाबर के समीप से एक युवक को 10.68 ग्राम हैरोइन सहित गिरफ्तार किया है।
एनसीबी सिरसा यूनिट के इंचार्ज निरीक्षक होशियार सिंह ने बताया कि उप निरिक्षक तरसेम सिंह पुलिस टीम के साथ थाना डिंग क्षेत्र में गांव पतली डाबर में मौजूद थे। इसी दौरान उन्हें गुप्त सूचना मिली कि एक नशा तस्कर हिसार से नशीले पदार्थ लेकर सिरसा की तरफ आ रहा है। इस सूचना पर त्वरित कार्रवाई करते हुए पुलिस टीम ने सिरसा-फतेहाबाद राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 9 पर गांव पतली डाबर के पास सर्विस रोड से आरोपी को काबू कर लिया। आरोपी की पहचान संदीप पुत्र फौजा सिंह निवासी पतली डाबर के रुप में हुई। राजपत्रित अधिकारी को माके पर बुलाकर आरोपी की तलाशी ली गई तो उसके पास बैग से 10.68 ग्राम हैरोइन बरामद हुई। उन्होंने बताया कि आरोपी के खिलाफ डिंग थाना में मादक पदार्थ अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है।

धार्मिक समारोह विधि विधान के साथ संपंन, साधु, संतों और महात्माओं का मुनि सभा द्वारा भव्य स्वागत

हरियाणा वाटिका/प्रवीन कुमार
चंडीगढ़, 24 जून। सेक्टर 23 स्थित श्री महावीर मुनि मंदिर (साधू आश्रम)में ब्रह्मलीन श्री सतगुरु देव श्री श्री 108 श्री मुनि गौरवानंद गिरि जी महाराज की 38वीं पुण्य तिथि समारोह के उपलक्ष्य में सैकड़ों साधु संत और महात्माओं का आगमन हुआ। जिनका मुनि सभा के सदस्यगणों ने स्वागत किया और साधु संतो और महात्माओं की सेवा में भी योगदान दिया। इससे पूर्व प्रातः प्रभात फेरी और मंदिर परिसर विधि- विधान के साथ भव्य हवन किया गया। पूणार्हुति के उपरांत इस धार्मिक समारोह के समापन पर महाआरती की गई।

बाईटेक सोलर और स्काईवर्थ भारत में इलेक्ट्रिक बसें करेगा असेंबल: भारतीय सड़कों के हिसाब से होंगी अनुकूल

हरियाणा वाटिका/प्रवीन कुमार

चंडीगढ़, 24 जून। हरित और स्मार्ट सार्वजनिक परिवहन की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए, एक भारतीय स्वच्छ ऊर्जा कंपनी बाईटेक सोलर प्राइवेट लिमिटेड ने भारत में इलेक्ट्रिक बसों को असेंबल करने के लिए वैश्विक इलेक्ट्रिक व्हीकल ब्रांड स्काईवर्थ के साथ हाथ मिलाया है।
यह साझेदारी 45-सीटर इलेक्ट्रिक बसों की असेंबली से शुरू होगी, जिसके अगले चरण में 55-सीटर वर्जन पेश करने की योजना है। मेक इन इंडिया पहल का समर्थन करने और रोजगार सृजन के लिए इन बसों को यहीं बनाया जाएगा। लेकिन ये केवल इलेक्ट्रिक बसें नहीं हैं, - ये स्मार्ट भी हैं। प्रत्येक वाहन पूरी तरह से ट्रैक करने योग्य और दूर से निगरानी की जा सकेगी। जिससे प्रदर्शन, स्थान और सुरक्षा पर वास्तविक समय में अपडेट मिल सकेंगे। यह परिवहन प्रदाताओं और यात्रियों दोनों के लिए सुचारू संचालन और मन की शांति सुनिश्चित करने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

आज का इतिहास

- 1153: मेलकॉलम चतुर्थ स्कॉटलैंड के राजा बने।
- 1199 : हेनरी II के पुत्र जॉन की इंग्लैंड के राजा के रूप में ताजपोशी।
- 1332 : प्रसिद्ध इतिहासकार इब्ने खलदून का जन्म।
- 1805 : नेपोलियन बोनापार्ट इटली के सम्राट बने।
- 1894 : प्रख्यात आलोचक और निबंधकार पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जन्म।
- 1919 : तेलुगू के प्रसिद्ध विद्वान कंदुकूरी वीरेशलिंगम का निधन।
- 1926 : लेबनान ने संविधान को अंगीकार किया।
- 1928: प्रसिद्ध इतिहासकार बिपिन चन्द्र का जन्म।
- 1935 : डॉ. भीमराव अम्बेडकर की पत्नी रमाबाई अम्बेडकर का निधन ।
- 1957 : भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता नितिन गडकरी का जन्म।
- 1962 : प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी एवं कमेंटेटर रवि शास्त्री का जन्म।

फुटवियर्स के साथ सजाएं अपना वॉर्डरोब

ब्लैक पंप्स

ये हिल्स आपके पास होना बेहद जरूरी है, ये आपको क्लासी और सेक्सी लुक देती हैं। इसकी खासियत है कि ये कभी आउट ऑफ फैशन नहीं होती और पहनने में आरामदायक होते हैं। इसलिए आप इसे पार्टी में आसानी से कैरी कर सकती हैं, ये कैजुअल और फॉर्मल दोनों लुक देती हैं।

ज्यादातर महिलाओं के अच्छे दोस्त उनके गहने होते हैं, लेकिन फुटवियर्स भी उनके अच्छे दोस्तों में से एक होते हैं। उन्हें अपने फुटवियर्स से इतना प्यार होता है कि उनकी महीने की आधी सैलेरी जूतों पर चली जाती हैं। घर से बाहर निकलने से पहले वो जब भी नए फुटवियर्स पहनती हैं तो, वो शीशे के सामने आधा घंटे खड़ी होती हैं। यहां बड़ा सवाल ये उठता हैं क्या महिलाओं के लिए फुटवियर्स इतने जरूरी हैं ? खैर ये सवाल आप उनसे पूछ मत बैठिएगा..! हमने कई महिलाओं को देखा हैं जो हमेशा फुटवियर्स को लेकर असमंजस में रहती हैं। उनका चिंता का विषय ये होता हैं कि वो ऐसे कौन से फुटवियर्स खरीद लें, ताकि उनकी वॉर्डरोब कम्प्लीट हो जाए।

ये 5 फुटवियर है ट्रेंडी और कम्फर्टेबल

फैशन की दुनिया में कितने भी ट्रेंड बदले, लेकिन आपको अपने आराम से समझौता नहीं करना चाहिए। कहा जाता है कि आपके पैरों में पहने फुटवियर के आधार पर आपका टेस्ट परखा जाता है। जो कामकाजी लोग होते हैं, उनके लिए आरामदायक फुटवियर बेहद जरूरी होते हैं, क्योंकि वो भाग दौड़ कर बस या टैक्सी करके ऑफिस जाते हैं। ऐसे में आप ट्रेंड के आधार पर फुटवियर नहीं खरीद सकते हैं। इस बात में भी कोई दोराय नहीं है कि आपकी शू रैक कई सारे फुटवियर से भरी रहती है, जिसमें से आप ज्यादातर फुटवियर छुते तक नहीं है और ऐसा इसलिए होता है क्योंकि ज्यादातर फुटवियर में आप कम्फर्टेबल महसूस नहीं करते हैं। कोई फुटवियर आपके पैरों को काटते हैं या तो किसी फुटवियर को पहनने से आपके पैर दर्द करते हैं। इसलिए आपको फुटवियर खरीदते समय कुछ टिप्स का ध्यान रखना चाहिए, साथ ही साथ ट्रेंड का भी। आप सोच रहे होंगे कि ट्रेंड और आराम एक साथ कैसे फुटवियर में मिल सकता है, लेकिन आज हम आपको ऐसे फुटवियर के बारे में बताएंगे जो ट्रेंडी और कम्फर्टेबल दोनों हैं-

फुटवियर की चौड़ाई पर ध्यान दें

कुछ भी हो फुटवियर की चौड़ाई मायने रखती है। अगर उनकी चौड़ाई कम हुई तो आपकी उंगलियां दब जाएंगी, जिसकी वजह से आप कम्फर्टेबल नहीं रहेंगे। अगर आप कम चौड़ाई में जबरदस्ती अपना पैर डालकर चलने की कोशिश करेंगी तो आपको हैमरटोज जैसी समस्या हो सकती है तो अगली बार फुटवियर शॉपिंग करते वक्त हमेशा चौड़ाई का ध्यान रखें।

लिखा हुआ साइज हमेशा सही नहीं होता

फुटवियर पर लिखा हुआ साइज जरूरी नहीं कि आपको आ जाए। हर डिजाइनर शूज बनाते वक्त अलग मॉडल का इस्तेमाल करता है। इसलिए जो साइज आपको आता है, वो शूज पर लिखा है तो बिना ट्राय करे खरीदना नहीं चाहिए। उसी साइज का फुटवियर पहने जो आपको फिट आता हो, बिना नंबर की परवाह करते हुए।

दिन के आखिर में आपको फुटवियर खरीदना चाहिए

विशेषज्ञों की मानें तो जब आप चल चुके हो तब ही फुटवियर की शॉपिंग करें। तब आपके पैर थोड़े सूज चुके होते हैं और पसीने से लथ-पथ होते हैं। तब सबसे अच्छा समय होता है, ये जानने के लिए कि वो फुटवियर आपको कम्फर्टेबल है या नहीं.. इसलिए स्टोर में शूज को ट्राय करें, चल के देखें और फिर फुटवियर खरीदें।

हील्स पर जरूर ध्यान दें

कई विशेषज्ञों का कहना है कि अगर आप कम्फर्टेबल रहना चाहते हैं तो बिना हील्स वाली फुटवियर लें, लेकिन ऐसी कई महिलाएं हैं जो हील्स में भी आराम महसूस करती हैं, लेकिन इसके लिए ये जानना बेहद जरूरी है कि आपको पता होना चाहिए कि कौन सी हील्स आपके लिए बेहतर रहेगी। अगर आपको दिनभर में ज्यादा चलना होता है तो आपको मीडियम हाइट की वेजिस लेनी चाहिए। अगर आपको कम चलना होता है तो आप स्टेलेटोज ले सकती हैं।

ज्यादा फ्लैट फुटवियर से बचें

स्नीकर्स और बैलेट फ्लैट्स महिलाएं ज्यादा पसंद करती हैं, लेकिन आपको इतनी फ्लैट्स वाली फुटवियर से बचना चाहिए। ऐसी फुटवियर में दिन के अंत में आपकी एड़िया दर्द करती है। आपको फ्लैट्स में ऐसी फुटवियर लेनी चाहिए, जिसमें अंदर सोल लगा हुआ हो, जो आपकी एड़ियों को सहारा दे। इसके अलावा भी ले सकते हैं वो थोड़े महंगे होते हैं लेकिन वो काफी समय तक चलते है।

तो आपको कभी भी ट्रेंड के लिए अपने आराम का त्याग करने की जरूरत नहीं है। इसलिए अगर आप इस टिप्स को ध्यान में रखेंगे तो आप स्टाइलिश के साथ कम्फर्टेबल महसूस करेंगे।

बूट्स

आप कलई बूट्स पहनकर कैजुअल लुक को फ्लॉन्ट कर सकती हैं। इनमें हर साइज की हील्स होती हैं, आप अपने हिसाब से खरीद सकती हैं। ये बूट्स आपको स्टाइल स्टेटमेंट देने में मदद करता हैं।

बैलिट फलैट्स

इसे आप स्किन टाइट जींस के साथ पहन सकती हैं और ये चलने में भी आरामदायक होती हैं। सिर्फ यही नहीं ये वर्किंग महिलाओं के लिए सबसे अच्छा साथी होता हैं।

ग्लेडियेटर्स

ये भी उन हील्स में से एक हैं जो कभी आउट ऑफ फैशन नहीं होती हैं। अगर आपको अपने ऊपर प्रयोग करना पसंद हैं तो आप इसे ट्राय कर सकती हैं। इसे आप किसी शॉर्ट और डेनिम के साथ पहन सकती हैं।

स्नीकर्स

आजकल इनका बहुत चलन है और ये हर महिला की वॉर्डरोब में शामिल भी होती हैं। ये हल्की और आरामदायक होती हैं, इसे पहनकर आप ट्रिप पर या शॉपिंग करने जा सकती हैं

वैजिस

ये फुटवियर्स सबसे ज्यादा क्लासी और आरामदायक होती हैं। अन्य हील्स बेशक आपके पैरों या कमर में दर्द कर सकती हैं, लेकिन ये उनमें से नहीं हैं।

किटन हील्स

अगर आपके वॉर्डरोब में ये फुटवियर्स नहीं हैं तो आपको अपने कलेक्शन को बढ़ाने की जरूरत हैं। ये आमतौर पर चमड़े की बनी होती हैं, जिसकी वजह से ये क्लासी और लंबे समय तक चलती हैं।

मेटलिक हील्स

आप अपने ग्लिटरी लुक को हाइलाइट करने के लिए इसे पहन सकते हैं। ये पहनने में कम्फर्टेबल होती हैं और ये आपके पार्टी लुक को बढ़ाती हैं।

ऐनीमल प्रिंट वाले जूते

कौन कहता हैं आपको अपनी बॉडी पर एनिमल लुक के लिए एनिमल को मारना पड़ेगा। आप हील्स पर एनीमल प्रिंट का आनंद ले सकते हैं।

फ्लैट

आजकल हर किसी को हर समय हील्स पहनना पसंद नहीं होता हैं। कभी-कभी आप हिल्स से ब्रेक लेकर फ्लैट भी ट्राय कर सकती हैं। फ्लैट्स कितनी कम्फर्टेबल होती हैं ये हमें पता हैं, इसलिए आप इसे किसी कैजुअल कपड़ों के साथ पहन सकते हैं।

फ्लिप-फ्लॉप

आप इस कैजुअल पीस को पहनकर भी स्मार्ट लग सकती हैं और ये कितनी आरामदायक होती हैं ये तो आपको पता ही होगा।

अपने पुराने फुटवियर को दें नया लुक

हर कोई अपने लुक में निखार लाने के लिए स्टाइलिश आऊटफिट के साथ फुटवियर्स का चुनाव भी फैशन के हिसाब से ही करता है और उसकी यही चाहत होती है कि उसके द्वारा पसंद किए गए फुटवियर काफी लंबे समय तक सही चलें और उनकी चमक भी बनी रहे, लेकिन समय के साथ फुटवियर की चमक जल्द ही साथ देना छोड़ देती है। जिससे दोबारा हमें नए जूते खरीदने पड़ते है। पर यदि आप थोड़ी सी मेहनत करेंगे तो आप अपने पुराने फुटवियर में नई जान ला सकती है। आज हम आपको फुटवियर में नई चमक लाने के ऐसे उपाय बताएंगे, जिससे आप घर पर ही रहकर कम कीमत के साथ पुराने फुटवियर को नया लुक प्रदान कर सकती हैं और वह भी अपनी पसंद के अनुसार उन्हें और ज्यादा स्टाइलिश भी बना सकती हैं। हमारे द्वारा बताए जाने वाले ट्रिक्स सामान्य चप्पलों से लेकर हील वाली सेंडिल्स तक पर आजमाकर आप उन्हें नया स्टाइलिश लुक प्रदान कर सकती हैं।

सामान्य फुटवियर

यदि आपके फुटवियर सामान्य हैं तो इसे खूबसूरत बनाने के लिए आप घर पर रखी मोतियों या बाजार में मिलने वाले फैब्रिक कपड़े से इनको काफी अच्छा लुक प्रदान कर सकती है। इसके लिए आपको ज्यादा कुछ करने की जरूरत नहीं है, बस अपनी पसंद के मोतियों और बने बनाए फ्लावर को फुटवियर में चिपकाते जाएं, बस फिर देखिए कितना अच्छा लुक देखने को मिलेगा। चप्पल चाहे वो प्लास्टिक की हो या लेदर की या फिर कपड़ों से बनी हुई सभी को आप घर रखें फालतू सामान से सजा कर नई डिजाइन में तैयार कर खूबसूरत बना सकती है।

हील्स को बनाएं ग्लैमरस

हील्स सेंडिल्स का लुक तो अपने आप में ही सुंदर लगता है पर लगातार पहनते रहने से ये काफी घिस जाती हैं, जिससे इनकी चमक खो जाती है, इन हिल्स में फिर नई चमक लाने आपको घबराने की आवश्यकता नहीं है, बाजार में आपको हील कंडोम्स नई-नई डिजाइनों के साथ मिलेंगे। यह दिखने में काफी खूबसूरत होते हैं। इनकी मदद से आप सेंडिल्स की खूबसूरती को निखार सकती हैं। सेंडिल्स के लुक को आप अपने कपड़ो के अनुसार भी चयनित कर सकती हैं। ये हील कंडोम्स जितने ज्यादा दिखने में खूबसूरत लगते है उतने ही अच्छे यह आपकी सेंडिल्स में लगने के बाद लगते है।

पुरानी सैंडल्स को यूं बनाए स्टाइलिश

अक्सर देखा जाता है कि जूते हो या चप्पल जब हम लगातार इसका उपयोग करते रहते है तो इसका लेदर झड़कर गिरने लगता है और इसकी लास्टिक भी कमजोर पड़ जाती है। इस परेशानी को दूर करने के लिए आप घर बैठे ही इसका इलाज कर चप्पलों की खूबसूरती बढ़ाने के साथ उनमें एक नई जान डाल सकती हैं। इसके लिए आप चमकदार कलरदार धागों की मदद इसे सिलते जाए। नए-नए फैब्रिक कपड़ों की मदद से लास्टिक की जगह पर इनका उपयोग करके इन्हें और अधिक खूबसूरत बना सकती है।

बैलेरिनास को कुछ ऐसे बनाएं मजेदार

आप अपनी बैलेरिनास को कई कलर्स की मदद से काफी अच्छा लुक प्रदान कर सकती है। इसके लिए कलरदार ऊन को एकत्रित करके उसे आपसे में जोड़कर काट लें और छोटे-छोटे गुच्छेदार बनाकर उसको मोती के साथ मिलाकर सिल कर रखते जाए, फिर इन्हें एक-एक कर अपनी वेली या चप्पलों में चिपका लें, फिर देखिए इसकी खूबसूरती कितनी अधिक बढ़ जाती है। इसे आप अपने पंसद के अनुसार अलग-अलग रंगों के धागों या मोती की मदद से कई तरह की सुंदर लुक प्रदान करके सेंडिल्स या चप्पलों को स्टाइलिश बनाकर इनमें नई जान प्रदान कर सकती है।

स्नीकर्स में दें ट्विस्ट

अपने पुराने और बोरिंग स्नीकर्स में कुछ नया लुक देना चाहती हैं तो इसके लिए आप मटैलिक स्टड्स की सहायता से बड़ी ही आसानी के साथ अपने स्नीकर्स को बना सकती हैं स्टाइलिश और फैशनेबल। इसके लिए आप सुंदर डिजाइन की लेस को लेकर या मल्टी कलर्स के रिबन के साथ इन्हें काटकर आप अपनी सेंडिल्स में अच्छी तरह से चिपका लें। इसके बाद इसमें और अधिक खूबसूरती लाने के लिए रिबन के बीच में कोई बड़ा सा स्टोन लगा लें फिर देखिए आपकी पुरानी सेंडिल्स में एक नई जान आ जाएगी।

महिलाओं के पास होने चाहिए ये 3 फुटवियर्स

हर महिला खूबसूरत दिखना चाहती है। इसके लिए वह जितना ध्यान अपनी ड्रेस पर देती है, उतना ही ध्यान अपने शूज पर भी देती है। आपके पास चाहे जितने भी तरह के फुटवियर्स हो, लेकिन हम यहां आपको 3 ऐसे स्टाइलिश फुटवियर्स के बारे में बता रहे हैं, जो हर महिला के पास होने चाहिए। अगर यह 3 अलग स्टाइल के फुटवियर्स आपके पास होंगे, तो आप हर मौके पर काफी स्टाइलिश और आकर्षक नजर आएंगी

ट्रेंडी और फंकी स्टेलेटोज

भले ही स्टेलेटोज पहनने में आपको कभी-कभी काफी दिक्कत आती है और हाई हील्स के कारण पैरों में दर्द भी होता होगा, लेकिन अगर आपको सेक्सी और स्टाइलिश दिखना है तो आपके पास स्टेलेटोज शूज जरूर होने चाहिए। हील्स में न सिर्फ लंबी लड़कियां बल्कि छोटे कद की लड़कियां भी काफी आकर्षक लगती हैं। लड़कों को हाई हील्स में लड़कियां काफी अच्छी लगती हैं, आप इतनी खूबसूरत लगेंगी कि लड़के आपकी तरफ खींचे चले आएंगे। इतना ही नहीं किसी पार्टी के लिए स्टेलेटोज बिलकुल परफेक्ट हैं। इन्हें पहनने से आपकी टांगें काफी खूबसूरत दिखेंगी, साथ ही आपका पूरा बॉडी शेप काफी सुडौल लगेगा। इन्हें पहनकर आप पार्टी में काफी हॉट लगेंगी। आप चाहें तो इन्हें एक एलिगेंट पार्टी ड्रेस और खूबसूरत ज्वेलरी के साथ पहन सकती हैं।

स्टाइलिश पम्प शूज

आप चाहें छोटी या बड़ी हील्स के पंप शूज पहनें। इनमें आप काफी अच्छी लगेंगी। साथ यह आपको एक नया और आकर्षक लुक भी देगा। आप चाहें तो ओपन टोज या स्लिंग बैक्स पंप भी पहन सकती हैं। इतना ही नहीं इन्हें आप अपने ऑफिस में भी पहन सकती हैं। अगर आपके दोस्त अचानक ही कहीं बाहर जाने की प्लैनिंग करते हैं तो आप इन्हें पहन सकती हैं। आप चाहें तो इस स्मार्ट और स्टाइलिश लुक में नाइट आउट पर भी जा सकती हैं। इसलिए अपने लिए पंप शूज चुनते वक्त अपने कम्फर्ट का भी पूरा ध्यान रखें।

कंफर्टेबल स्मार्ट शूज

भले ही आप हील्स में कितनी भी स्टाइलिश और सेक्सी लगें, लेकिन आप इनमें कम्फर्टेबल महसूस नहीं करती। इसलिए अगर आपको ज्यादा चलना हो तो कम्फर्टेबल शूज को चुनें। आप चाहें को आरामदायक स्नीकर्स या फ्लिप फ्लॉप सैंडल्स को भी अपने लिए चुन सकती हैं। इस तरह की कम्फर्टेबल फुट वियर्स में भी आप स्टाइलिश और सेक्सी लग सकती हैं।

सम्पादक, स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक नेहा वालिया द्वारा साई प्रिंटिंग प्रैस, बी-868, न्यू अशोक नगर, दिल्ली-110096 से मुद्रित एवं वालिया सदन वार्ड संख्या 10, लोहारू, भिवानी (हरियाणा) 127201 से प्रकाशित। समाचार पत्र में प्रकाशित सभी समाचारों के लिए पीआरबी एट के तहत उत्तरदायी। फोनः01252-259260, 9255149495, ईमेलः haryanavatika@gmail.com हरियाणा वाटिकाः- प्रेरणास्त्रोत- स्व. डॉ. एल सी वालिया, समूह संपादक एवं संरक्षक- श्रीमति सरला वालिया, संपादक- श्रीमति नेहा वालिया, कार्यकारी संपादक- श्रीमति रितू वालिया। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लोहारू (भिवानी) होगा।